कहुँ कहुँ घड़िएक आसि हेला दिन ।
बिलंकाख बाहारिले असुर सइन ॥ १२४ ॥
रथ गज अश्व चढ़ि बीरे महाबीरे ।
आयुध मानंकु घेनि अछन्ति हस्तरे ॥ १२५ ॥
धामन्ति असुरे जे उठन्ति गळगाजि ।
गरजन घाते मेरुगिरि पड़े भांजि ॥ १२६ ॥
पाद भरे दलदल हुए बसुन्धरी ।
पाताळे कम्पइ जे वासुकि दण्डधारी ॥ १२७ ॥
भयंकर रड़ि जे दियन्ति घन-घन ।
आषाढ़ मासरे जेन्हे मेघ गरजन ॥ १२८ ॥
रथ गहळरे लुचि गले अंशुमाळी ।
अस्त्र बुलाइण धाउँछन्ति महाबळी ॥ १२९ ॥
एगार जोजन माड़ि जाउ अछि थाट ।
बन गिरि कन्दररे तिळे नाहिं बाँट ॥ १३० ॥
सप्तशिरा मंत्री तार आगे आगुआळी ।
चउद भुवने श्रेष्ठ जा हार सावेळि ॥ १३१ ॥
राउत मानंकु चाहिं बोले मंत्रीराण ।
खोजि करि मार जहिं अछइ श्रीराम ॥ १३२ ॥
हेळा करि न करिब ता संगे समर ।
बड़ जोद्धा अटे जाण सेहि रघुबीर ॥ १३३ ॥

र से असुर-सेना निकल पड़ी । १२४ महा महा योद्धागण रथ, हाथी, ों पर चढ़कर हाथ में अस्त्र-शस्त्र लिये हुंकारें भरते हुए दौड़ रहे थे । के गर्जन के आघात से सुमेरु पर्वत भी टूटा पड़ रहा था । १२५-१२६ ण्डल पैरों के भार से दबा जा रहा था । नागराज वासुकि पाताल में ा रहे थे । १२७ (उनके द्वारा किये गये) भयंकर शब्द आषाढ़ मास मेघगर्जना के समान लग रहे थे । १२८ रथ-धूलि से दिनकर छिप । महाबली असुर अस्त्र-शस्त्र घुमाते दौड़ रहे थे । १२९ ग्यारह न में फैलकर सेना चल रही थी । वन, पर्वत, कन्दरा कहीं भी ा भर बाट नहीं थी । १३० मंत्री सप्तशिरा आगे-आगे चल रहा था । की शक्ति चौदह भुवनों में श्रेष्ठ थी । १३१ उसने सेनानायकों ओर देखकर कहा कि जहाँ भी राम हो उसे खोजकर मार ो । १३२ ग़फ़लत में पड़कर उससे युद्ध न करना । यह समझ लो

लंकारे पशिण सेहि मारिछि रावण ।
बुझि सुझि ता संगरे जुझ बीर गण ।। १३४ ।।
एते कहि मंत्रीवर हेला आगुसार ।
पर्वत उपरे थाइ देखे हनुबीर ।। १३५ ।।
श्रीरामंकु बोले देव बाहारिले दण्ड ।
सम्भाळि समर कर वीर मारतण्ड ।। १३६ ।।
धनु शर घेनि तुम्हे थाउ ए पर्वते ।
मुहि जाइँ जुद्ध करे असुरंक साथे ।। १३७ ।।
एते बोलि हनुमान काया विस्तारिला ।
प्रभुंक चरण धरि ओळगि होइला ।। १३८ ।।
उठि बसि हनुमान सैन्यंकु देखिण ।
सेणा पक्षी प्राये बीर उड़िला गगन ।। १३९ ।।
धनु हुळे गुण देइ श्रीरघुनन्दन ।
से धनुकु धरि टंकारिले घन-घन ।। १४० ।।
पृथ्वी कम्पिला धनु टंकार नादरे ।
चमकि उठिले शुणि बीरे महा बीरे ।। १४१ ।।
शब्द बारि जोद्धामाने धाइँले सत्वरे ।
श्रीराम अछइ एहि पर्वत उपरे ।। १४२ ।।

कि वह रघुवीर बड़ा योद्धा है । १३३ उसी ने लंका में घुस के रावण को मारा है । हे वीरो ! समझ-बूझकर उसके साथ युद्ध करना । १३४ इतना कहकर श्रेष्ठ मंत्री ने मार्गदर्शन का कार्य सम्हाला । महावीर हनुमान पर्वत से सब देख रहे थे । १३५ उन्होंने श्रीराम से कहा, हे वीर मार्तण्ड ! राक्षसगण बाहर आ गए हैं । आप सम्हालकर युद्ध करें । १३६ आप धनुष-बाण लेकर इस पर्वत पर रहें । मैं जाकर असुरों के साथ युद्ध करता हूँ । १३७ इतना कहकर हनुमानजी ने अपनी काया का विस्तार किया । उन्होंने श्रीराम के चरण पकड़कर प्रणाम किया । १३८ उठने के पश्चात् उन्होंने बैठे ही सेना को देखा । फिर चील की भाँति आकाश में उड़ गए । १३९ श्रीराम ने धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाकर धनुष पर घनघोर टंकार दी । १४० धनुष के टंकार के शब्द से पृथ्वी काँप उठी । बड़े-बड़े वीर उसे सुनकर चौंक पड़े । १४१ शब्द को सुनकर योद्धागण शीघ्रता से यह कहते हुए दौड़ पड़े कि श्रीराम इसी पर्वत पर है । १४२ आकाश-मार्ग में वीर अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र

गगनमार्गरे उठि बीरे गले धाइँ।
जे जाहा आयुधमान धरिण बुलाइ ॥ १४३ ॥
श्रीरामंकु मार बोलि उच्चे डाक देले।
प्रचण्ड पर्वत चारि पाशुरे बेढ़िले ॥ १४४ ॥
रथ थुआइण सप्तशिरा मंत्रीवर।
पर्वत उपरे भेटिलाक रघुवीर ॥ १४५ ॥
डाकिला रे धनुर्धर केउँ राज्ये घर।
अजय गढ़रे किम्पा पशिलु आम्भर ॥ १४६ ॥
मृत्युकु संगरे घेनि किम्पा तु अइलु।
लंकार रावण प्राय मोते तु मणिलु ॥ १४७ ॥
देखिबइँ मुँहि केड़े तोर जोद्धापण।
घरकु कि फेरिजिबु घेनि तोर प्राण ॥ १४८ ॥
असुरर कथा शुणि हसिले श्रीराम।
बोइले बुझिबा आजि तोर पराक्रम ॥ १४९ ॥
पर्वत बहिण घोर सिन्धुकु बाँधिलि।
लंकागढ़ मध्य पशि रावण माइलि ॥ १५० ॥
शुणिलि मुँ बिलंकारे अछि एक बीर।
देवता मानंकु कष्ट देउछि अपार ॥ १५१ ॥

घुमाते हुए उड़ने लगे। १४३ उच्च स्वर से "श्रीराम को मारो" कहते हुए उन्होंने प्रचण्ड पर्वत को चारों ओर से घेर लिया। १४४ मंत्रियों में श्रेष्ठ सप्तशिरा रथ रुकवाकर पर्वत के ऊपर श्रीराम के पास जा पहुँचा। १४५ उसने तीव्र स्वर में कहा, अरे धनुर्धारी ! तेरा घर किस राज्य में है ? तू हमारे दुर्जेय गढ़ में किस कारण से आ घुसा ? १४६ तू अपनी मृत्यु को साथ लेकर यहाँ क्यों आया है ? तूने मुझे लंका के रावण के समान समझ लिया है। १४७ मैं देखूँगा कि तुम्हारा योद्धापन कितना है ? क्या तू अपने प्राण बचा कर घर वापस जा पाएगा ? १४८ असुर की बात सुनकर श्रीराम ने हँसते हुए कहा कि आज तेरे पराक्रम को देखेंगे। १४९ मैंने पर्वतों को एकत्रित कराके अगाध समुद्र में सेतु बँधवाया। लंका दुर्ग में घुसकर रावण का वध किया है। १५० मैंने सुना है कि बिलंका में भी एक वीर है जो देवताओं को अपार कष्ट देता है। १५१ मैंने प्रतिज्ञा की है कि वंश के सहित उसका संहार करूँगा।

प्रतिज्ञा करिछि ताकु सवंशे मारिबि ।
बिलंकादेशरे लुहामइ बुलाइबि ।। १५२ ।।
तु जेबे आतुर हेउ अछुरे असुर ।
आजि तोते पठाइबि आग जमपुर ।। १५३ ।।
मंत्रीवर सप्तशिरा शुणि कोप कला ।
लुहार गोटिए धनु हस्तरे धइला ।। १५४ ।।
पांच लक्ष बाण दैत्य बिंधिलाक टाणि ।
चळि गला से नाराच बज्र सम जाणि ।। १५५ ।।
कातुरी बाणेक बिन्धि रघुकुळ बीर ।
बेनि खण्ड करि देले असुरर शर ।। १५६ ।।
चारि पाशशरे दैत्यबळ बेढ़िथिले ।
श्रीरामंक उपरकु नाराच बिन्धिले ।। १५७ ।।
लक्ष लक्ष शल्य कुन्त मुषल मारन्ति ।
झिकपक्षी प्राय बाण शुन्ये झटकन्ति ।। १५८ ।।
ककड़ा मासरे जेन्हे बरसइ नीर ।
सेहि रूपे अस्त्र अस्त्र पड़े निरंतर ।। १५९ ।।
एकाळे मुद्गर वाण चापे बसाइला ।
कोप भरे सप्तशिरा रामंकु बिंधिला ।। १६० ।।

और बिलंका देश में लोहे की सिरावन चला दूँगा । १५२ अरे असुर ! जब तू इतना आतुर हो रहा है तो तुझे आज ही सबसे आगे यमपुरी भेज दूँगा । १५३ यह सुनकर मंत्री सप्तशिरा अत्यन्त कुपित हो गया । उसने एक लोहे का धनुष अपने हाथ में उठा लिया । १५४ दैत्य ने पाँच लाख बाण एक साथ तान कर छोड़ दिये जो वज्र के समान थे । यह देखकर रघुकुल वीर श्रीराम ने कर्तुरी बाण छोड़कर असुर के बाणों को दो टुकड़े करके काट दिये । १५५-१५६ दैत्यवाहिनी जो चारों ओर से घेरकर खड़ी थी, उसने भी अपने बाणों से श्रीराम पर प्रहार कर दिये । १५७ लाख-लाख वल्ल में भाले-मूसल एक साथ उठकर प्रहार करने लगे । झिक पक्षी की भाँति बाण आकाश में उड़ रहे थे । १५८ जैसे वर्षा ऋतु में पानी की झड़ी लग जाती है, उसी प्रकार निरन्तर अस्त्र-शस्त्रों की बौछार हो रही थी । १५९ इसी समय क्रुद्ध हुए सप्तशिरा ने अपने धनुष पर मुद्गर नामक बाण चढ़ाया और उसे श्रीराम की ओर छोड़ दिया । १६० यह देखते ही पवनकुमार हनुमानजी क्रुद्ध होकर दौड़ पड़े ।

देखिण धाइला क्रोधे पवन कुमर।
श्रीरामंकु पच्छ करि हेला आगुसार ॥ १६१ ॥
से बाणकु धरि हनु भाँगि पकाइला।
सप्तशिरा उपरकु फोपड़ाइ देला ॥ १६२ ॥
डेइँ जाइ बाम करे धइला ता धनु।
बज्रे सम बिधा एक प्रहरिला हनु ॥ १६३ ॥
चरण आघाते पुणि भाँगिला बिमान।
भुमिरे अचेत होइ पड़े मंत्रीराण ॥ १६४ ॥
धाइँ जाइ हनुमन्ते बसिलाक माड़ि।
क्रोध भरे घन घन छाड़े सिंह रड़ि ॥ १६५ ॥
सपत मुण्डकु धरि झिंके हनुमान।
सपत मुकुट पुणि पादे कला चूर्ण ॥ १६६ ॥
घड़िक उत्तारु दैत्य चेतना पाइला।
हनुकु चउद भुजे अण्डालि धइला ॥ १६७ ॥
काख तले जाकि बीर उठिला सत्वरे।
लुहार गुरुज गोटा बुलाइ हस्तरे ॥ १६८ ॥
रामंक उपरे ताहा प्रहारिला दैत्य।
देखि पच्छ घुंचा देले प्रभु रघुनाथ ॥ १६९ ॥

वह श्रीराम को पीछे करके स्वयं आगे खड़े हो गये। १६१ उन्होंने उस बाण को पकड़कर तोड़ डाला तथा उसे सप्तशिरा के ऊपर ही फेंक दिया। १६२ हनुमानजी ने उछलकर बाएँ हाथ से उसका धनुष पकड़ लिया और उसे वज्र के समान एक मुक्का मारा। १६३ फिर चरण के आघात से बिमान तोड़ डाला। मंत्री अचेत होकर भूमि पर गिर पड़ा। १६४ हनुमानजी दौड़कर उसके ऊपर चढ़ बैठे और कुपित होकर घनघोर सिंहनाद करने लगे। १६५ सातों शिरों को पकड़कर उन्होंने झकझोर दिया तथा सातों मुकुटों को पैरों से कुचलकर चूर्ण कर दिया। १६६ एक घड़ी के बाद दैत्य की चेतना लौटी। उसने अपनी चौदह भुजाओं से हनुमान को कमर से जकड़ लिया तथा काँख में दबाकर हाथ में एक लोहे की गुर्ज हिलाता शीघ्र ही उठकर खड़ा हो गया। १६७-१६८ दैत्य ने श्रीराम के ऊपर उससे प्रहार किया जिसे देखकर रघुनाथ जी पीछे सरक गये। १६९ उन्होंने प्रत्यञ्चा पर

बिंधिले कतुरी बाण गुणरे बसाइ ।
गुण काटिले दैत्य हस्तु रघुसाइँ ।। १७० ।।
गोटाक शावळ धरि पिटन्ते दानव ।
बावल शररे ताहा काटिले राघव ।। १७१ ।।
तहिं परे पशिलेक पुण असिपत्र ।
सम्हालि न पारि सेहि प्रतापी दइत ।। १७२ ।।
मुँह माड़ि भूमितळे पड़िलाक जहुं ।
वीरबर हनुमन्त बाहारिला तहुँ ।। १७३ ।।
दइत पिठिरे हनु बसिलाक जाइ ।
बज्र सम बिधा एक माइला निठाइ ।। १७४ ।।
घड़िकरे दैत्य पुणि चेतना पाइला ।
कोपभरे मारुतिकि दराण्डि धइला ।। १७५ ।।
रे रे कार करि माड़ि बसिला असुर ।
माल संगे माल जेन्हे करइ समर ।। १७६ ।।
जेन्हे धराधरि होइ पड़ि पर्वतरे ।
बाहु बाहु छन्दाछन्दि होइबेनि बीरे ।। १७७ ।।
मुण्डे मुण्ड मरा मरि हुअन्ति से पुणि ।
पाद भरे दलदल हुअन्ति मेदिनी ।। १७८ ।।

कर्तुरी बाण चढ़ाकर दैत्य के हाथ की गुर्ज को काट दिया । १७० एक शावल के द्वारा किये गये दानवी प्रहार को श्री रघुनाथजी ने बावल नामक बाण से काट डाला । १७१ इसके पश्चात् तलवार से उस पर प्रहार किया, जिसे वह प्रतापी असुर सम्हाल नहीं सका । १७२ वह मुँह के बल पृथ्वी पर जा गिरा । महावीर हनुमान तभी बाहर निकल आए । १७३ वह दैत्य की पीठ पर जा बैठे तथा उन्होंने ताक कर वज्र के समान एक मुक्का जमा दिया । १७४ एक घड़ी के बाद उस दैत्य को फिर होश आया । उसने कुपित होकर हनुमानजी को पलटकर धर लिया । १७५ रे रे कहकर असुर ने उन्हें दबोच लिया तथा मल्ल के समान एक-दूसरे से भिड़ गये । १७६ बाँहों से भिड़न्त करते हुए दोनों वीर पर्वत के समान धर-पकड़ कर रहे थे । अर्थात् दोनों ही पर्वतों के समान द्वन्द्व कर रहे थे । शिरों से भी घात-प्रत्याघात कर रहे थे । उनके पैरों की धमक से पृथ्वी कसमसा रही थी । १७७-१७८ मुक्कों

बिधार उपरे बिधा प्रहार करन्ति ।
दुहे पुणि घन-घन गर्जन छाडन्ति ।। १७९ ।।
पर्वतरु गड़ि जाइ समुद्रे पड़िले ।
जळ मध्ये धराधरि होइ जुद्ध कले ।। १८० ।।
श्रीरामंकु दैत्यदळ अछन्ति बेढ़िण ।
घोर जुद्ध करुछन्ति जानकी रमण ।। १८१ ।।
बाणाघाते निशाचर पड़िले भुमिरे ।
मृत शब गदा हेला पर्वत आकारे ।। १८२ ।।
पाशुपत बाण बिन्धिलाक रघुमणि ।
तिरिश सहस्र मुण्ड पकाइले हाणि ।। १८३ ।।
छिण्डि मुण्डमाळसबु पड़िला भुमिरे ।
कुड़ कुड़ होइ दिशे पर्वत आकारे ।। १८४ ।।
भये रणछाड़ि तहुँ पळाइले सैन्य ।
गोड़ाइ विन्धन्ति बाण श्रीरघुनन्दन ।। १८५ ।।
हनुकु घेनिण दैत्य समुद्रे पड़िला ।
असुरकु घेनि नुह गगने उड़िला ।। १८६ ।।
गगन मार्गरे दुहें कले घोर रण ।
पर्वत कन्दर भांगि होइ गला चूर्ण ।। १८७ ।।

पर मुक्कों से प्रहार करते हुए दोनों ही घनघोर गर्जन कर रहे थे । १७९ पर्वत से गिरते-गिरते दोनों समुद्र में पहुँच गये तथा पानी में एक-दूसरे को पकड़-पकड़ युद्ध करने लगे । १८० दैत्यों का दल श्रीराम को चारों ओर से घेरे हुए था । जानकीरमण उनसे घनघोर युद्ध कर रहे थे । १८१ बाणों की मार से राक्षसों के समूह पृथ्वी पर गिर रहे थे । मृत शवों का पहाड़ की तरह अम्बार लगा था । १८२ रघुकुल मणि श्रीराम ने पाशुपत बाण संधान करके तीस हजार शिर काट गिराये । १८३ कट-कटकर शिर पृथ्वी पर गिर रहे थे और पुंज के पुंज पहाड़ के आकार में दिख रहे थे । १८४ भय से युद्धस्थल छोड़कर सेना भागने लगी । रघुनन्दन राम उन पर दौड़ा-दौड़ाकर बाण सन्धान कर रहे थे । १८५ दैत्य हनुमान को लिये समुद्र में गिर पड़ा था । अब असुर को पकड़कर हनुमान जी आकाश में उड़ गये । १८६ आकाश में उन दोनों का भीषण युद्ध हुआ । पहाड़ व कन्दराएँ टूटकर चूर्ण हो

महा बळीआर दुहें समर करन्ति ।
जे सनेक सिंह सिंह जुद्ध करुछन्ति ।। १८८ ।।
हस्ती संगे हस्ती जेन्हे करइ समर ।
महागोळ लागिला से पर्वत उपर ।। १८९ ।।
हनुकु पुणि दइत्य आक्रोशि धइला ।
प्रचण्ड पर्वत परे नेइ कचाड़िला ।। १९० ।।
अचेतन होइ हनु पड़िला पर्वते ।
रामंक पाखुकु दैत्य धाइँला त्वरिते ।। १९१ ।।
घड़िकरे हनुमन्त चेतना पाइला ।
काहिँगलु असुररे बोलि डाक देला ।। १९२ ।।
शुणि लुहा गदा घेनि असुर धाइँला ।
आरे रे बानर बोलि उच्चे डाक देला ।। १९३ ।।
हनुमान उपरे ता पिटिला निठाइ ।
देखि पक्षी परि हनु शुन्यरे उड़इ ।। १९४ ।।
बिजुळि पराए पुणि गगनु खसिला ।
सप्तशिरा असुरकु चापोड़ा माइला ।। १९५ ।।
बेनि खण्ड करि गदा पकाइला भांगि ।
रे रे कार करि हनु उठि गळ गाजि ।। १९६ ।।

गयी । १८७ दोनों ही महान बीर शार्दूल के समान जूझ रहे थे । १८८ हाथी के साथ हाथी के समान उन दोनों के युद्ध से पर्वत के ऊपर भयंकर कोलाहल मच गया । १८९ बड़े क्रोध से उस दैत्य ने हनुमान को पकड़कर प्रचण्ड पर्वत पर दे पछाड़ा । १९० पर्वत पर हनुमान चेतनाशून्य होकर गिर पड़े । वह दैत्य श्रीराम की ओर शीघ्रता से दौड़ा । एक घड़ी में ही हनुमन्त लाल की चेतना लौट आई । तभी "अरे दैत्य ! कहाँ गया ?" कहकर हनुमान ने प्रबल हुंकार लगाई । १९१-१९२ यह सुनकर असुर लोहे की गदा लेकर दौड़ा । अरे बानर ! आ । कहकर उसने भी बड़े तीव्र स्वर में गर्जन किया । १९३ उसने निशाना साधकर हनुमान के ऊपर प्रहार किया जिसे देखकर हनुमान पक्षी की भाँति आकाश में उड़ गये । १९४ फिर बिजली के समान आकाश से गिरकर उन्होंने सप्तशिरा के एक तमाचा जमा दिया । १९५ गदा को उन्होंने दो टुकड़े करके फेंक दिया तथा रे रे का शब्द करते हुए हुंकार उठे । १९६ असुर ने क्रुद्ध होकर हनुमान को जकड़कर प्रचण्ड

क्रोधरे हनुकु पथि आक्रोशि धइला ।
प्रचण्ड पर्वत परे माड़िण बसिला ॥ १९७ ॥
बज्र सम मुथ एक माइला असुर ।
घाए घुमाइला तहिं कपिकुळ वीर ॥ १९८ ॥
घड़िक उत्तारे पुणि पाइला चेतन ।
मने मने श्रीरामंकु करे सुमरण ॥ १९९ ॥
राम राम कहि बेगे उठि हनुवीर ।
डेइँ जाइँ बसिला जे पर्वत उपर ॥ २०० ॥
अति क्रोधे विश्वमुर्ति धरि हनुमान ।
चउपाशे असुरकु करे अन्वेषण ॥ २०१ ॥
खोजि खोजि न पाइला पवनर सुत ।
उच्चे डाक देला केणे गलुरे दइत ॥ २०२ ॥
क्रोध भरि उपाड़िला एक गिरिवर ।
रह रह बोलि डाक देले रघुवीर ॥ २०३ ॥
कोदण्ड पुराइ बाण रघुकुळ साइँ ।
असुरर उपरकु बिन्धिले तुहाइ ॥ २०४ ॥
दैत्य हृदे पड़ि बाण होइ गला चूर ।
देखि क्रोधे शत बाण बिन्धि रघुवीर ॥ २०५ ॥

पर्वत पर लथेड़ दिया तथा उन्हें वज्र के समान एक घेंचा लगाया जिससे कपिकुल में बलवान हनुमान जी को चक्कर आ गया । १९७-१९८ एक घड़ी के बाद उन्हें होश आने पर वह मन ही मन श्रीराम का स्मरण करने लगे । १९९ फिर शीघ्रता से राम राम कहते हुए उछलकर पर्वत के ऊपर जा बैठे । २०० अत्यंत कुपित होकर उन्होंने अपने विकराल रूप का विस्तार किया तथा चारों ओर असुर को खोजने लगे । २०१ पवननन्दन ने जब उसे न खोज पाया तो वह उच्च स्वर से चिल्ला पड़े, अरे दैत्य ! तू कहाँ चला गया ? २०२ क्रोधित होकर उन्होंने एक पर्वत उखाड़ लिया । तभी राम ने "रुक जाओ ! रुक जाओ !" कहकर आवाज दी । २०३ रघुनाथ जी ने एक बाण को दण्ड पर चढ़ाकर निशाना साधाकर असुर के ऊपर छोड़ दिया । २०४ दैत्य के वक्षस्थल पर लगकर वह बाण चूर-चूर हो गया । तब राघवेन्द्र ने कुपित होकर एक साथ सौ बाण सन्धान कर छोड़े जिन्होंने दैत्य के सातों सिरों को काटकर खण्ड-खण्ड

बेगे काटि पकाइले दइत्यर मुण्ड ।
सात गोटा मुण्ड तार हेला खण्ड खण्ड ॥ २०६ ॥
प्राण छाड़ि से असुर भुमिरे पड़िला ।
मरिबार बेळे दैत्य गर्जन छाड़िला ॥ २०७ ॥
पळाइले दैत्य बळ छिन्न छन्न होइ ।
सप्तशिरा मृत्यु देखि न रहिले केहि ॥ २०८ ॥
एहा देखि देवगणे हरष होइले ।
श्रीरामचन्द्रंक शिरे पुष्प वृष्टि कले ॥ २०९ ॥
पर्वत उपरे बिजे कले चापधर ।
दुइ दिन तिनि राति होइला समर ॥ २१० ॥
जुद्ध सारि रघुनाथ समुद्रे पशिले ।
स्नान नित्यकर्म सारि शउच होइले ॥ २११ ॥
पितृक तर्पण सारि कोदण्ड धारण ।
पर्वत उपरे बिजे कले रघुराण ॥ २१२ ॥
फळ मूळ गुड़ा आणि हनुमन्त देला ।
भोजन सारिले तहिं कउशूल्या बळा ॥ २१३ ॥
फळ मूळ खाए हनु बनस्ते पशिण ।
रात्रि प्रवेश होइला शोइले श्रीराम ॥ २१४ ॥
रात्रि थाउँ जुद्ध कथा कुहाकुहि होन्ति ।
शय्यारु उठिण राम शर सळखन्ति ॥ २१५ ॥

करके गिरा दिया । २०५-२०६ वह दैत्य प्राण त्यागकर पृथ्वी पर गिर पड़ा । मृत्यु के समय उसने भीषण गर्जना की । २०७ राक्षस-सेना छिन्न-भिन्न होकर भाग गई । सप्तशिरा को मृत देखकर वहाँ कोई भी नहीं टिका । २०८ यह दृश्य देखकर देवताओं ने हर्ष के साथ श्रीरामचन्द्र जी के शिर पर पुष्पों की वर्षा की । २०९ पर्वत के ऊपर श्रीरामचन्द्रजी विराजमान थे । यह युद्ध दो दिन तथा तीन रात्रि पर्यन्त चला । २१० युद्ध की समाप्ति पर श्रीराम ने सागर में स्नान किया तथा नित्यकर्म से निवृत्त होकर पवित्र हो गये । २११ कोदण्डधारी राम पितरों का तर्पण करके पर्वत के ऊपर जा पहुँचे । २१२ हनुमान ने फल-मूल आदि लाकर दिये । फिर कौशल्यानन्दन श्रीराम ने भोजन समाप्त किया । २१३ हनुमान जी ने वन में घुसकर फल-मूल खाए । रात्रि होने पर श्रीरामचन्द्र जी लेट गये तथा युद्ध की वार्ताएँ होने लगीं । फिर शय्या से उठकर वह अपने बाण सम्हालने लगे । २१४-२१५

सहस्रशिरा रावणर मन्त्री निमित्त क्षोभ ओ नाभिदैत्य जन्म होइ युद्धकु आगमन ओ मृत्यु

एथु अनन्तरे कथा शुण शाकम्बरी ।
आस्थान उपरे विजे कले दण्डधारी ॥ १ ॥
भग्न बळमाने जाइ मिळिले नगरे ।
चार जणाइला बेगे नृपति छामुरे ॥ २ ॥
भो देव मणिमा शुण बिलंका ईश्वर ।
सप्तशिरा मंत्री मला जुद्धरे तोहर ॥ ३ ॥
अनेक समर करि मंत्रीवर मला ।
रघुनाथ ताकु बाणे काटि पकाइला ॥ ४ ॥
एहा शुणि नृपति जे पड़िलाक तुनि ।
हा ! हा ! मंत्रीवर बोलि पारइ बोबाळि ॥ ५ ॥
हा ! हा ! मंत्रीवर तुहि जीवन मोहर ।
मारि न पारिलु रणे से कोदण्डधर ॥ ६ ॥
देवतामाने तो भए होन्ति थरहर ।
सामान्य मानव नेला पराण तोहर ॥ ७ ॥
महाक्षत्री होइ पुणि राम हस्ते मलु ।
मोते छाड़ि कर मंत्री केणे चालि गलु ॥ ८ ॥

मंत्री के लिए सहस्रशिरा रावण का क्षोभ तथा नाभि दैत्य का जन्म, युद्ध हेतु आगमन और मृत्यु

हे शाकम्बरी ! इसके बाद की कथा सुनो । सहस्रशिरा रावण सिंहासन पर विराजमान हुआ । १ बल-भग्न सैनिकदल नगर में पहुँच गया । दूत ने जाकर महाराज के समक्ष निवेदन किया । २ हे देव बिलंकेश्वर ! सुनिए ! आपका मंत्री सप्तशिरा युद्ध में मारा गया । ३ वह अनेक प्रकार से युद्ध करते हुए मृत्यु को प्राप्त हुए । रघुनाथ ने बाण से उनको काट डाला । ४ यह सुनकर राजा अवाक् हो गया । 'हा श्रेष्ठ मंत्री' कहकर वह क्रन्दन करने लगा । ५ हा मंत्री ! तू तो मेरा प्राण ही था । उस कोदण्डधारी राम को तू मार नहीं पाया । ६ तुम्हारे भय से देवता भी थर्रा जाते थे । पर एक साधारण मनुष्य ने तुम्हारे प्राण ले लिये । ७ महान बलशाली होकर भी राम के हाथ से मर गए । हे मंत्री ! मुझे छोड़कर तुम कहाँ चले गए ? ८ मैं अब बुरा-

काहाकु बा भलमन्द पचारिबि मुहिँ ।
केबा मोते भलमन्द बुझि देबो कहि ॥ ९ ॥
आहा आहा मंत्री बोलि करइ रोदन ।
शबद शुभिला जाइ बिलंका भुवन ॥ १० ॥
मंत्रीबर बध हेला रामर हस्तर ।
बिलंकार लोके शुणि हेले हाहाकार ॥ ११ ॥
सुरेखा सुन्दरी अटे मंत्रीर घरणी ।
कान्त बध शुणि उच्चे कांदइ तरुणी ॥ १२ ॥
दश मास गर्भे मोर अछइ कुमर ।
कान्त कान्त बोलि उच्चे कान्दे रामाबर ॥ १३ ॥
आहे प्राणनाथ मोते काँहिँ छाड़ि गल ।
एड़े बड़ क्षत्री होइ राम हाते मल ॥ १४ ॥
जुवा काळे आहे कान्त हेलिमुँ अनाथ ।
सम्भाळि जुद्ध न कल किम्पा प्राणनाथ ॥ १५ ॥
केवण देशरु सेहि श्रीराम अइला ।
तोते जुद्धे मारि मोते अनाथा से कला ॥ १६ ॥
के रामंकु मारि देव आगरे मोहर ।
कान्तकु माइला ताकु करिबि आहार ॥ १७ ॥

भला किससे पूछूँगा ? अच्छा-बुरा समझ-बूझकर कौन मुझे सलाह देगा । ९ हा ! मंत्री ! हा ! कहकर वह रुदन करने लगा । क्रन्दन का शब्द सम्पूर्ण बिलंका नगर में छा गया । १० श्रीराम के हाथों श्रेष्ठ मंत्री का वध हो जाने को सुनकर बिलंका-निवासियों में हाहाकार मच गया । ११ तरुण सुन्दरी सुरेखा, जो मंत्री की पत्नी थी, अपने पति की मृत्यु को सुनकर उच्च स्वर में क्रन्दन करने लगी । १२ मेरे गर्भ में दस माह का बालक है । श्रेष्ठ तरुणी, हे कान्त ! हे कान्त ! कहकर रुदन कर रही थी । १३ हे प्राणनाथ ! मुझे छोड़कर आप कहाँ चले गये ? इतने बड़े वीर होकर राम के हाथों मर गये । १४ हे नाथ ! मैं युवाकाल में ही अनाथ हो गई । हे प्राणनाथ ! आपने सम्हाल कर युद्ध क्यों नहीं किया । १५ वह राम किस देश से आया जिसने तुम्हें युद्ध में मारकर मुझे अनाथ कर दिया । १६ राम को मारकर कौन उसे मेरे सामने ला देगा ? जिसने मेरे स्वामी का वध किया है, मैं उसे खा जाऊँगी । १७ वह युवती कान्त ! कान्त ! कहते हुए क्रन्दन कर रही

कान्त कान्त बोळिण जे कान्दइ तरुणी।
गर्भे थाइ पुत्र गोटि ता रोदन शुणि ॥ १८ ॥
डाकिला गो मात कान्दु तुहि काहिं पाइँ।
मो पिताकु के माइला कह मोते तुहि ॥ १९ ॥
एहा शुणि असुरी जे गर्भकु चाहिंला।
बोइला तोर पिताकु श्रीराम माइला ॥ २० ॥
पुत्र बोइला तु मोते प्रसव जे कर।
मारिबि मुँ पिता शत्रु ए सत्य मोहर ॥ २१ ॥
श्रीरामंकु मारिबि मुँ मोते कर जन्म।
जेणु मो पिताकु बध करिछि श्रीराम ॥ २२ ॥
एहा शुणि दइतुणी हरष होइला।
सेहि क्षणि कुमरकु प्रसव से कला ॥ २३ ॥
गर्भरु बाहारि तळे पड़िला कुमर।
शरीर बिकाशे तार पर्वत आकार ॥ २४ ॥
लाळे जर जर होइ पड़िला भुमिरे।
अन्त नाड़ि लागि अछि ताहार नाभिरे ॥ २५ ॥
माताकु बोइला कह राम अछि काहिँ।
आगे मुहिं पिता शत्रु मारि आसे जाइ ॥ २६ ॥

थी। उसके गर्भ में स्थित बालक ने उसका रुदन सुनकर कहा कि हे माता! तू किस कारण क्रन्दन कर रही है। मेरे पिता का वध किसने किया, यह तू मुझे बता दे। १८-१९ यह सुनकर राक्षसी ने अपने गर्भ की ओर देखते हुए कहा कि तुम्हारे पिता का वध श्रीराम ने किया है। २० पुत्र बोला कि तू मेरा प्रसव कर दे। मैं अपने पिता के शत्रु को मार डालूँगा —यह मेरी प्रतिज्ञा है। २१ जिस राम ने मेरे पिता को मार डाला है, मैं उस राम का वध कर दूँगा। बस तू मुझे जन्म दे दे। २२ यह सुनकर राक्षसी प्रसन्न हो गई। उसने उसी समय बालक का प्रसव कर दिया। २३ गर्भ से निकलकर बालक पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसका शरीर पर्वत के समान बढ़ने लगा। २४ रक्ताक्त-वदन बालक भूमि पर गिर पड़ा। उसका नाड़ा नाभि से लगा हुआ था। २५ उसने माता से कहा कि बता राम कहाँ है? पहले मैं पिता के वैरी को जाकर मार आऊँ। २६ सुरेखा बोली कि वह प्रचण्ड पर्वत पर है। उसने कल ही

सुरेखा बोइला अछि प्रचण्ड पर्वते।
कालि जुद्ध तो पिताकु मारिला स्वहस्ते॥ २७ ॥
जेबे श्रीरामकु तुहि मारिबु संतति!
चारि जुगे आरे पुत्र रखिबु कीरति॥ २८ ॥
पुत्र बोइला गो माता दिअ मोर नाम।
मोक लागु अछि मोते करा क्षीर पान॥ २९ ॥
एहा शुणि जननी जे धइला कोळरे।
बेनि स्तन नेइ देला पुत्रर मुखरे॥ ३० ॥
क्षीर पाइ असुर जे हेला महाकोपी।
कहुँ कहुँ शिर गला गगनकु व्यापि॥ ३१ ॥
माताकु बोइला बेगे दिअ मोर नाम।
नाभि नाड़ि गुड़िआइ बान्धे कटिरेण॥ ३२ ॥
एहा देखि जननी जे हरष होइला।
स्नेहे नाभि दैत्य बोलि नाम तार देला॥ ३३ ॥
माता पाद तळे नमस्कार कला जाइ।
बोइला कल्याण कर गर्भ धारी माइ॥ ३४ ॥
मारिबि रामकु आजि दिअ मोते बर।
जननी बोइला शुभ हेउ रे कुमर॥ ३५ ॥

युद्ध में तेरे पिता को अपने हाथों से मार डाला। २७ अरे पुत्र! यदि तू श्रीराम को मार देगा तो चारों युगों में तेरी कीर्ति फैल जाएगी। २८ पुत्र ने कहा, अरी माँ! मेरा नाम तो रख दे। मुझे भूख लगी है। मुझे दूध पिला दे। २९ यह सुनकर जननी ने उसे गोद में उठा लिया और अपने दोनों स्तनों को लेकर पुत्र के मुख में लगा दिया। ३० दुग्ध-पान करने से असुर महान क्रोधी हो गया। बातों ही बातों में उसका शिर आकाश तक व्याप्त हो गया। ३१ उसने माता से कहा कि शीघ्र ही मेरा नामकरण कर दे। उसने अपनी नाभि के नाड़े को गुड़िआकर कमर में खोंस लिया। ३२ यह देखकर जननी को बड़ी प्रसन्नता हुई। बड़े प्रेम से उसने उसका नाम नाभि दैत्य रखा। ३३ बालक ने माता के चरणों में जाकर प्रणाम किया और कहने लगा की हे गर्भधारणी माँ! मुझे आशीर्वाद दो। ३४ आज राम को मारूँगा। तू मुझे यही वर दे। जननी बोली कि बेटा! तेरा कल्याण हो। ३५ तू अपने पिता के शत्रु

पिता शत्रु मारि करि आस तु बहन।
शुणि हरषित हेला नाभि दैत्य मन ॥ ३६ ॥
रावि पाहि गला उदे हेले दिनकर।
बिलंकारु दइत्य जे होइला बाहार ॥ ३७ ॥
गगनमार्गरे काया बढ़ाइ आसइ।
मेरु गिरि समाने ता शरीर दिशइ ॥ ३८ ॥
उत्तर गढ़ दुआरे होइला बाहार।
गगन मार्गरे उड़ि आसइ से बीर ॥ ३९ ॥
एथु अनन्तरे देवी पार्वती गो शुण।
रात्र प्रभातरु उठि प्रभु रघुराण ॥ ४० ॥
समुद्ररे पशि स्नान नित्य कर्म कले।
तर्पण सारिण राम पर्वते बसिले ॥ ४१ ॥
स्वादुफळ खोजि आणि हनु नेइ देला।
निश्चिन्ते भोजन कले कौशल्यांक बळा ॥ ४२ ॥
हनुकु बोलन्ति पुणि प्रभु रघुबीर।
बिलंकाकु चाहि थाअ पवन कुमर ॥ ४३ ॥
मायावी असुरे सेहि अटन्ति पामर।
न जाणि गुपते आसि करन्ति समर ॥ ४४ ॥

को शीघ्र मार कर आ। यह सुनकर नाभि दैत्य का मन प्रफुल्लित हो गया। ३६ रात्रि के बीतने पर सूर्य उदय हो गये। दैत्य बिलंका नगर से बाहर निकल पड़ा। ३७ अपनी काया को बढ़ाकर वह आकाश-मार्ग से आ रहा था और उसका विशाल शरीर सुमेरु पर्वत की भाँति दिखाई दे रहा था। ३८ वह वीर दुर्ग के उत्तरी द्वार से निकलकर आकाश मार्ग से उड़कर जा रहा था। ३९ हे देवी पार्वती! इसके बाद की बात सुनो। रघुनाथ जी निशाशेष होने पर प्रातःकाल में उठ गये। ४० उन्होंने सागर में घुसकर स्नान किया। नित्यकर्म, तर्पणादि समाप्त करके वह पर्वत के ऊपर बैठ गए। ४१ हनुमान जी ने स्वादिष्ट फल खोजकर ला दिए। कौशल्यानन्दन श्रीराम ने निश्चिन्त होकर भोजन किया। ४२ प्रभु रघुवीर ने फिर हनुमान से कहा कि हे पवनकुमार! तुम बिलंका को देखते रहना। ४३ वह दुष्ट असुर बड़े ही मायावी हैं। अनजाने में ही छिपकर आकर युद्ध करने लगते हैं। ४४ यह सुनते ही

शुणि बिलंकाकु चाँहि देला हनुमान ।
कळा मेघ खण्ड प्राय दिशइ गगन ।। ४५ ।।
हनु बोले शून्ये दिशे कळा काहिं पाइँ ।
मायावी असुर किंबा गुप्ते आसइ ।। ४६ ।।
एहा शुणि आकाशकु चाहिले श्रीराम ।
असुरकु चिन्हि पारि प्रभु रघुनान ।। ४७ ।।
हनुकु बोइले निश्चे अटे ए असुर ।
सम्हाळि जुझरे बाबु पवन कुमर ।। ४८ ।।
एहा शुणि हनुमन्त शुन्ये देला चाहिं ।
देखिला एकइ दैत्य गगने आसइ ।। ४९ ।।
कहुँ कहुँ असुर जे शुन्यरे खसिला ।
प्रचण्ड पर्वत परे पाटि बिस्तारिला ।। ५० ।।
देखिला पर्वत परे अछन्ति श्रीराम ।
श्रीराम सन्निधे अछि बीर हनुमान ।। ५१ ।।
देखि तांकु कोपभरे गर्जइ असुर ।
बोइला पितांकु किम्पा माइलु मोहर ।। ५२ ।।
मुहिं नाभिदैत्य सप्तशिरार कुमर ।
आज दुहिंकि मुँ पठाइबि जमघर ।। ५३ ।।

हनुमान जी ने बिलंका की ओर दृष्टि डाली । उन्हें आकाश में कुछ बादल की-सी कालिमा दिखाई पड़ी । ४५ हनुमान जी बोले कि नभमण्डल में यह कालिमा किसलिए दिखाई दे रही है ? कहीं कोई मायावी दैत्य तो गुप्त रूप से नहीं आ रहा ? ४६ यह सुनते ही श्रीराम ने आकाश की ओर देखा और उन्होंने असुर को पहचान लिया । ४७ वह पवनपुत्र हनुमान से बोले कि यह निश्चय ही राक्षस है । इसके साथ सम्हालकर समझ-बूझकर ही युद्ध करना । ४८ यह सुनकर हनुमान ने आकाश की ओर ताका । उन्होंने देखा कि एक दैत्य नभमण्डल से आ रहा है । बातों ही बातों में वह राक्षस आकाश से नीचे उतरा तथा प्रचण्ड पर्वत पर उसने अपना मुख फैला दिया । ४९-५० उसने पर्वत पर श्रीराम को तथा उनके निकट महावीर हनुमान को देखा । ५१ उन्हें देखकर असुर क्रुद्ध होकर गर्जना करते हुए बोला कि तुमने मेरे पिता का वध किसलिए किया है ? ५२ मैं सप्तशिरा का पुत्र नाभि दैत्य हूँ । मैं आज तुम दोनों को यमलोक पहुँचा दूंगा । ५३ श्रीराम ने कहा कि तू इतना व्यग्र क्यों हो रहा है ?

श्रीराम बोइले किम्पा हेउछु उच्छन्न ।
पिता संगे भेंट कराइबि आजदिन ॥ ५४ ॥
एहा शुणि से असुर कोपे परज्ज्वळि ।
राम हनुसह परवत देला गिळि ॥ ५५ ॥
दन्ते उपाड़िण छिण्डाइला गिरिवर ।
पर्वत पड़िला जाइ असुर गर्भर ॥ ५६ ॥
राम हनु सहिते ता गर्भरे पड़िले ।
श्रवण बाटरु हनु बाहार होइले ॥ ५७ ॥
देखिला श्रीरामचन्द्र नाहान्ति सेठारे ।
परवत सह राम अछन्ति गर्भ रे ॥ ५८ ॥
रामंकु न देखि हनु विकळ होइला ।
नासा बाटे पुणि दैत्य गर्भरे पशिला ॥ ५९ ॥
गर्भे खोजि हनुमान रामंकु पाइला ।
श्रवण दुआरे पुणि बाहार होइला ॥ ६० ॥
श्रीरामंकु घेनि हनु उड़िला शुन्यरे ।
दराण्डइ नाभिदैत्य खोजइ भुमिरे ॥ ६१ ॥
बिचारे मुँ राम बानर कु नाश कळि ।
पितार शत्रुकु मारि कीरति रखिली ॥ ६२ ॥
एबे मुहिं स्वर्गपुर भांगिबइँ जाइँ ।
देवतांकु आणिबि जे गर्भरे पुराइ ॥ ६३ ॥

आज ही मैं तुम्हारी भेंट तुम्हारे पिता के साथ करा दूँगा । ५४ यह सुनकर वह दैत्य क्रोध से जल उठा और उसने श्रीराम तथा हनुमान के समेत पर्वत को लील लिया । ५५ दाँत से उखाड़ा हुआ पर्वत छिन्न-भिन्न होकर दैत्य के गर्भ में चला गया । ५६ हनुमान-सहित श्रीराम भी उसके पेट में चले गए । महावीर जी कर्ण-छिद्र के द्वारा बाहर निकल आए । ५७ उन्होंने देखा कि श्री रामचन्द्र जी वहाँ नहीं हैं । वह तो पर्वत के साथ उसके पेट में पड़े थे । ५८ श्रीराम को वहाँ न पाकर हनुमान व्याकुल हो गये । वह फिर से नासिका के छिद्र से दैत्य के गर्भ में घुस गए । ५९ गर्भ में खोजते-खोजते उन्हें श्रीराम मिल गए । वह पुनः श्रवण द्वार से बाहर आ गये । ६० श्रीराम को लेकर हनुमान आकाश में उड़ गए । नाभि दैत्य उन्हें दौड़-दौड़कर पृथ्वी पर खोज रहा था । ६१ उसने सोचा कि मैंने श्रीराम और वानर (हनुमान) का विनाश कर दिया है तथा अपने पिता के शत्रु को मारकर कीर्ति अर्जित कर ली है । ६२ अब मैं जाकर स्वर्गलोक

एते बोलि दैत्य बीर उठिला गगने।
असुरकु देखि भय कले देवगणे ॥ ६४ ॥
डाकिलेक रक्षा कर आहे रघुबीर।
आजि एहि स्वर्गपुर भांगिला असुर ॥ ६५ ॥
देवता मानंकु निश्चे असुर गिळिब।
जेबे रक्षा करि न पारिब हे राघव ॥ ६६ ॥
हनुमन्त बोले शुण प्रभु रघुनाथ।
स्वर्ग भुवनकु एबे धाइँला दइत्य ॥ ६७ ॥
एहा शुणि धाइँला से कोदण्ड धारण।
काया विस्तार असुर करइ गगन ॥ ६८ ॥
एहा देखि रघुनाथ महाकोप कले।
धनु धरि राम स्वर्ग पथ निरोधिले ॥ ६९ ॥
शर वृष्टि कले देव जानकी रमण।
से शर घोटिला जाइँ आकाश भुवन ॥ ७० ॥
सात ताळ बहळरे एक बन्ध हेला।
प्रतापी असुर वीर जाइ न पारिला ॥ ७१ ॥
शरबन्ध देखि दैत्य मने विचारिला।
केहु आसि गगनरे बाट निरोधिला ॥ ७२ ॥

को नष्ट कर दूँ और देवताओं को अपने उदर में भरकर ले आऊँ। ६३ इस प्रकार विचार करके बलवान दैत्य आकाश में उड़ा। उसे देखकर देवता भय से काँप गए। ६४ हे रघुवीर! रक्षा करो! रक्षा करो! कहकर वह चिल्लाने लगे। आज यह दैत्य निश्चय ही स्वर्गपुर को नष्ट-भ्रष्ट कर देगा। हे राघव! यदि आप हमारी रक्षा नहीं कर पायेंगे तो यह दैत्य देवताओं को निश्चय ही निगल जाएगा। ६५-६६ हनुमान ने श्रीराम से कहा कि हे रघुनाथ! सुनिए। यह दैत्य स्वर्गलोक की ओर दौड़ रहा है। ६७ यह सुनकर कोदण्डधारी श्रीराम तीव्र वेग से चल पड़े। आकाश में असुर अपनी काया का विस्तार कर रहा था। ६८ यह देखकर रघुनाथ जी को महान क्रोध हो आया। उन्होंने धनुष लेकर स्वर्गलोक का मार्ग अवरुद्ध कर दिया। ६९ फिर जानकीवल्लभ श्रीराम ने बाणों की वर्षा कर दी। वह बाण सारे आकाशमण्डल में छा गये। ७० सात ताल वृक्षों की ऊँचाई का एक बाणों का बाँध-सा बन गया, जिससे बलवान प्रतापी राक्षस आगे न बढ़ सका। शरबन्ध को देखकर दैत्य मन में विचार करने लगा कि किसी ने आकर आकाश के

लेउटि चाहिला दैत्य अछन्ति श्रीराम ।
धनुधरि अनुक्षणे बिन्धुछन्ति बाण ॥ ७३ ॥
गगनरे उड़ु अछि पवन कुमर ।
देखि तांकु धाइँला से प्रतापी असुर ॥ ७४ ॥
काया बिस्तारिला दैत्य सतुरि योजन ।
एहादेखि चमत्कार हेला हनुमान ॥ ७५ ॥
राम राम बोलि मने सुमरणा कला ।
तिरिश जोजन जाए काया बिस्तारिला ॥ ७६ ॥
दुइ बीर शुन्य मार्गे धराधरि होइ ।
पड़िले समुद्र जन मध्ये दुइ जाइ ॥ ७७ ॥
देखि रत्नाकर भए हेला थरहर ।
डाकिलाक मोते रख कौशल्या कुमर ॥ ७८ ॥
बेनि बीर समुद्रर जळरे पड़िले ।
दुहुँ मिशि घोर जुद्ध जळमध्ये कले ॥ ७९ ॥
हनुकु धरणि सेहि प्रतापी असुर ।
कोळे भिड़ि धरि बेगे उड़िला शुन्यर ॥ ८० ॥
रामचन्द्र निकटकु आसिलाक धाइँ ।
देखिण कोदण्डधर प्रभु रघुसाईँ ॥ ८१ ॥

मार्ग को अवरुद्ध कर दिया है । ७१-७२ उसने जैसे ही पलटकर देखा तो उसे अपने समक्ष श्रीराम दिखाई पड़े । वह प्रतिक्षण अपने धनुष से बाण छोड़ रहे थे । ७३ पवननन्दन हनुमान आकाश में उड़ रहे थे । उन्हें देखकर वह प्रतापी दैत्य दौड़ पड़ा । ७४ उस दैत्य ने अपनी काया का विस्तार सत्रह योजन पर्यन्त कर लिया, जिसे देखकर हनुमान जी आश्चर्य में पड़ गये । ७५ महावीर जी ने अपने मन से राम-राम का स्मरण करते हुए अपनी काया का विस्तार तीस योजन तक कर लिया । ७६ फिर दोनों वीर आकाश में एक-दूसरे से भिड़ गए और लड़ते-लड़ते सागर जल में जा गिरे । ७७ उन्हें देखकर रत्नाकर समुद्र भय से थर्रा उठा तथा अपनी रक्षा के लिए कौशल्यानन्दन श्रीराम से प्रार्थना करने लगा । ७८ दोनों ही वीर समुद्र में गिरकर आपस में भिड़े घनघोर युद्ध जल में ही करने लगे । ७९ हनुमान जी को अपने बाहुपाश में दबोचकर वह प्रतापी असुर प्रबल वेग से आकाश की ओर उड़ चला । ८० वह दौड़कर श्रीरामचन्द्र की ओर आ गया । उसने कोदण्डधारी रघुनाथ जी को देखा । तभी राघव ने कुपित होकर उस पर पाँच लाख बाण छोड़ दिये जिन्हें वह दानव मुख

पांच लक्ष बाण कोपे बिन्धिले राघव।
पाटि विस्तारिण गिळिदेला से दानव ॥ ८२ ॥
ताहा देखि कोप कले प्रभु रघुमणि।
पुणि सहस्रेक बाण बिन्धिलाक टाणि ॥ ८३ ॥
असुर उपरे पड़ि शर हेला चूर्ण।
पाशुपत बाण पुणि बिन्धिले श्रीराम ॥ ८४ ॥
तिळचोपा परमाणे अंगे न भेदिला।
उपुड़िण बाण सबु भुमिरे पड़िला ॥ ८५ ॥
ज्वाळावली बाण बिन्धिलेक रघुवीर।
हाबोड़ा नाराच कोपे कलेक प्रहार ॥ ८६ ॥
असुर अंगरे बाण पड़िलाक जाइँ।
से आघाते दैत्यवीर पड़िला घुमाइँ ॥ ८७ ॥
हनुकु आक्रोशि बीर बळे धरिथिला।
उपाय पाइण हनु बाहार होइला ॥ ८८ ॥
असुर उपरे माड़ि बसे हनुमन्त।
घड़िकरे चेतना जे पाइइ दइत ॥ ८९ ॥
माड़िण बसिला पुणि हनुकु असुर।
दराण्डि धइला असुरकु हनुबीर ॥ ९० ॥

फैलाकर निगल गया। ८१-८२ यह देखकर राघवेन्द्र और भी क्रुद्ध हो गये। उन्होंने फिर एक सहस्र बाण तानकर छोड़े जो असुर के ऊपर गिरकर चूर-चूर हो गये। तब श्रीरामचन्द्र ने पाशुपत बाण छोड़ा। ८३-८४ वह बाण तिल भर भी उसके अंग में नहीं धँसा, उलटे उखड़कर सारा का सारा पृथ्वी पर आ गिरा। ८५ तब कुपित होकर रघुवीर ने ज्वाला वली बाण का सन्धान किया और साथ ही हाबोड़ा नामक बाण से उन्होंने प्रहार कर दिया। ८६ वह बाण दैत्य के शरीर पर लगते ही वह चक्कर खाकर गिर पड़ा। बलवान दैत्य आक्रोश के साथ हनुमान को बलपूर्वक पकड़े हुए था। अवसर पाते ही हनुमान अपने को छुड़ाकर उसकी पकड़ से बाहर आ गए। ८७-८८ हनुमान जी दैत्य के ऊपर चढ़ बैठे। एक घड़ी के बाद उस दैत्य को होश आने पर वह फिर हनुमान पर चढ़ बैठा। हनुमान ने असुर को फिर खदेड़कर पकड़ लिया। ८९-९० दोनों योद्धाओं ने वहाँ घनघोर समर किया। उनके

महाघोर जुद्ध कले तहिं बीर बेनि।
पदाघाते दलदल होइला मेदिनी ॥ ९१ ॥
जेउँ परबत माने पारुशरे थिले।
तांक पाद लागि सबु धुळि होइ गले ॥ ९२ ॥
तर्जन्ति गर्जन्ति घोर ध्वनि जे करन्ति।
दुहिंक गर्जन नादे कम्पे बसुमती ॥ ९३ ॥
देखिण से भय कले रघुकुळ मणि।
अपसरि आड़ होइ गले चाप पाणि ॥ ९४ ॥
बेनि बीरे कोपभरि करन्ति समर।
भये कम्पमान हेले देव सुनासीर ॥ ९५ ॥
पाताळे कम्पित हेला बासुकि जे अहि।
हस्ती संगे हस्ती जेन्हे समर करइ ॥ ९६ ॥
बनस्तरे बेनि सिंह जेसने जुझन्ति।
सेहि परि बेनी बीर समर करन्ति ॥ ९७ ॥
देखिण देवता माने हेले कम्पमान।
धन्य धन्य वीर तुम्भे अटबेनि जन ॥ ९८ ॥
धन्य धन्य हनुमन्त बोलि प्रशंसिले।
देवता मानंक कार्य करिबु बोलिले ॥ ९९ ॥
भयंकर समर लागिला दुइ दिन।
क्षणे मात्र से दुहिंकि नाहिंजे विश्राम ॥ १०० ॥

पदाघात से पृथ्वी दलक उठी। जो भी पर्वत आसपास में थे वह उनके पदाघात से धूल बन गए। ९१-९२ वह गर्जन-तर्जन तथा घनघोर शब्द कर रहे थे। दोनों के गर्जन-रव से पृथ्वी काँप रही थी। ९३ यह देख रघुकुलमणि श्रीराम भी भयभीत हो गए। धनुषधारी राघव वहाँ से हटकर छिप गये। ९४ दोनों क्रुद्ध वीर योद्धाओं के संग्राम को देखकर इन्द्रदेव भय से काँप उठे। ९५ पाताल से नागराज वासुकी भी डर से काँप गए। दो हाथी जैसे आपस में भिड़ गये हों वैसे ही दोनों संग्राम कर रहे थे। ९६ जैसे जंगल में दो सिंह आपस में युद्ध करते हैं, उसी प्रकार दोनों योद्धा युद्ध कर रहे थे। ९७ यह देखकर देवता काँप गये। वह कह उठे कि तुम दोनों ही वीर धन्य हो। ९८ हनुमान ! तुम धन्य हो ! धन्य हो ! कह कर वह उनकी प्रशंसा करते हुए बोले कि तुम निश्चय ही देवकार्य सम्पादित कर सकोगे। ९९ दो दिनों तक भयंकर संग्राम चलता रहा।

वदन्ति इश्वर शुण शुण गो पार्वती ।
देखिले देवता माने कले बड़ भीति ।। १०१ ।।
कोप भरे दइतकु धरि हनुवीर ।
माड़िण बसिला क्रोधे पर्वत उपर ।। १०२ ।।
बाम करे गिरिकि उपाड़ि पकाइला ।
दइत्यकु धरिण से पर्वते पोतिला ।। १०३ ।।
अनेक पर्वत पुणि उपाड़िला बीर ।
कोपभरे लदिला से असुर उपर ।। १०४ ।।
नीळगिरि बहाड़कु हनु जे आणिला ।
से प्रतापी दैत्यपरे आणि कचाड़िला ।। १०५ ।।
पुणि जाइ हनुमन्त पर्वत आणइ ।
पांचशत परवत मुण्डे अछि बहि ।। १०६ ।।
लांगुड़े बाँधिछि बीर दशटा पर्वत ।
बेनि हस्ते धरि अछि गिरि दुइ शत ।। १०७ ।।
रुमकरे गोटि गोटि खंजि अछि सेहि ।
महाविश्व मूर्ति धरि गिरि आणे बहि ।। १०८ ।।
श्रीरामंकु कन्धरे बसाइ हनुमान ।
काया बढ़ाइछि बीर शतेक जोजन ।। १०९ ।।

दोनों को ही एक क्षण के लिए भी विश्राम नहीं मिला । १०० शंकर जी ने पार्वती से कहा, हे देवि ! सुनो । देवतागण देखकर बहुत डर गए । १०१ कुपित होकर हनुमान जी ने दैत्य को पकड़कर पर्वत पर धर दबाया । १०२ हनुमान जी ने बाएँ हाथ से पर्वत को उखाड़कर दैत्य को पकड़कर उसी के नीचे दबा दिया तथा बहुत से पर्वतों को उखाड़कर क्रोध से उस असुर पर लाद दिये । १०३-१०४ हनुमान जी नीलगिरि पर्वत को उखाड़ लाये और उसे प्रतापी दैत्य के ऊपर पटक दिया । १०५ वह बार-बार जाकर पर्वत ला रहे थे । उनके शिर पर पाँच सौ पर्वत थे । १०६ महावीर ने पूंछ में दस पर्वत बाँध रखे थे । दो सौ पर्वत वह हाथ में पकड़े हुए थे । १०७ महा विकराल रूप धारण करके वह पर्वत ला-लाकर एक-एक करके उस दैत्य के ऊपर गिराने लगे । १०८ हनुमान जी ने श्रीराम को अपने कन्धे पर बैठा कर अपने शरीर का विस्तार एक सौ योजन कर लिया । असुर सप्तशिरा का पुत्र पर्वत के नीचे निश्चिन्त दबा पड़ा था । वह चल नहीं

गिरि तळे निश्चिन्तरे रहिला असुर ।
चळि न पारिला सप्तशिरार कुमर ॥ ११० ॥
देखि कि देवगणे कले धन्य धन्य ।
श्रीराम कार्य्य बाबु तु एका भाजन ॥ १११ ॥

नाभि दैत्यर मृत्यु ओ सुरेखा असुरीर मायारूप धारण

शंकर बोलिले देवी पार्वती गो शुण ।
अपुर्व चरित ए बिलंका रामायण ॥ १ ॥
बाल्मीक मुनि एहि ग्रन्थ कले जात ।
से मुनिंक पाद पद्मे रहु मोर चित्त ॥ २ ॥
जय जय पार्वतीरबर विश्वनाथ ।
ताहाङ्क चरण तळे लोटु मोर माथ ॥ ३ ॥
जय शाम्बरी जय शिवर घरणी ।
झंकड़ वासिनी देवी महिषा मर्दिनी ॥ ४ ॥
खेळ करे तु पालु ए संसार ।
तिमिर नाशन तोर ज्वळंता कुठार ॥ ५ ॥
मुहिं सिद्धेश्वर दास मुर्ख अपण्डित ।
श्रीहिंगुळा परसन्ने कलइँ व्यकत ॥ ६ ॥

पा रहा था । १०९-११० यह देखकर देवता धन्य है ! धन्य है ! कहते हुए बोले, हे तात ! श्रीराम का कार्य करने के लिए एक मात्र तुम्हीं पात्र हो । १११

नाभि दैत्य की मृत्यु और सुरेखा असुरी का माया-रूप धारण करना

शंकर जी बोले, हे देवी पार्वती ! बिलंका रामायण के इस अपूर्व चरित्र को सुनो । १ वाल्मीकि मुनि ने इस ग्रन्थ की रचना की । उन मुनि के चरणों में मेरा मन लगा रहे । २ पार्वती के स्वामी विश्व के नाथ की जय हो । उनके चरणों में मैं अपना शिर झुकाता हूँ । ३ भगवान शंकर की गृहिणी देवी शाकम्बरी की जय हो । तुम झंकड़ में वास करनेवाली हो तथा महिषासुर का विनाश करनेवाली हो । ४ तुम खेल-खेल में इस संसार का पालन करनेवाली हो । तुम्हारा प्रज्वलित कुठार अन्धकार को नाश करनेवाला है । ५ मैं सिद्धेश्वर दास मूर्ख तथा अज्ञानी हूँ । श्री हिंगुला देवी के प्रसन्न होने पर ही मैं

झंकड़ वासिनी मातमोते दिअ कहि।
तुम्हरि आज्ञारे मुहिं व्यकत कलइँ ॥ ७ ॥
एहि रामायण नरे एक मने शुण।
रामायण शुणि नरे लभसि कारण ॥ ८ ॥
रामायण शुणि नरे भवु हुअ पार।
रामायण शुणि नरे दुस्तरु निस्तर ॥ ९ ॥
राम राम पदटि जे अटइ अमृत।
शुणि गुणि एहि नाम पापु हुअ मुक्त ॥ १० ॥
रामायण वृत्तान्तकु निरंतरे घोष।
श्रीराम चरणे भजे सिद्धेश्वर दास ॥ ११ ॥
एथु अनन्तरे जे पार्वती जोड़ि कर।
बोइले भो शूलपति ए भवुं निस्तार ॥ १२ ॥
सप्तशिरा पुत्र पुणि केउँ कृत्य कला।
अनेक पर्वते हनु ताहाकु पोतिला ॥ १३ ॥
बदन्ति इश्वर शुण शुण गो पार्वती।
पर्वत उपरे माड़ि बसिला मारुति ॥ १४ ॥
तीनि दिन जाए गिरि तळरे रहिला।
सुरेखा असुरी मन मध्ये बिचारिला ॥ १५ ॥

यह व्यक्त कर पा रहा हूँ। हे झंकड़वासिनी अम्ब! तू मुझे प्रेरणा दे, क्योंकि मैं तेरी ही आज्ञा से (इस कथा का) गान कर रहा हूँ। ६-७ अरे मानव! एकाग्र चित्त से यह रामायण श्रवण करके कारण की प्राप्ति करो। ८ रामायण श्रवण करके संसार-सागर से आर-पार हो जाओ और दुःख से निस्तार पा जाओ। ९ राम-नाम अमृत है। इस नाम का श्रवण-मनन करके पाप से मुक्त हो जाओ। १० रामायण का वृत्तान्त निरंतर स्मरण रखो। सिद्धेश्वर दास श्रीराम के चरणों की उपासना करता है। इसके पश्चात् पार्वती जी हाथ जोड़कर बोलीं, हे शूलपति! इस भवसागर से निस्तार करो। ११-१२ तब सप्तशिरा के पुत्र ने क्या कार्य किया? क्योंकि हनुमान ने उसे अनेकानेक पर्वतों से दबा दिया था। १३ शंकर जी ने कहा कि हे पार्वती! सुनो। हनुमान जी उस पर्वत के ऊपर चढ़कर बैठ गए। १४ तीन दिन पर्यन्त वह असुर पर्वत के नीचे दबा पड़ा रहा। उधर सुरेखा राक्षसी ने अपने मन में विचार किया। १५ मेरा पुत्र राम के साथ युद्ध करने गया था। वह मरा या

पुत्र मोर राम संगे जुझि बाकु गला।
पला कि जिइला अबा रामकु माइला ॥ १६ ॥
ताहार बारता किछि न पाइलि मुहिं।
एते भाळि अर्धरात्रे बाहारिला सेहि ॥ १७ ॥
उत्तर दुआर देइ आसिला सुन्दरी।
नाभि दैत्य बोळि उच्चे डाकिला असुरी ॥ १८ ॥
बोइला रे नन्दन तु केउँ आड़े गळु।
कि अबा पुत्ररे रामचन्द्रंकु माइळु ॥ १९ ॥
कि अबा से राम हस्ते मळुरे कुमर।
किछि मात्र न पाइलि बारता तोहर ॥ २० ॥
पुत्र पुत्र बोलि डाक छाड़े उच्चस्वरे।
शबद शुभिला जाइ नन्दन कर्णरे ॥ २१ ॥
माता डाक शुणि शिशु चेतना पाइला।
जननी डाकुछि बोलि मनरे जाणिला ॥ २२ ॥
अंगुळि हलाइ देला नींद बाउळारे।
पर्वते पड़िले जाइ बनस्त भितरे ॥ २३ ॥
सम्हाळि न पारि सेहु पवनर बळा।
पर्वत सगरे जाइ समुद्रे पड़िला ॥ २४ ॥

जिया अथवा उसने राम को मार डाला। १६ उसका कुछ भी समाचार मुझे नहीं मिल पाया। इस प्रकार विचार करके वह अर्ध-निशा में निकल पड़ी। १७ असुर-सुन्दरी उत्तरी द्वार से निकलकर बाहर आई तथा ऊँचे स्वर में नाभि दैत्य का नाम लेकर पुकारने लगी। १८ उसने कहा, अरे बेटा! तू कहाँ चला गया? हे बेटा! क्या तूने रामचन्द्र को मार डाला? अथवा तुम्हीं राम के हाथों मारे गये? तुम्हारा कोई भी समाचार मुझे नहीं मिला। १९-२० अरे बेटा! अरे पुत्र कहकर वह ऊँचे स्वर में चिल्लाने लगी। वह शब्द बालक के कानों में जा पड़ा। २१ माता की आवाज़ सुनकर बालक को चेत आ गया। वह अपने मन में समझ गया कि उसे उसकी माँ आवाज़ दे रही है। २२ उसने अलसाए ही अपनी उँगली हिला दी, जिससे पर्वत जंगल में जा गिरे। २३ हनुमान (पवनपुत्र) भी उसे न सम्हाल सके। वह भी पर्वत के साथ समुद्र में जा गिरे। २४ हुंकार करता हुआ दैत्य बाहर निकल आया।

हुँकार करिण दैत्य बाहार होइला ।
काहिं गलु आहे राम बोलिण बोइला ॥ २५ ॥
देखिला ता पाशे नाहिं बीर हनुमन्त ।
श्रीरामंक आगे जाइ मिळिला दइत ॥ २६ ॥
खरतर होइ धनुधरि रघुमणि ।
पांच लक्ष बाण कोपे बिन्धिलाक टाणि ॥ २७ ॥
असुर अंगरे पड़ि होइलाक चूर ।
सातकोटि बाण जे बिन्धिले रघुवीर ॥ २८ ॥
पाटि विस्तारिण ताहा गिळिदेला दैत्य ।
लक्षे बाण बिन्धिलेक पुणि रघुनाथ ॥ २९ ॥
दुइ हाते धरि ताहा भाँगिला असुर ।
देखि चमत्कार हेले प्रभु रघुवीर ॥ ३० ॥
अत्यन्त विस्मय होइ रघुकुळ पति ।
कि करिबि बोलि मने बिचार करन्ति ॥ ३१ ॥
कर्तुरी बाणेक पुणि बसाइ गुण रे ।
क्रोध भरे प्रहारिले असुर उपरे ॥ ३२ ॥
रुद्रशक्ति ब्रह्मशक्ति वज्रशक्ति शर ।
ज्वाळावळी पाशुपत परशु कुठार ॥ ३३ ॥

और कहने लगा कि बोल । राम ! तू कहाँ गया ? उसने देखा कि उसके पास वीर हनुमान भी नहीं हैं तब वह श्रीराम की ओर झपटा । २५-२६ रघुश्रेष्ठ राम ने हड़बड़ा कर धनुष उठाया और बड़े क्रोध से पाँच लाख बाण खींचकर उस पर चला दिये । २७ वह सभी असुर के अंग में लगते ही चूर-चूर हो गए । तब रघुवीर ने सात करोड़ बाण छोड़ दिए । २८ दैत्य ने मुँह फैलाकर उन बाणों को निगल लिया । रघुनाथ जी ने पुनः एक लाख बाण छोड़े जिन्हें असुर ने हाथों से पकड़कर तोड़ डाला । यह देखकर राघवेन्द्र को बड़ा आश्चर्य हुआ । २९-३० रघुकुल के स्वामी अत्यंत विस्मित होकर विचार करने लगे कि अब क्या करना चाहिए । ३१ तब उन्होंने कर्तुरी नाम का बाण प्रत्यंचा पर सन्धान कर क्रोधित होकर असुर पर चला दिया । ३२ रुद्र-शक्ति, ब्रह्म-शक्ति तथा वज्र-शक्ति से अभिमंत्रित करके बाण के साथ ज्वालावली, पाशुपत बाण चढ़ाकर अभिमंत्रित अग्न्यास्त्र तथा पर्वतास्त्र भी छोड़ दिए । फिर साथ ही साथ कुन्त, शूल, भाला, गदा और मुग्दर

कुन्त शूळ शल्य गदा मुद्गर माइले ।
अग्निअस्त्र पर्वतास्त्र मंत्रिण विन्धिले ॥ ३४ ॥
नव बाण गुणे बसाइण रघुमणि ।
से दइत्य उपरकु बिन्धिलेक टाणि ॥ ३५ ॥
असुर अंगरे पड़ि सबु हेला चूर ।
देखिण कोदण्ड त्याग कले रघुवीर ॥ ३६ ॥
अत्यन्त विस्मय होइ भाळिले श्रीराम ।
धिक मोर बळ वीर्य धिक राम नाम ॥ ३७ ॥
एक गोटि असुरकु जिणि न पारिलि ।
ए नगरे जय नाहिं निश्चय जाणिलि ॥ ३८ ॥
बनबासी हेबि मुहिं रहिबि बनस्ते ।
देवतांकु दण्ड पच्छे दिअन्तु दइत्ये ॥ ३९ ॥
एते बोलि धनु त्याग कले रघुशिष्य ।
एहा देखि देवताए कले बड़ त्रास ॥ ४० ॥
ब्रह्मा डाक देले धनु छाड़ काहिं पाइँ ।
ब्रह्मशर बिन्धि नाभि काट हे गोसाइँ ॥ ४१ ॥
नाभि काटि पकाइले मरिब असुर ।
शुणि धनु धइलेक रघुकुळ वीर ॥ ४२ ॥

से प्रहार किया । ३३-३४ रघुश्रेष्ठ राम ने प्रत्यंचा पर नौ बाण सन्धान कर उस दैत्य के ऊपर छोड़ दिए । ३५ वह सभी बाण असुर के अंग पर गिरकर चूर-चूर हो गए । यह देखकर रघुवीर ने कोदण्ड धनुष फेंक दिया । ३६ श्रीराम अत्यंत विस्मित होकर सोचने लगे । मेरे बल-वीर्य को धिक्कार है । मेरे राम-नाम को भी धिक्कार है । ३७ मैं एक अकेले असुर को न जीत सका । अब मुझे निश्चित रूप से ज्ञात हो गया कि इस नगर में मेरी विजय नहीं होगी । ३८ मैं अरण्यवासी बनकर बनप्रान्त में निवास करूँगा । पीछे भले दैत्य देवताओं को दण्ड दें । ३९ इतना कहकर रघुवंशी राम ने धनुष का त्याग कर दिया । यह देखकर देवता बहुत त्रस्त हो गए । ४० तभी ब्रह्माजी ने आवाज दी, हे नाथ ! आप धनुष का त्याग किसलिए कर रहे हैं ? ब्रह्म-शर चढ़ाकर इसकी नाभि काट दें । ४१ नाभि कट जाने से यह असुर मर जाएगा । यह सुनकर रघुकुल वीर श्रीराम ने धनुष उठा लिया । ४२ उस समय रघुनाथ जी ने ब्रह्मा का स्मरण करके कहा कि इस काल में आप

से काळे ब्रह्मांकु सुमरिले रघुपति ।
एते बेळे दिअ मोते तुम्ह ब्रह्मशक्ति ।। ४३ ।।
एहा शुणि बेदपति देलेक शकति ।
परम संतोष हेले प्रभु रघुपति ।। ४४ ।।
कपाळे लगाइ गुणे बसाइले से शर ।
आकर्षक करि छाड़ि देले रघुवीर ।। ४५ ।।
दइत्य हृदरे जाइ पड़िला शकटि ।
ब्रह्मलिग भेदि नाभि छेदिण झटति ।। ४६ ।।
बेनि खण्ड करि नाभि पकाइले काटि ।
गर्जिण से दैत्य वीर भूमि पर लोटि ।। ४७ ।।
समुद्र भितरे जाइ पड़िला असुर ।
प्राण छाड़ि पड़िला से पर्वत आकार ।। ४८ ।।
देखिण देवतामाने हरष होइले ।
धन्य धन्य राम बोलि बहु प्रशंसिले ।। ४९ ।।
आकाशरु पुष्प वृष्टि कले देवगण ।
अपसरा नृत्य कले आनन्द होइण ।। ५० ।।
असुरकु मारि राम पर्वतकु गले ।
जुद्ध परिश्रम पाइ स्नाहान सारिले ।। ५१ ।।
तरपण सारिले से कोदण्ड धारण ।
फळ मूळ आणि देला बीर हनुमान ।। ५२ ।।

मुझे अपनी ब्रह्मशक्ति प्रदान करें । ४३ यह सुनकर वेदपति ब्रह्मा ने अपनी शक्ति प्रदान की । इससे रघुवंशी राम को बड़ा संतोष हुआ । ४४ श्रीराम ने उस बाण को शिर से लगाकर प्रत्यञ्चा पर चढ़ाया और आकर्षण करके छोड़ दिया । ४५ वह शक्ति दैत्य के हृदय में जा लगी । ब्रह्मास्त्र से शीघ्र ही उसकी नाभि का छेदन हो गया । ४६ नाभि नाड़ को दो खण्डों में श्रीराम ने काट गिराया । वह वीर दैत्य गर्जना करते हुए पृथ्वी पर लोट गया । ४७ अपने प्राणों का परित्याग करके वह पर्वताकार दैत्य समुद्र के भीतर जा गिरा । ४८ यह देखकर देवगण प्रसन्न हो गये । वह श्रीराम को धन्यवाद देते हुए अनेक प्रकार से प्रशंसा करने लगे । ४९ उन्होंने आकाश से पुष्पवर्षा की । अप्सराएँ प्रसन्न होकर नृत्य करने लगीं । ५० असुर का वध करके श्रीराम पर्वत पर चले गए । युद्ध के श्रम को शमित कर उन्होंने स्नान किया । ५१ धनुर्धारी राम ने तर्पण

भोजन सारिण शोइले से रघुवीर ।
एमन्त समये शुण आन समाचार ।। ५३ ।।
शंकर बोइले देवी पार्वती गो शुण ।
मरिवार वेळे दैत्य कलाक गर्जन ।। ५४ ।।
बिलंकारे थाइ शब्द असुरी शुणिला ।
पुत्र मोर जुद्धे मला मनरे जाणिला ।। ५५ ।।
उच्च स्वरे कांदि कांदि गला से असुरी ।
समर भूमिरे जाइँ मिळिला सुन्दरी ।। ५६ ।।
पर्वत प्रायेक तहिं पड़िछि नन्दन ।
एहा देखि असुरी जे करइ रोदन ।। ५७ ।।
आरे आरे पुत्र बोलि पड़िला भुमिरे ।
दइतुणी भुज दुइ मारइ हृदरे ।। ५८ ।।
पुत्रकु से कोळ करि करइ रोदन ।
अनाथ करिण मोते गलुरे नन्दन ।। ५९ ।।
अपुत्रिक कष्ट तुहि किम्पा देलु मोते ।
दशमासे गर्भे मुंजे धरिथिलि तोते ।। ६० ।।
कोळे दिने तोते न धइलि रे कुमर ।
सिंह छुआ होइ मलु शृगाळ हस्तर ।। ६१ ।।

सम्पन्न किया । पराक्रमी हनुमान ने उन्हें लाकर फल तथा मूल दिये । ५२ भोजन समाप्त कर श्रीरघुवीर सो गये । इस समय का अब अन्य समाचार सुनो । ५३ शंकर जी ने कहा कि हे देवी पार्वती ! मृत्यु के पूर्व दैत्य ने गर्जना की । ५४ बिलंका में वह शब्द राक्षसी ने सुना । वह अपने मन में समझ गई कि मेरा पुत्र युद्ध में मारा गया । उच्च स्वर में रोती हुई वह असुर सुन्दरी समरभूमि में जा पहुँची । ५५-५६ वहाँ पर उसका पुत्र पर्वत के समान आकार वाला पड़ा था । उसे देखकर राक्षसी क्रन्दन करने लगी । हा पुत्र ! हा पुत्र ! कहती हुई वह भूमि पर गिरकर दोनों हाथों से अपनी छाती कूटने लगी । ५७-५८ वह पुत्र को गोद में लेकर रुदन करते हुए कहने लगी, अरे बेटा ! तुम मुझे अनाथ करके चले गए । ५९ मैंने तुम्हें दस मास तक गर्भ में धारण किया था । तूने मुझे अपुत्री होने का कष्ट किसलिए प्रदान किया । ६० अरे बेटा ! तुझे एक दिन भी गोद में लेकर दुलरा न सकी । तू सिंह-शावक होकर शृगाल के हाथों मारा गया । ६१ क्या करूँ ? अब मैं तुझे कहाँ पाऊँगी ?

कि करिबि पुत्र काहुँ पाइबि रे तोते ।
अनाथ करिण पुत्र छाड़ि गलु मोते ।। ६२ ।।
अनेक रोदन कला सेहि दयितुणी ।
देखिला पर्वत परे छन्ति रघुमणी ।। ६३ ।।
बोइला मो पुत्रकु ए करिछि संहार ।
उपायरे घेनिबि मुँ जीवन ताहार ।। ६४ ।।
एमन्त बिचारि मने सुरेखा असुरी ।
कपटे होइला सेहि अपूर्व सुन्दरी ।। ६५ ।।
स्वर्ग अपसरा प्राये दिशिला सुन्दर ।
अंगे आभरण कला नाना अळंकार ।। ६६ ।।
जुड़ार उपरे पुष्पगभा से खोसिला ।
मण्डळ आकारे बेणी जटाकु बाँधिला ।। ६७ ।।
सीमन्ते कुन्तळ खंजे कपाळे सिन्दूर ।
चन्दन बिन्दु ए देला तथिर उपर ।। ६८ ।।
नासा अग्रे बेसर जे बसणी खंजिला ।
कर्णरे ताटंक पत्र जोड़ा एक देला ।। ६९ ।।
दोसरि मुकुतामाळा खंजिला गळारे ।
पदक लम्बाइ देला तथिर उपरे ।। ७० ।।

बेटा ! तू मुझे अनाथ करके छोड़कर चला गया । ६२ उस दैत्य-बाला ने अनेक प्रकार से रुदन करते हुए पर्वत के ऊपर बैठे रघुश्रेष्ठ श्रीराम को देखा । ६३ वह कहने लगी कि इसी ने मेरे पुत्र का संहार किया है । अब मैं कोई उपाय करके इसके प्राण हरण करूँगी । ६४ राक्षसी सुरेखा ने इस प्रकार मन में विचार करके माया से अपूर्व सुन्दरी का रूप धारण कर लिया । ६५ वह स्वर्ग की अप्सरा के समान सुन्दर दिखने लगी । उसने अपने अंगों में नाना प्रकार के आभूषण सजा लिये । ६६ जूड़ा के ऊपर उसने फूलों का स्तवक खोंस लिया । चोटियों को मोड़कर उसने गोल जूड़ा बना लिया । बाल खींचकर माँग में व मस्तक पर सिन्दूर लगा लिया तथा उसके ऊपर चन्दन की बिन्दी लगा ली । ६७-६८ उसने नासिका में नथ और बुलाक पहन ली । कानों में झुमके पहन लिये । ६९ दोलर की मुक्ता माला गले में डाल ली और उसके ऊपर पदक लटका लिया । ७० वक्षस्थल पर दृढ़ता से कसी हुई कंचुकी, बाहुओं

कुचरे कांचला हढ़े कलाक बन्धन ।
बाहुरे जे बाजुबन्ध हस्तरे कंकण ।। ७१ ।।
दश अंगुष्ठिरे दश मुद्रिका खंजिला ।
सुझीन पतनी साढ़ी परिधान कला ।। ७२ ।।
चित्र मेघीपाट उपराण देला परे ।
बाजेणि नूपुर बळा खंजिला पयरे ।। ७३ ।।
रम्भा तहुँ दुइ गुण दिशिला सुन्दर ।
अंचल उहाड़ि चाले होइ धीर धीर ।। ७४ ।।
परवत उपरे से उठिलाक जाइँ ।
जेउँ ठारे बसिछन्ति प्रभु रघुसाइँ ।। ७५ ।।
वृक्ष मूळे शोइछन्ति प्रभु रघुबीर ।
हनुमन्त बसि धीरे चापइ पयर ।। ७६ ।।
एमन्त समये जाइ मिळिला असुरी ।
खण्डे दूरे बसि उच्चे कांदिला चतुरी ।। ७७ ।।
उच्च स्वरे कांदइ से दइव सुमरि ।
बेनि नयन रुतार बहे अश्रु बारि ।। ७८ ।।
आहा पिता भर्ता बोलि कान्दे उच्चस्वरे ।
पुणि क्षण करे सेहि दइब सुमरे ।। ७९ ।।

में बाजूबन्द और हाथों में कंकण पहन लिये । ७१ उसने दसों उँगलियों में दस अँगूठियाँ और झीनी-सी झिलमिलाती साड़ी पहन ली । ७२ ऊपर से उसने मेघश्यामल चित्रित दुपट्टा ओढ़ लिया । पैरों में झनकार करने वाले नूपुर तथा झांझरे पहन लिये । ७३ वह रम्भा से भी दो गुनी सुन्दर दिखाई दे रही थी । घूँघट की ओट करती हुई वह मन्थर गति से चल दी । ७४ वह पर्वत के ऊपर चढ़ गई जहाँ पर श्री रघुनाथ जी विराजमान थे । ७५ राघवेन्द्र प्रभु वृक्ष के नीचे शयन कर रहे थे । हनुमान जी धीरे-धीरे उनके चरण चाप रहे थे । ७६ इसी समय वह चतुर राक्षसी वहाँ पहुँचकर थोड़ी ही दूर पर बैठकर उच्च स्वर में क्रन्दन करने लगी । ७७ यह दैव का स्मरण करती हुई उच्च स्वर में रुदन कर रही थी । उसके दोनों नेत्रों से अश्रुपात हो रहा था । ७८ अरे पिताजी ! अरे स्वामी ! कहकर वह ऊँचे स्वर में क्रन्दन करती और फिर अगले क्षण में भाग्य का स्मरण करने लगती । ७९ वह कभी उठ पड़ती, कभी बैठ

उठइ बसइ पुणि गड़इ से बाळी ।
चारि दिगे अनाइण छाड़इ बोबाळी ।। ८० ।।
शोइथिले श्रीरामंक निद्रा भांगि गला ।
उठि बसिलेक बेगे कौशल्यांक बळा ।। ८१ ।।
रोदन शुभिला जाइ रामंक कर्णर ।
हनुकु चाहिंण बोइलेक रघुवीर ।। ८२ ।।
बनस्त भितरे एका कान्दुअछि किए ।
बिचारिण कार्जकर पवन तनये ।। ८३ ।।
एहा शुणि अनाइला बीर हनुमान ।
बोइला जे स्त्रि एक करुछि रोदन ।। ८४ ।।
परमा सुन्दरी सेहि अटे सुकुमारी ।
देखि लाज पाइले जे स्वर्ग अपसरी ।। ८५ ।।
देखि ताकु हनुमन्त विचारइ मने ।
काहिँ पाइँ कान्दुअछि रहि घोर बने ।। ८६ ।।
ए जुवति रमणीटि अटइ काहार ।
केते काळ बसि गढ़ि थिला बेद वर ।। ८७ ।।
ए किम्पाइ बनस्तरे आशिण पशिला ।
केबण देशरु अबा ए नारी अइला ।। ८८ ।।

जाती, कभी लोट जाती तथा चारों ओर देखकर चिल्लाने लगती थी । ८० सोए हुए श्रीराम जी की निद्रा भंग हो गयी । कौशल्यानन्दन शीघ्रत से उठकर बैठ गए । ८१ रुदन ध्वनि उनके कान में पड़ने पर रघुवी राम हनुमान की ओर देखकर बोले । ८२ जंगल के भीतर अकेले को रुदन कर रहा है । हे पवननन्दन ! समझ-बूझकर कार्य करना । ८ यह सुनकर वीर हनुमान जी ने ध्यान से देखा और कहने लगे कि एक स्त्रं रुदन कर रही है । ८४ वह सुकुमारी थी तथा अत्यधिक रूपवती थ जिसे देखकर स्वर्ग की अप्सरा भी लज्जित हो जाती । इस प्रकार व रूपसी को देखकर हनुमन्त लाल मन में विचार करने लगे कि यह घनघो जंगल में किस कारण से क्रन्दन कर रही है । ८५-८६ यह युवती किसव भार्या है । वेदज्ञ ब्रह्मा ने इसे कितनी देर बैठकर गढ़ा । ८७ कि कारण से यह आकर वन में प्रविष्ट हुई तथा पता नहीं किस देश से य नारी यहाँ आई । ८८ यह सोचकर हनुमान जी हड़बड़ी से श्रीराम

एते भाळि हनुमान गला खरतरे ।
प्रवेश होइला जाइ रामंक छामुरे ॥ ८९ ॥
बोइले भो देव शुण आहे चापधारी ।
अपूर्व रमणी एहि अत्यन्त सुन्दरी ॥ ९० ॥
जानकी समाने सेहि अटइ सुन्दर ।
तुम्भंकु ए जोग्य प्रभु रघुकुळ बीर ॥ ९१ ॥
आज्ञा देले दरशन कराइबि आणि ।
एहा शुणि हसिले से प्रभु चापपाणि ॥ ९२ ॥
बोइले रे हनुबीर रख ताकु तुहि ।
से स्त्री गोटाकु बेगे पचार तु जाइ ॥ ९३ ॥
बनस्तरे बुलु अछि होइण निरेख ।
मनकु जोगाए जेबे हनु ताकु रख ॥ ९४ ॥
शुणि हनुमान बोले जोड़ि बेनि कर ।
बनस्तरे जात मुहिं जाति रे बानर ॥ ९५ ॥
से नारीकि देव मुँ कि भाजन अटइ ।
गध मुखे अमृतर स्वाद अबा काहिं ॥ ९६ ॥
तुम्भ जोग्य अंटे प्रभु से रमणीबर ।
दासी करि रख ताकु प्रभु रघुबीर ॥ ९७ ॥
श्रीराम बोइले हनु तेमन्त नुहइ ।
आम्भ मानंकर बाबु नियम अटइ ॥ ९८ ॥

समक्ष उपस्थित होकर कहने लगे, हे धनुर्धारी प्रभु ! सुनिए । एक अपूर्व सुन्दरी नारी वहाँ उपस्थित है । ८९-९० वह जानकी जी के समान सुन्दर है और हे रघुकुल में वीर प्रभु ! वह आपके योग्य है । ९१ यदि आप आज्ञा दें तो मैं उसे लाकर दर्शन करा दूँ । यह सुनकर धनुर्धारी राम मुस्कुरा दिये । ९२ श्रीराम जी ने कहा, हे हनुमान ! तुम्हीं उसे रख लो । उस एकाकी महिला से शीघ्र ही जाकर तुम पूछो कि वह निराश्रय होकर वन में क्यों भटक रही है ? यदि तुम्हारे मन में वह जम जाए तो तुम उसे रख लो । ९३-९४ यह सुनकर हनुमान जी ने दोनों हाथ जोड़ कर कहा कि हे देव ! मैं वन में पैदा हुआ हूँ । जाति का वानर हूँ । क्या मैं उस नारी के योग्य पात्र हूँ । गधे के मुख में अमृत का क्या स्वाद ! ९५-९६ हे स्वामी ! वह श्रेष्ठ रमणी आपके ही योग्य है । हे प्रभु रघुबीर ! उसे दासी बनाकर रख लें । श्रीराम ने कहा, हे तात !

नियम कराइ अछि जनकर झिअ ।
कुळ दीप साक्षी करि छुआँ इला देह ।। ९९ ।।
जेते दिन जाए बाबु जीवन रे थिबु ।
जानकीर बिनु अन्य अंग न छुइँबु ।। १०० ।।
पचार ता जाति गोत्र काहार नन्दिनी ।
काहिं जिब एका किम्पा हेला से कामिनी ।। १०१ ।।
ए बनस्ते बसि किम्पा करइ रोदन ।
बेगे बूझिआस बाबु पवननन्दन ।। १०२ ।।
शुणि हनुमान धीरे धीरे चळि गला ।
से जुवती निकटरे प्रवेश होइला ।। १०३ ।।
पचारइ हनुमान शुण ऐ सुन्दरी ।
ए घोर बनस्ते किम्पा कान्दुरे चतुरी ।। १०४ ।।
काहुँ तू अइलु कह जिबु अबा काहिं ।
ए जुबा काळरे बने पशिलु किम्पाइँ ।। १०५ ।।
काहिं बा तोहर घर काहार तु नारी ।
केबण राजार हादे अटु तु कुमारी ।। १०६ ।।
एका होंइ करि किम्पा बनस्ते पशिलु ।
सत कह सुन्दरी गो काहुँ तू अइलु ।। १०७ ।।

ऐसा नहीं हो सकता । हम लोगों के कुछ नियम भी हैं । ९७-९८ जनक की पुत्री ने कुलदीप को साक्षी बनाकर देह को स्पर्श कराके यह प्रतिज्ञा करा ली है कि जितने दिन यह जीवन रहेगा जानकी के अंग को छोड़कर किसी अन्य स्त्री का अंग स्पर्श न करना । ९९-१०० हे तात पवनात्मज ! तुम शीघ्र ही जाकर उससे जाति-गोत्र पूछ आओ । वह किसकी पुत्री है ? कहाँ जाएगी ? वह कामिनी एकाकी कैसे बन गई ? वह इस वन में बैठी किस कारण से रो रही है ? १०१-१०२ यह सुनकर हनुमान धीरे-धीरे चलकर उस युवती के निकट जा पहुँचे । १०३ उन्होंने उससे प्रश्न किया कि हे सुन्दरी ! सुनो ! अरी चतुरे ! इस घोर जंगल में किसलिए रुदन कर रही हो ? १०४ तुम कहाँ से आई हो और कहाँ जाओगी ? इस युवावस्था में वन में किसलिए आई हो ? १०५ तुम्हारा घर कहाँ है ? तुम किसकी भार्या हो ? तुम किस राजा की राजकुमारी हो ? १०६ तुम एकाकी बनकर किस कारण से वन में उपस्थित हुई हो ? हे सुन्दरी ! तुम मुझसे सच-सच कहो कि तुम कहाँ से आई हो ? १०७ यह सुनकर सुन्दरी ने

एहा शुणि सुन्दरी जे बोलइ बचन ।
बाबू घर मोर जाण पुण्य नामे बन ।। १०८ ।।
तारका बोलिण मोर नटइ जे पिता ।
सूरसेन बोलि मोर अटे निज भ्राता ।। १०९ ।।
शत्रु आसि मो पितार राज्य ध्वंस कला ।
पिता माता भ्राता मोर समस्त माइला ।। ११० ।।
गोटि एक मात्र न रखिला से जीवने ।
तेणु एका होइ मुहिँ बूले घोर बने ।। १११ ।।
सखा सहोदर बाबु मोर केहि नाहिं ।
आउ एक कथा बाबु शुण मन देइ ।। ११२ ।।
जानकी नामरे थिला जनक नन्दिनी ।
पिता घरे सखा होइथिलुँ आम्भे बेनि ।। ११३ ।।
अजोध्या जिबाकु मुहिं खोजु अछिपथ ।
सखा सहोदर नाहिं नाहिं मोर नाथ ।। ११४ ।।
के नेइण अजोध्यारे मोतेबा छाड़िब ।
एते बोलि उच्चे कान्दे सुमरि दइब ।। ११५ ।।
कहुँ कहुँ उच्च स्वरे कान्दे घन घन ।
न कान्द न कान्द बोलि बोले हनुमान ।। ११६ ।।

कहा, हे तात ! मेरा घर पुण्य नामक वन में है। ऐसा तुम समझ लो। १०८ मेरे पिता का नाम तारका था। सूरसेन मेरा अपना भाई था। १०९ शत्रु ने आकर मेरे पिता का राज्य विध्वंस कर डाला और उसने हमारे पिता, माता, भाई आदि सबका संहार कर डाला। ११० उसने एक को भी जीवित नहीं छोड़ा। इसी से एकाकी मैं घोर वन में घूम रही हूँ। १११ हे तात ! मेरा सखा सहोदर कोई भी तो नहीं है। एक बात और भी तुम ध्यान देकर सुन लो। ११२ जनक की पुत्री, जिसका नाम जानकी था, पिता के घर में हम दोनों सहेली थीं। ११३ मैं अयोध्या जाने के लिए मार्ग खोज रही हूँ। न तो कोई मेरा सखा व बन्धु है और न ही मेरा कोई पति है। ११४ कौन मुझे लेकर अयोध्या में छोड़ देगा ? इस प्रकार कहती हुई वह उच्च स्वर में दैव का स्मरण करके रुदन करने लगी। ११५ इस प्रकार कहती हुई वह बड़े जोर से विलाप करने लगी। मत रो ! मत रो ! कहकर हनुमान उसे समझाने लगे। ११६ देवी जानकी के स्वामी श्रीराम हैं। वह रावण का बध

जानकी देखिक कान्त अटन्ति श्रीराम ।
बिलंकाकु आसिछन्ति मारिबे रावण ।। ११७ ।।
एबे सबु चिन्ता मनु छाड़सि गो माए ।
अजोध्याकु घेनि जिबे रघुकुळ राए ।। ११८ ।।
एहा शुणि से सुन्दरी रोदन छाड़िला ।
हनुमन्त आगे बेनि करकु जोड़िला ।। ११९ ।।
बोइलारे बाबु मोते अनुग्रह करि ।
दर्शन कराअ नेइ जनक कुमारी ।। १२० ।।
हनुमान बोले तु गो नुहसि आरत ।
बारता कहे मुँ जाइ रामंक अग्रत ।। १२१ ।।
एते कहि हनुमान बेगे चळि गला ।
श्रीराम अग्रते बेनि करकु जोड़िला ।। १२२ ।।
बोइला भो देव आहे शुण रघुनाथ ।
एहि स्त्री गोटि अटे जानकी संगात ।। १२३ ।।
पुण्य बने एहा घर अटे ए अनाथा ।
जानकी संगात बोलि बोले ए बनिता ।। १२४ ।।
अजोध्याकु जिबा पाइँ पथ खोजे नारी ।
एहा शुणि आनंदित हेले चापधारी ।। १२५ ।।

करने के लिए बिलंका में आए हैं। ११७ ए माँ ! अब सारी चिन्ताओं को आप मन से निकाल दें। रघुकुलनाथ श्रीराम आपको अपने साथ अयोध्या ले जाएँगे। ११८ यह सुनकर उस सुन्दरी ने रोना बन्द कर दिया। उसने हनुमान के आगे दोनों हाथ जोड़ लिये। ११९ फिर उसने कहा कि हे तात ! मेरे ऊपर दया करके मुझे लेकर जनककुमारी के दर्शन करा दो। १२० हनुमान ने कहा कि तुम दुःखी मत हो। मैं राम के समक्ष जाकर यह वार्ता दे दूं। १२१ इतना कहकर हनुमान जी शीघ्र ही श्रीराम के पास पहुँचे और उन्होंने दोनों हाथ जोड़ लिये। १२२ हनुमान जी ने कहा कि हे देव ! हे रघुनाथ ! सुनिए। यह एकाकिनी तरुणी जानकी जी की सहेली है। पुण्य वन में इसका घर है। परन्तु यह अनाथ है तथा कह रही है कि मैं वैदेही की सखी हूं। १२३-१२४ यह रमणी अयोध्या जाने के लिये मार्ग खोज रही है। ऐसा सुनकर धनुर्धारी श्रीराम प्रसन्न हो गए। १२५ उन्होंने कहा कि हे पवननन्दन !

बूझि करि कार्ज कर पवनतनय ।
गउरव करि एहि पर्वते रखाअ ॥ १२६ ॥
शुणिण हरष हेला पवन कुमर ।
श्रीरामंक पाद पद्मे कला नमस्कार ॥ १२७ ॥
से सुन्दरी निकटकु बेगे चळिगला ।
आस गो सुन्दरी श्रीरामंक आज्ञा हेळा ॥ १२८ ॥
हनुमन्त कथा शुणि उठिला सुन्दरी ।
पर्वतरे धीरे धीरे चालइ असुरी ॥ १२९ ॥
गुम्फा मध्ये रहिछन्ति श्री रघुनन्दन ।
असुरीकि पर्वतरे रखि हनुमान ॥ १३० ॥
फळ मूळ आणि ताकु खाइबाकु देला ।
आनन्दरे से असुरी बसिण भुंजिला ॥ १३१ ॥

सुरेखा हनुमानंकु गिलि सहस्रशिरा रावण पाशरे उद्‌गार करिबा, हनुमान द्वारा राणी मानंक नासा-कर्ण-छेदन

एथुअन्ते जाहा हेला शुण गो पार्वती ।
सन्ध्याबेळ गड़ि गला होइगला राति ॥ १ ॥

समझ-बूझ करके कार्य करो और इसे आदर के साथ इसी पर्वत पर रखो । १२६ यह सुनकर पवनकुमार को प्रसन्नता हुई । उन्होंने श्रीराम के चरण-कमलों में प्रणाम किया और फिर उस सुन्दरी के निकट शीघ्रता से पहुँचकर कहने लगे कि हे सुन्दरी ! आओ ! श्रीराम की आज्ञा हो गई है । १२७-१२८ असुर सुन्दरी हनुमान की बातों को सुनकर खड़ी हो गई तथा पर्वत पर धीरे-धीरे चलने लगी । १२९ श्रीरघुनन्दन पर्वत की गुफा में थे । उस स्त्री को हनुमान जी ने पर्वत पर ठहरा दिया तथा खाने के लिए उसे फल-मूल लाकर दिये जिन्हें उस सुन्दरी ने बैठकर खा लिया । १३०-१३१

सुरेखा द्वारा हनुमान को निगलकर सहस्रशिरा रावण के समीप उगलना एवं हनुमान द्वारा रानियों का कर्ण-नासाच्छेदन

हे पार्वती ! इसके पश्चात् जो हुआ उसे सुनो ! सन्ध्या का समय निकल जाने पर रात हो गई । १ कोदण्डधारी राम ने नित्य-कर्म

सन्ध्या नित्य कर्म सारि से कोदण्डधर।
विश्राम कलेक जाइ पर्वत उपर ॥ २ ॥
पार्वतींकु कहु छन्ति प्रभु त्रिलोचन।
रात्तरे असुरी बसि करे अनुमान ॥ ३ ॥
केमन्ते रामंकु आजि गिळिबि भाबिला।
मोर पुत्र कान्तकु ए श्रीराम माइला ॥ ४ ॥
प्रथमे गिळिबि मुहिँ हनुमन्त बीर।
एमन्ते असुरी मने कलाक विचार ॥ ५ ॥
हनुमन्त बीरकु से पाशकु डाकिला।
गुपत करिण सेहि हनुकु कहिला ॥ ६ ॥
तोते देखि करि बड़ शरधा मोहर।
मोहर संगते तुहि रसक्रीड़ा कर ॥ ७ ॥
नबजुबा नारी मुहि बळिला मो आश।
हनुमन्त बीर मोते न कर निराश ॥ ८ ॥
तू मोते निराश जेबे करिबु मारुति।
शाप मुहिँ देबि तोते पवन संतति ॥ ९ ॥
शुणिण हनुर अंग कम्पे थर हर।
बिलंका असुरी एहि जाणि हनुबीर ॥ १० ॥
बोइला कोमळ वाक्य शुण गो तरुणी।
सीता संगातुणी तुम्भे आम्भ ठाकुराणी ॥ ११ ॥

सन्ध्यादि से निवृत्त होकर पर्वत पर जाकर विश्राम किया। २ भगवान त्रिलोचन ने पार्वती से कहा कि रात्रि में वह राक्षसी बैठकर विचार करती रही कि किस प्रकार आज मैं राम को लील जाऊँ, क्योंकि इसी ने मेरे पुत्र तथा स्वामी का बध किया है। ३-४ मैं पहले पराक्रमी हनुमान को निगलूँगी, इस प्रकार का विचार राक्षसी ने अपने मन में किया। ५ उसने वीर हनुमान को निकट बुलाकर चुपके से कहा। ६ तुम्हें देखकर मुझे बड़ा प्रेम हो गया है। तुम मेरे संग में कामक्रीडा करो। ७ मैं नवयौवना नारी हूँ। मेरी इच्छा हो आई है। पराक्रमी हनुमान! मुझे निराश मत करो। ८ हे मारुति! यदि तू मुझे निराश करेगा तो पवनात्मज! मैं तुझे श्राप दे दूँगी। ९ हनुमान का शरीर यह सुनकर थर-थर काँपने लगा। वह जान गए कि यह बिलंका की राक्षसी है। १० वह मीठे शब्दों में बोले, हे तरुणी! सुनो। तुम सीताजी की सखी हमारी

अनीति बचन तुम्भे कहुछ केसने ।
सुणिण सन्देह हादे हेउछि मो मने ।। २२ ।।
जानकी संगात नेहु अटु तु असुरी ।
कपटरे आसिअछु माया रूप धरि ।। १३ ।।
शुणिण असुरी अंग कम्पे थरहर ।
जाणिला गुपत कथा निश्चे हनुबीर ।। १४ ।।
एते भाळि दइतुणी पाटि विस्तारिला ।
हनुकु धइला बळे गर्भकु क्षेपिला ।। १५ ।।
तेड़े बड़ बीरकु से असुरी गिळिला ।
तत्क्षणे से पर्वतरु बेगे पळाइला ।। १६ ।।
बिलंका नगरे जाइ मिळिला असुरी ।
जेउँ स्थाने बिजे करिछन्ति दण्डधारी ।। १७ ।।
राजांकर आगे से असुरी बोलइ ।
मोहर कान्तकु मारि थिला रघुसाइँ ।। १८ ।।
आबर माइला शिशु पुत्रकु मोहर ।
तु रामकु मारि न पारिलु नृपवर ।। १९ ।।
माया रूप धरिणमुँ से ठाबकु गलि ।
हनुमन्त बीरकुमुँ गर्भरे भरिलि ।। २० ।।

मालकिन हो । ११ तुम कैसी अनीति की बातें कर रही हो । यह सुनकर मेरे मन में बहुत सन्देह हो रहा है । १२ तू जानकी जी की सखी न होकर राक्षसी है और छल से मायावी रूप धारण कर यहाँ आई है । यह सुनकर राक्षसी का शरीर थर-थर काँपने लगा । पराक्रमी हनुमान निश्चय ही गुप्त भेद जान गए । १३-१४ यह सोचकर दैत्यरमणी ने मुख फैलाया और बलपूर्वक हनुमान को पकड़कर पेट में डाल लिया । १५ इतने बड़े वीर को राक्षसी निगल कर उसी क्षण शीघ्रता से पर्वत से भाग गई । १६ बिलंका पुर में राक्षसी पहुँच गई जहाँ पर राजा विराजमान था । १७ वह राक्षसी राजा के समक्ष बोली कि मेरे स्वामी को रघुनाथ ने मारा था । १८ और उसने मेरे शिशु पुत्र को भी मार डाला था । नृपश्रेष्ठ ! तुम राम को नहीं मार पाए । १९ माया-रूप धारण करके मैं वहाँ पर गई तथा वीर हनुमान को मैंने गर्भ में भर लिया । २० अकेला राम उस पर्वत पर रह गया है । नृपश्रेष्ठ यदि

एका राम रहिला से पर्वत उपर।
परिले रामंकु जाइँ मार नृपवर ॥ २१ ॥
एहा शुणि नृपवर हरष होइला।
हनुमन्तकु तु जेबे गिळिलु बोइला ॥ २२ ॥
एबे श्रीरामंकु मोर किछि भय नाहिं।
कालि निश्चे मारिबइँ रघुकुळ साइँ ॥ २३ ॥
उद्गारि तु बानर कु देखा आजि मोते।
बिलंका राज्यरे मंत्री करिबइँ तोते ॥ २४ ॥
एहा शुणि से असुरी बेगे उद्गारिला।
हनुमन्त बीर तार गर्भरु पड़िला ॥ २५ ॥
लाळे जरजर होइ पड़िला भूमिरे।
चेतना पाइला हनुवीर घड़िक रे ॥ २६ ॥
राम राम बोलि मने मने सुमरिण।
मलाप्राये पड़िला से अञ्जनानन्दन ॥ २७ ॥
दइत्य बोइला ए जे श्रीरामर चर।
मारिबाकु आसिथिला बिलंका नगर ॥ २८ ॥
हनुमन्त मला राम केमन्ते मरिब।
एड़े बड़ जश मोर केमन्ते होइब ॥ २९ ॥
एहा शुणि जोद्धा माने प्रतिज्ञा से कले।
किम्पाइ भो देव एते भालुछ बोइले ॥ ३० ॥

हो सके तो राम को जाकर मार दो। २१ यह सुनकर राजा प्रसन्न हो गया और कहने लगा कि जब तुमने हनुमान को निगल लिया है तो अब मुझे श्रीराम का कुछ भी भय नहीं है। कल निश्चय ही रघुकुल के स्वामी को मार डालूंगा। २२-२३ आज तू वमन करके मुझे वानर को दिखा दे। तुझे बिलंका राज्य का मंत्री बना दूंगा। २४ यह सुनकर उस राक्षसी ने जोर से वमन किया। पराक्रमी हनुमान उसके गर्भ से निकले। २५ वह लाल-लाल तथा जर्जरित होकर भूमि पर पड़े थे। उन्हें एक घड़ी के बाद होश आया। २६ मन ही मन राम-राम का स्मरण करते हुए अंजना के पुत्र हनुमान मृतप्राय पड़े थे। २७ दैत्य बोला कि यह जो श्रीराम का दूत है मारने के लिए बिलंका पुर में आया था। २८ हनुमान मर गया। राम किस प्रकार मरेगा। इतना बड़ा यश मुझे कैसे प्राप्त होगा। २९ यह सुनकर योद्धागण प्रतिज्ञा करते हुए बोले कि हे देव!

दिअ बेगे आज्ञा देव मारिबु श्रीराम ।
एका जणकु किम्पाइँ डरु तु राजन ॥ ३१ ॥
शुणिण त्रिशिरा दैत्य सभारे बोलइ ।
रामंकु इतर तुम्भे न मण होकहि ॥ ३२ ॥
जे मारिछि लंकापुरे विश्रवाकुमर ।
वाळिकि माइला पुणि मारि एक शर ॥ ३३ ॥
ताहाकु इतर प्राये न मण राजन ।
अमर अटइ एहि बीर हनुमान ॥ ३४ ॥
राजन बोइले बेगे एथु घेनि जाअ ।
भितर पुररे नेइ एहा कु पकाअ ॥ ३५ ॥
तिरण प्रमाणे मांस एहार जे काटि ।
राउत माहुन्त सबु खाअ एहा बाण्टि ॥ ३६ ॥
एहा शुणि असुरे जे बेगे चळि गले ।
हनुकु भीतर पुरे नेइ पकाइले ॥ ३७ ॥
बिलंका नगरी मध्ये चहळ पड़िला ।
के बोलइ बाबू हनुमन्त बीर मला ॥ ३८ ॥
के बोइला हनुकु जे सुरेखा गिळिला ।
के बोइला नरपति छामु रे जे देला ॥ ३९ ॥

आप इतनी चिन्ता किसलिए कर रहे हैं ? ३० देव ! आप शीघ्र ही आज्ञा दें तो हम श्रीराम को मार दें। राजन् ! आप एक व्यक्ति से किसलिए भय करते हैं ? ३१ यह सुनकर दैत्य त्रिशिरा सभा में बोला कि आप लोग कोई भी राम को अन्य कुछ न समझें। ३२ जिसने लंकापुरी में विश्रवानन्दन को मार डाला। एक बाण मारकर फिर बालि का वध कर दिया। ३३ राजन् ! आप उसे अन्य के समान न समझें। यह पराक्रमी हनुमान अमर है। ३४ राजा ने कहा कि इसे शीघ्र ले जाकर भीतर महल में डाल दो। ३५ तिल-तिल प्रमाण में इसका मांस काटकर सैनिक व योद्धागण सब मिलकर बाँटकर खा जाओ। ३६ यह सुनकर राक्षसगण तीव्रता से चले गये और उन्होंने हनुमान को भीतरी महल में ले जाकर छोड़ दिया। ३७ बिलंका नगरी में खलबली मच गई। कोई कहता था कि भाई ! पराक्रमी हनुमान मर गया। ३८ कोई बोला कि हनुमान को सुरेखा निगल गई। कोई कहने लगा कि उसने राजा के सामने जाकर उसे समर्पित कर दिया। ३९ कोई कहता था कि चलो उसे चलकर

के बोलइ चाल चाल देखिबा जे जाइ ।
के बोलइ से बानर केमन्त अटइ ॥ ४० ॥
एते बोलि नग्र लोके समस्ते धाइँले ।
हनुकु देखिबा पाइँ भितरे पशिले ॥ ४१ ॥
राणी माने देखिबाकु होइले बाहार ।
सातश पंचाश राणी सेहि राजांकर ॥ ४२ ॥
डबुरा डबुरि होइ समस्ते धावन्ति ।
हनुमन्त देखिबाकु भितरे पशन्ति ॥ ४३ ॥
देखिले जे पड़ि अछि पर्वत आकार ।
के बोलइ संगात लो ए हिटि बानर ॥ ४४ ॥
के बोलइ मारिबाकु एथें आसिथिला ।
के बोलइ आम्भ मानंकर शत्रुमला ॥ ४५ ॥
के बोलइ काट काट माउँस एहार ।
के बोलइ वेगे जाइ आण लो कुठार ॥ ४६ ॥
एते बोलि राणीमाने बेढ़िलेक जाइँ ।
हनुमन्तर माउँस काटिबार पाइँ ॥ ४७ ॥
कुठार पतिकि माने धरिले हस्तरे ।
हनुकु बेढ़ि बसिले चारि पाख्शरे ॥ ४८ ॥
एहा देखि हनुमन्त उठिण बसिला ।
असुरींकि चाहिण जे अलप हसिला ॥ ४९ ॥

देखें और कोई कह रहा था कि वह वानर कैसा है ? ४० इतना कहकर सभी नगरनिवासी दौड़ पड़े और हनुमान को देखने के लिए भीतर घुस गए । ४१ उस राजा की सात सौ पचास रानियाँ थीं, वह भी सभी देखने को बाहर निकल पड़ीं । ४२ धक्का-मुक्की करती हुई सब दौड़ रही थीं । हनुमन्त को देखने के लिए वह लोग भीतर घुस रही थीं । ४३ उन्होंने उसे पर्वत के आकार में पड़े हुए देखा । कोई कह रही थी कि अरी सखी ! यह वानर है । ४४ किसी ने कहा कि यह यहाँ मारने के लिए आया था । कोई बोली कि हम लोगों का शत्रु मर गया । ४५ कोई कहने लगी कि इसका मांस काटो तथा किसी ने कहा, अरी सखी ! शीघ्र जाकर कुठार ले आ । ४६ इतना कहकर हनुमान का मांस काटने के लिए रानियों ने उन्हें घेर लिया । ४७ वह सभी कुठार और हँसिये हाथों में लेकर हनुमान को चारों ओर से घेरकर बैठ गईं । ४८ यह देखकर हनुमान उठकर बैठ गए

कुठारकु छड़ाइण धइला हस्तरे ।
लांगुड़ छन्दिला नेइ सबुरि अंगरे ॥ ५० ॥
दशबिंश पाँचशत छन्दि पकाइला ।
लांगुड़रे बाँधि गोटि गोटि कचाड़िला ॥ ५१ ॥
काहाकु छन्दिण सेहि जाकिला काखरे ।
केबण नारीर नाक काटइ कुठारे ॥ ५२ ॥
कार नाक काटे पुणि कार काटे गाल ।
कार कुच काटे सेहि पवनर बाळ ॥ ५३ ॥
काहा चुटि काटि ताकु सात बेण्टि कला ।
सबुंकरि नासा हनु काटि पकाइला ॥ ५४ ॥
राणीमानंकु से हनुकला छारखार ।
बाळकंकु कचाड़इ पवन कुमर ॥ ५५ ॥
वृद्धलोक मानंकु से धरिण मारइ ।
बाहा स्फोट देइ हनु पुरकु भाँगइ ॥ ५६ ॥
एहि परि छारखार करि घर द्वार ।
बिलंकारु हनुमन्त होइला बाहार ॥ ५७ ॥
प्रचण्ड गिरिकु बोलि गला हनुबीर ।
शुण गो पार्वती देवी बोइले शंकर ॥ ५८ ॥

तथा राक्षस-बालाओं की ओर देखकर थोड़ा मुस्कुराए । ४९ उन्होंने कुठार छीनकर हाथ में पकड़ लिया । अपनी पूँछ से लेकर सबके अंगों को कस लिया । ५० दस, बीस, सौ, पचास को तो उन्होने पूँछ में लपेट कर पटक दिया; फिर पूँछ में बाँधकर एक-एक को पछाड़ने लगे । ५१ किसी को पकड़कर काँख में दबा लिया तथा किसी रानी की नाक कुठार से काटने लगे । ५२ पवननन्दन किसी की नाक किसी के गाल और के वक्षस्थल को काटने लगे । ५३ किसी की चोटी काटकर उसे कोड़ा बना लेते । उन्होंने नाक तो सभी की काट गिराई । ५४ हनुमान जी ने रानियों को क्षत-विक्षत कर डाला । पवननन्दन बालकों को पछाड़ रहे थे । ५५ बूढ़े लोगों को पकड़कर मार डालते तथा भुजाओं के आघात से वह महल को तोड़ रहे थे । ५६ इस प्रकार घर-द्वार छिन्न-भिन्न करके हनुमानजी बिलंका से बाहर निकले । ५७ वह प्रचण्ड पर्वत की ओर चल दिये । तब शंकर जी कहने लगे, हे देवी पार्वती ! सुनो । ५८ इधर श्रीराम हनुमान

हनुकु न देखि एणे माळन्ति श्रीराम ।
न देखिले असुरीर जहुँ वर्ण चिन्ह ॥ ५९ ॥
मायारूप धरि आसि थिला जे असुरी ।
हनुकु गिळिण चळिगला निज पुरी ॥ ६० ॥
भो धर्म देवता तुम्भे हनुकु उद्धार ।
जेमन्ते हे प्रमाद न पाउ हनुमोर ॥ ६१ ॥
एते बोटि रघुमणि चाहिंछन्ति बाट ।
प्रवेश होइला जाइँ अञ्जनार छाट ॥ ६२ ॥
पाद तळे पड़ि हनुमन्त जे जणाइ ।
असुरी जे छद्मरे आसिला गोसाइँ ॥ ६३ ॥
जानकी संगात सेहु बोलिण बोइला ।
प्रीति रस मांगि मोते कपटे गिळिला ॥ ६४ ॥
बान्ती कला दइतुणी नृपति छामुरे ।
मला प्राय पड़िली मुँ असुर आगरे ॥ ६५ ॥
खाइबे बोलिण मोते भितरकु नेले ।
कुठारे राणी माने मोते हाणुथिले ॥ ६६ ॥
सेहि कुठारकु मुहिं घेनिलि छड़ाइ ।
राणीमानंकर नासा काटिली गोसाइँ ॥ ६७ ॥
स्तन सहितेण मुहिं कलइ छेदन ।
पळाइ अइलि देव पुण रघुनान ॥ ६८ ॥

को न देखकर सोचने लगे । उन्हें कहीं भी राक्षसी का वर्ण-चिह्न भी नहीं दिखा । ५९ वह राक्षसी माया-रूप धारण करके आई थी और हनुमान को खाकर अपनी पुरी में वापस लौट गई । ६० हे धर्मदेव ! तुम हनुमान का उद्धार करो, जिससे मेरा हनुमान प्रमाद को न प्राप्त हो । ६१ इस प्रकार कहकर रघुवंश में मणि के समान श्रीराम रास्ता देखने लगे । तभी अंजनीनन्दन हनुमान वहाँ प्रविष्ट हुए । ६२ चरणों में दण्डवत करते हुए हनुमान ने कहा, हे नाथ ! जानकी की सखी बोलकर वह राक्षसी छद्म वेष में आई थी, उसने मुझसे रसक्रीडा की याचना करके मुझे कपट से निगल लिया । ६३-६४ उस राक्षसी ने राजा के समक्ष उल्टी कर दी । मैं मृत के समान असुर के सामने गिर पड़ा । ६५ इसे खाएँगे कहकर मुझे भीतर ले गये । रानियाँ कुठार से मुझे काटने लगीं । ६६ वही कुठार मैंने छीन लिया । हे नाथ ! मैंने रानियों की नाक काट डाली । ६७ मैंने

शुणि करि रघुनाथ आनन्द होइले ।
धन्य हनुमन्त बोलि बहु प्रशंसिले ॥ ६९ ॥
ए घोर बनस्ते मोर सखा केहि नाहिँ ।
तुही सिना मोहर जे प्रिय बन्धु भाइ ॥ ७० ॥
बिना बरतने अछु संगरे गोड़ाइ ।
हनुमन्त बोले शुण प्रभु रघुसाइँ ॥ ७१ ॥
मुहिं तोर सेवकर अटइ सेवक ।
सृष्ट स्थिति प्रळयर करता तु एक ॥ ७२ ॥
तो मृत्यर भृत्य मुँ जे अटे रघुवीर ।
ए पशु जम्मरु मोते करसि उद्धार ॥ ७३ ॥
सेहि दिन रात्र पाहि होइला प्रभात ।
पूर्व दिगुँ उदे हेले प्रभु छाया कान्त ॥ ७४ ॥
स्नान करिबाकु उठिगले रघुनाथ ।
फल आणिबाकु गला पवनर सुत ॥ ७५ ॥
स्नान सारि राम पितृ तरपण कले ।
परवत परे बसि शर सलखिले ॥ ७६ ॥

उनके स्तनों को छेदन कर दिया और फिर हे रघुनाथ ! मैं भाग आया । ६८ यह सुनते ही रघुनाथ जी प्रसन्न हो गये । 'हनुमान ! तुम धन्य हो' कहकर उन्होंने अनेक प्रकार से उनकी प्रशंसा की । ६९ इस घोर वनप्रान्त में मेरा कोई मित्र नहीं है । तुम्हीं तो केवल मेरे प्रिय मित्र और भाई हो । ७० बिना स्वार्थ के तुम मेरे संग पीछे लगे हो । हनुमान ने कहा, हे रघुनाथजी ! सुनिये । ७१ मैं तो आपके दास का दास हूँ । सृष्टि, स्थिति और प्रलय के करनेवाले तो केवल एक आप ही हैं । ७२ हे रघुवीर ! मैं तो आपके चाकर का भी चाकर हूँ । इस पशु-जीवन से मुझे उबार लें । ७३ उस दिन रात्रि समाप्त हो गई और प्रभात हो गया । पूर्व दिशा से छायाकान्त भगवान भास्कर उदय हो गये । ७४ रघुनाथ जी स्नान करने के लिए उठ गये । पवनपुत्र हनुमान जी फल लाने के लिए चले गये । ७५ स्नान करके श्रीराम ने पितरों को तर्पण किया तथा पर्वत पर बैठकर बाण सम्हालने लगे । ७६

कम्बु दैत्यर मायारूप धारण, श्रीरामंकु घेनि जिबा, रामंक उद्धारओ बिलंकावहन

शुण हो गउरि एहि रामंक चरित्त ।
अतिसय गहन ए रामायण ग्रन्थ ॥ १ ॥
ए अपूर्व आख्यानकु जे करे श्रवण ।
अथवा लभइ सेहि परम कारण ॥ २ ॥
जय जय हिंगुला गो जय माहेश्वरी ।
झंकड़वासिनी तुहि साक्षाते गउरी ॥ ३ ॥
सिंहबाहिनी तु घोर महिषमर्दिनी ।
जय जय दुर्गे मागो शिवंक घरणी ॥ ४ ॥
रामायण ग्रन्थ अटे सामवेदुँ जात ।
शुणि शुणाइले नर हुअइ मुकत ॥ ५ ॥
रामायण शुणि नरे भवु हुअ पार ।
रामायण शुणि नरे दुस्तरु निस्तर ॥ ६ ॥
रामायण वृत्तान्तकु निरन्तरे घोष ।
रामंक चरणे नित्ये सिद्धेश्वर दास ॥ ७ ॥
एथु अनन्तरे पुणि पुछन्ति पार्वती ।
बुझाइण कह मोते देव शूलमति ॥ ८ ॥

कम्बु दैत्य का माया-रूप धारण करना, राम का हरण, राम का उद्धार तथा बिलंका-दहन

हे गौरी ! यह राम का चरित्र सुनो । यह रामायण ग्रन्थ अत्यन्त गहन है । जो इस अद्भुत कथा को श्रवण करता है उसे परम कारण अर्थात् ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है । १-२ हिंगुला देवी ! तुम्हारी जय हो । माहेश्वरी देवी ! तुम्हारी जय हो । तुम झंकड़ में निवास करनेवाली साक्षात् गौरी हो । ३ सिंह की सवारी करनेवाली दुर्धर्ष महिषासुर का नाश करनेवाली हो । शिव-गृहिणी माँ दुर्गे ! तुम्हारी जय हो, जय हो । ४ यह रामायण ग्रन्थ सामवेद से उत्पन्न हुआ है । इसे सुनने-सुनाने से मनुष्य मुक्त हो जाता है । ५ हे मानव ! रामायण का श्रवण करके संसार से पार हो जाओ तथा दुस्तर भवजाल से त्राण प्राप्त करो । ६ रामायण के वृत्तान्त का निरन्तर चिन्तन करो । सिद्धेश्वरदास श्रीराम के चरणों का नित्य दास है । ७ इसके बाद पार्वती ने पूछा । हे देव शूलधर ! आप

राणींकर नाक काटि गाला हनुमान।
केवण विचार पुण कलाक राजन ॥ ९ ॥
ईश्वर बोइले हनु पळाइ अइला।
राजार भुवने महागोल उपुजिला ॥ १० ॥
शुणि अति क्रोध भरे बिलंका राजन।
कुम्भकार चक्र प्राये बुलाए नयन ॥ ११ ॥
बोइला से धरि न पारिल से बानर।
आजि ए गढ़रे पशि कला क्षार खार ॥ १२ ॥
के आजि रामकु मारि मोते देब आणि।
कपि हस्ते पराभव पाइले मो राणी ॥ १३ ॥
राउत माहुन्त समस्तंकु डकाइला।
के रामकु आजि मारि देबरे बोइला ॥ १४ ॥
राम बानरकु आजि मारिब जे जाइ।
आजि ए गढ़ रे ताकु मंत्री करिबइँ ॥ १५ ॥
शुणिण राउतमाने हरण होइले।
श्रीरामंकु मारिबाकु प्रतिज्ञा से कले ॥ १६ ॥
एका जणकरे केते करिब समर।
ए घान्ति जुद्धरे निश्चे करिबा संहार ॥ १७ ॥

मुझसे समझाकर कहें। ८ रानियों की नाक काटकर हनुमान चले गये। फिर राजा ने क्या विचार किया? ९ शंकरजी बोले कि हनुमान के भाग आने पर राजा के महल में बड़ी खलबली मच गई। १० यह जानकर बिलंकेश्वर अत्यंत क्रुद्ध होकर कुम्हार के चक्के के समान आँखें तरेरने लगा। ११ उसने कहा कि उस वानर को पकड़ नहीं सके। आज उसने दुर्ग में घुसकर विप्लव मचा दिया। १२ आज कौन राम को मारकर ला देगा? मेरी रानियाँ आज वानर के हाथों पराजित हो गईं। १३ वीर योद्धा, सैनिकों व सेना-नायकों को बुलाकर उसने कहा कि आज राम का वध कौन करेगा? १४ जो कोई आज जाकर राम तथा वानर को मारेगा, आज ही उसे इस गढ़ का मंत्री बना दूँगा। १५ यह सुनकर वीर योद्धा-नायक प्रसन्न हो गये तथा वह श्रीराम का वध करने की प्रतिज्ञा करने लगे। १६ अकेला व्यक्ति कितना युद्ध करेगा। इस घोर संग्राम में निश्चय ही उसका संहार कर देंगे। १७ यह सुनकर राजा अत्यंत

शुणिण नृपति अति हरषित हेला।
विचारु विचारु रात्र बहुत होइला ॥ १८ ॥
अन्त:पुर भितरकु बिजे कला राये।
विळासिनी परिवारी खटिले सभिएँ ॥ १९ ॥
श्रीरामंक कथा राजा विचारे मन रे।
अकारण शत्रु आसि हेला मोर पुरे ॥ २० ॥
कम्बु नामे एक दैत्य ताहार भणजा।
पाशकु डकाइ ताकु बोले महाराजा ॥ २१ ॥
मारि कि पारिबु उपायरे रघुबीर।
श्रीरामंकु माइले करिबि मंत्रीवर ॥ २२ ॥
शुणि कम्बु दैत्य मने हरषित होइ।
बोइला उपाय करि मारिबि गोसाइँ ॥ २३ ॥
कालिर भितरे निश्चे शत्रु संहारिबि।
श्रीराम हनुकु कालि भितरे मारिबि ॥ २४ ॥
शुणि अति आनंदित होइला राजन।
कम्बु दैत्य हस्ते राजा देला खिलिपान ॥ २५ ॥
जेबे आज मोते मारि देबु रघुबीर।
बिलंका कटके मंत्री होइबु कुमर ॥ २६ ॥

आनन्दित हुआ। विचार करते-करते बहुत रात्रि व्यतीत हो गई। १८ राजा अन्त:पुर के भीतर पहुँच गया। सभी विलासिनी परिचारिकाएँ सेवा में जुट गईं। १९ राजा श्रीराम के विषय में ही मन में विचार करता रहा। बिना किसी कारण के ही राम मेरे नगर में आकर मेरा शत्रु बन गया। २० महाराज ने कम्बु नाम के दैत्य को, जो उसका भाञ्जा था, अपने निकट बुलाकर कहा कि क्या तुम यत्न करके रघुवीर को मार पाओगे? श्रीराम का वध करने पर तुझे उत्तम मंत्री बना दूंगा। २१-२२ यह सुनकर कम्बु दैत्य मन में प्रसन्न होकर बोला। हे नाथ! मैं उपाय करके मार डालूंगा। २३ कल तक निश्चित रूप से शत्रु का संहार कर दूंगा। श्रीराम तथा हनुमान को कल के भीतर ही मार डालूंगा। २४ सुनते ही राजा अत्यंत प्रसन्न हुआ तथा उसने कम्बु दैत्य के हाथ में पान का बीड़ा दे दिया। २५ यदि तुम आज मेरे लिए रघुवीर को मार दोगे तो बेटे! बिलंका सैन्य के मंत्री बन जाओगे। २६ ऐसा सुनकर कम्बु दैत्य मन

शुणि कम्बु दैत्य मने हरषित होइ ।
रात्र प्रभातरु उठि दइत चळइ ।। २७ ।।
ब्रह्मचारी वेष धरि अइला असुर ।
बिलंका नगर मध्यु होइला बाहार ।। २८ ।।
से प्रचण्ड पर्वतकु दैत्य चळि गला ।
श्रीरामंक सन्निधिरे जाइण मिळिला ।। २९ ।।
देखि रघुनाथ ताकु गउरव कले ।
नमस्कार करि आसनरे बसाइले ।। ३० ।।
कर जोड़ि रघुनाथ कहन्ति बचन ।
केवण देशरु विजे कल हे आपण ।। ३१ ।।
असुर बोइला काशी क्षेत्रे आम्भ घर ।
सानकालु ब्रह्मचारी दीक्षाजे आम्भर ।। ३२ ।।
गंगा गया वाराणसी तीर्थ भ्रमि भ्रमि ।
चारि दिगे बुलि आम्भे हेलु पथश्रमी ।। ३३ ।।
तोर घर कह बाबु के बण राज्यर ।
राजपुत्र परायक दिशुछु सुन्दर ।। ३४ ।।
ए घोर बनरे तुहि बुलुछु किम्पाइँ ।
श्रीराम बोइले घर अजोध्या अटइ ।। ३५ ।।
दशरथ राजा पुत्र राम नाम मोर ।
निश्चय बधिबि जहिं देखिबि असुर ।। ३६ ।।

में प्रसन्न होकर रात्रि में बड़े भोर ही उठकर चल दिया । २७ बिलंका नगर से वह दैत्य ब्रह्मचारी का रूप धारण करके बाहर निकला । २८ वह दैत्य चलकर प्रचण्ड पर्वत पर श्रीराम के समीप जा पहुँचा । २९ रघुनाथ जी ने उसे देखकर उसका आदर किया । उन्होंने नमस्कार करके उसे आसन पर बैठाया । ३० रघुनाथ जी ने हाथ जोड़कर कहा कि आप किस देश से पधारे हैं ? ३१ असुर ने उत्तर दिया कि काशी क्षेत्र में हमारा घर है । हमने बचपन से ही ब्रह्मचर्य की दीक्षा ले रखी है । ३२ गंगा, गया, वाराणसी आदि चारों दिशाओं में तीर्थभ्रमण करने के लिए हम पदयात्री बने हैं । ३३ भाई ! तुम्हारा घर किस राज्य में है ? यह हमें बताओ । तुम तो राजपुत्र के समान सुन्दर दिख रहे हो । ३४ तुम इस घोर जंगल में क्यों घूम रहे हो ? श्रीराम ने कहा कि मेरा घर अयोध्या में है । ३५ मैं राजा दशरथ का पुत्र हूँ । मेरा नाम राम है । मैं जहाँ असुर को

बिलंका देशर नृप अटे बळियार ।
एहाकु मारिबि इच्छा बळिछि मोहर ॥ ३७ ॥
असुर बोइला तुम विष्णु अवतार ।
दइतंकु मारिबाकु जनम तोहर ॥ ३८ ॥
देवतांकु निस्तारिल मारिण रावण ।
रवितले जश कीर्ति रखिलु श्रीराम ॥ ३९ ॥
मार एहि दइतकु शुभ तोर हेउ ।
तोहर हस्तरे एहि दैत्य नाश पाउ ॥ ४० ॥
श्रीराम बोइले मोते करन्तु कल्याण ।
जेमन्त जुद्धरे मुहिं मारइ रावण ॥ ४१ ॥
असुर बोइला शुण शुण रघुपति ।
आम्भ ठोर अछि एक अद्भुत विभूति ॥ ४२ ॥
से विभुति रहि थाए जाहार कापाळे ।
ताकु जिणि पारिबाकु नाहिं रवि तळे ॥ ४३ ॥
एहा शुणि रघुनाथ हरष होइले ।
असुर हातरु माया विभूति घेनिले ॥ ४४ ॥
बीर हनुमन्त अछि पर्वत उपरे ।
फळ मूळ खोजु अछि बनस्त भितरे ॥ ४५ ॥

देखता हूँ, निश्चय ही उसका बध कर देता हूँ । ३६ बिलंका नगर का राजा अत्यंत बलवान है । इसका वध करने की मेरी इच्छा हुई है । ३७ असुर बोला कि तुम तो विष्णु के अवतार हो । तुम्हारा जन्म ही दैत्यों को मारने के लिए हुआ है । ३८ तुमने रावण को मार कर देबताओं का उद्धार किया । हे श्रीराम ! तुमने सूर्य के नीचे अपना यश स्थापित किया । ३९ इस दैत्य का वध करो । तुम्हारा कल्याण हो । तुम्हारे हाथों यह दैत्य विनाश को प्राप्त हो । ४० श्रीराम ने कहा कि मुझे आशीर्वाद दें, जिससे युद्ध में मैं रावण को मार सकूँ । ४१ असुर बोला, हे रघुपति ! सुनो । हमारे पास एक दिव्य विभूति है । ४२ वह विभूति जिसके मस्तक पर रहती है उसे जीतने के लिए सूर्य के नीचे अर्थात् भूमण्डल पर कोई भी नहीं है । ४३ यह सुनकर रघुनाथ जी प्रसन्न हो गये । उन्होंने असुर के हाथ से माया-विभूति ग्रहण कर ली । ४४ महावीर हनुमान पर्वत के ऊपर वन में फल-मूल खोजने गये थे । ४५ उस

श्रीरामंक कपाळरे देला से लगाइ ।
भोळे मोह होइ गले रघुकुळ साइँ ।। ४६ ।।
सबु कथा पासेरिले से कोदण्डधर ।
असुर धइला हस्ते श्रीरामंक कर ।। ४७ ।।
पर्वतरु श्रीरामंकु दैत्य घेनि गला ।
बिलंका भुवने जाइँ प्रवेश होइला ।। ४८ ।।
भोळ होइ रामचन्द्र करन्ति गमन ।
आस्थानर तळे जाइ मिळिले श्रीराम ।। ४९ ।।
आस्थान उपरे बसि अछि दैत्य साइँ ।
दैत्य उभा कराइला श्रीरामंकु नेइ ।। ५० ।।
राक्षस बोइला एहि अटे रघुवीर ।
कपटे आणिलि देख आहे नृपबर ।। ५१ ।।
श्रीरामंकु देखि राजा हरष होइला ।
धन्य भणजा मोर शत्रु कु आणिला ।। ५२ ।।
आगुं पेशिथिले न मरन्ता मंत्रीवर ।
एबे एहि श्रीरामर काट बेगे शिर ।। ५३ ।।
राउत माहुन्त पाए कारंकु अनाइ ।
आज्ञा देला श्रीरामंक मुण्ड काट नेइ ।। ५४ ।।

दैत्य ने श्रीराम के मस्तक पर वह विभूति लगा दी जिससे रघुकुल के स्वामी सम्मोहित हो गये । ४६ कोदण्डधारी राम सभी बातें भूल गए । असुर ने श्रीराम का हाथ पकड़ लिया । ४७ वह दैत्य श्रीराम को लेकर पर्वत से चल दिया और बिलंका नगर में जा पहुँचा । ४८ रामचन्द्रजी सम्मोहित अवस्था में चले जा रहे थे । वह सिंहासन के समीप जा पहुँचे । ४९ सिंहासन पर असुरराज विराजमान था । कम्बु दैत्य ने श्रीराम को ले जाकर खड़ा कर दिया । ५० राक्षस ने कहा कि यह ही रघुवीर है । हे नृपश्रेष्ठ ! देखिए । मैं इसे छल से ले आया हूँ । ५१ श्रीराम को देखकर राजा प्रसन्न होकर बोला, अरे भाञ्जे ! तुम धन्य हो । मेरे शत्रु को ले आये हो । ५२ आगे भेजने से श्रेष्ठ मंत्री की मृत्यु न होती । अब शीघ्र ही इस राम का शिर काट डालो । ५३ वीर योद्धाओं, पयकारों की ओर देखकर उसने श्रीराम के शिर काटने की आज्ञा दी । ५४ श्रीराम सम्मोहित होकर खड़े थे ।

भोळ होइ रामचन्द्र होइ छन्ति उभा।
धनुशर पाउअछि बेनि भुजे शोभा ॥ ५५ ॥
शस्त्र धरि आस्थानरे मिळिले असुर।
श्रीरामंकु मारिबाकु करन्ति बिचार ॥ ५६ ॥
एहादेखि देवगणे भय रे कम्पन्ति।
केवण उपाय एबे करिबा भाळन्ति ॥ ५७ ॥
जेबेनिकि श्रीरामंकु मारिब असुर।
स्वर्गे पशि गोटि गोटि करिब संहार ॥ ५८ ॥
शारदाकु चाहिँ आज्ञा देले बेदवर।
आगो मात बेगे जाअ बिलंका नगर ॥ ५९ ॥
जेमन्ते रामंकु दैतपति न मारइ।
बिलंकारे श्रीरामंकु रक्षा कर जाइ ॥ ६० ॥
ब्रह्मा वाक्ये से शारदादेवी चळिगले।
बिलंका कटके जाइँ प्रवेश होइले ॥ ६१ ॥
सभा जाक सबु मोह कले देवी जाइँ।
श्रीरामंकु देखि सर्वे हाहाकार होइ ॥ ६२ ॥
के बोलइ ए सुन्दर पुरुष न मार।
के बोले पशिला किम्पा कटके आम्भर ॥ ६३ ॥

उनकी दोनों भुजाओं में धनुष और बाण शोभा पा रहे थे। ५५ राक्षस लोग शस्त्र लेकर सिंहासन के निकट आ गये तथा श्रीराम को मारने के लिए विचार करने लगे। ५६ यह देखकर देवगण भय से काँपने लगे। वह सोचने लगे कि अब क्या उपाय किया जाय। ५७ यदि असुर श्रीराम का वध कर देगा तो फिर स्वर्ग में घुसकर एक-एक का संहार कर डालेगा। ५८ सरस्वती की ओर देखकर ब्रह्माजी ने आज्ञा दी कि माता! तुम शीघ्र ही बिलंका नगर को प्रस्थान करो। ५९ जिससे दैत्यराज श्रीराम का वध न कर सके। बिलंका में जाकर श्रीराम की रक्षा करो। ६० ब्रह्मा जी की आज्ञानुसार सरस्वती देवी चलकर बिलंका दुर्ग में प्रविष्ट हुई। ६१ उसने वहाँ पहुँचकर सभा में सबको सम्मोहित कर दिया। श्रीराम को देखकर सभा में हाहाकार मच गया। ६२ किसी ने कहा कि इस सुन्दर व्यक्ति को मत मारो। कोई बोला कि इसने किसलिए हमारे दुर्ग में प्रवेश किया? किसी ने कहा, हे धर्मदेव! आकर इसकी रक्षा करो और कोई बोला,

के बोले हो धर्मदेव आसि रक्षा कर।
के बोलइ भो राजन एहाकु न मार ॥ ६४ ॥
एते बोलि नग्रलोके कले हाहाकार।
श्रीरामंकु चाहिं पुणि बोलइ असुर ॥ ६५ ॥
एहा मुण्ड काटिले बा हेब केउँ जश।
ए सुन्दर पुरुषकु न कर बिनाश ॥ ६६ ॥
मृत्यु जोग थिवारू मो कटके पशिला।
मंत्री कि मोहर मूर्ख पणरे माइला ॥ ६७ ॥
न मारिण एहाकु जे रख बन्दीघरे।
किछि काळ बचि रहिथाउ ए नगरे ॥ ६८ ॥
आज्ञा पाइ श्रीरामंकु दैत्य घेनिगले।
बन्दी घरे नेइ ताकु बन्दी कराइले ॥ ६९ ॥
चारि पाशे सहस्रक बीर जगु आळी।
दुइ लक्ष हस्ती एकु एक महाबळी ॥ ७० ॥
एथु अनन्तरे देवी पार्वती गो शुण।
पर्वत उपरे रहिथिला हनुमान ॥ ७१ ॥
फळ मूळ घेनि बीर बनस्तु अइला।
श्रीराम नाहान्ति सेहि स्थानरे देखिला ॥ ७२ ॥
व्यस्त होइ बीर चारि पारुशे लोड़इ।
देखिला नाहान्ति पर्वतरे रघुसाइँ ॥ ७३ ॥

हे राजन् ! इसे आप न मारें। ६३-६४ इस प्रकार कहकर नगरनिवासी जन हाहाकार करने लगे। श्रीराम को देखकर असुर ने फिर कहा कि इसका शिर काट लेने से कौन सा यश होगा ? इस सुन्दर पुरुष का विनाश मत करो। ६५-६६ मृत्यु योग होने के कारण ही यह मेरे दुर्ग में आ घुसा। मेरे मंत्री को तो इसने मूर्खता से मार डाला। ६७ इसका वध न करके इसे बन्दीघर में रखो। कुछ काल के लिए यह इस नगर में बचा रहे। ६८ आज्ञा पाकर दैत्य लोग श्रीराम को ले गये तथा उन्हें ले जाकर जेलखाने में क़ैद कर दिया। ६९ चारों ओर एक हज़ार वीर चौकीदार तथा दो लाख एक से एक महाबली हाथी पहरे पर लगा दिये गए। ७० हे देवी। सुनो ! इसके पश्चात् हनुमान, जो पर्वत के ऊपर थे, फल-मूल लेकर जंगल से आ गये। उन्होंने श्रीराम को उस स्थान पर नहीं देखा। ७१-७२ व्यग्र होकर

श्रीराम श्रीराम बोलि डाके उच्चस्वरे।
केणे अछ रघुनाथ देखा दिअ बारे॥ ७४ ॥
खोजि खोजि हनुमन्त निरस्त होइला।
पर्वत शिखरे एक स्थानरे बसिला॥ ७५ ॥
मने मने बिचारइ बीर हनुमान।
मोते छाड़ि केणे गल हे रघुनन्दन॥ ७६ ॥
आहे प्रभु केउँ दोष करियिलि मुहिँ।
छाड़ि करि गल नाथ मोते त न कहि॥ ७७ ॥
पुणि हनु से पर्वत शिखरे खोजिला।
तहिँ मध्ये श्रीरामंकु खोजि न पाइला॥ ७८ ॥
बहुत खोजिण तहिँ अंजनार बळा।
श्रीरामंकु न पाइण साहस उड़िला॥ ७९ ॥
भो राम! भो राम! बोलि रोदन करइ।
केणे गल नाथ मोते छाड़ि एका होइ॥ ८० ॥
बिचारइ राम पर्वतरे बसिथिले।
एहिक्षणि थिले केउँ देशे चालिगले॥ ८१ ॥
किबा अजोध्याकु चालिगले रघुबीर।
कि अबा पशिले राम बिलंका भितर॥ ८२ ॥

महावीर जी चारों ओर खोजने लगे। उन्होंने रघुकुल के स्वामी को पर्वत पर नहीं देखा। ७३ श्रीराम! श्रीराम! कहकर वह ऊँचे स्वर में पुकारने लगे। हे रघुनाथ जी! आप कहाँ है? एक बार दर्शन दे दो। ७४ खोज-खोजकर हनुमान जी थक गये। वह पर्वत के शिखर पर एक स्थान पर बैठ गए। ७५ पराक्रमी हनुमान जी मन ही मन विचार करते हुए कहने लगे कि हे रघुनन्दन! मुझे छोड़कर आप कहाँ चले गए? ७६ हे भगवान! मैंने क्या दोष किया था, जो आप मुझसे बिना कहे ही मुझे छोड़कर चले गए। ७७ हनुमान ने फिर उस पर्वत-शिखर पर खोज की परन्तु वहाँ कहीं श्रीराम को नहीं खोज पाए। ७८ आंजनेय ने वहाँ बहुत खोजने पर भी जब श्रीराम को न पाया तो उनका साहस उड़ गया। ७९ हे राम! हे राम! कहकर वह रुदन करने लगे। हे नाथ! आप मुझे छोड़कर एकाकी कहाँ चले गये? ८० वह विचार करने लगे कि श्रीराम पर्वत पर बैठे थे। अभी तो थे, अब किस जगह चले गये? ८१ कहीं रघुवीर अयोध्या तो नहीं चले गए अथवा बिलका में

काहिँ जिबि श्रीरामंकु कहिं बा खोजिबि ।
काहार मुखरु मुहिँ सन्देश पाइबि ।। ८३ ।।
एमन्त माळइ मने मने बीर मणि ।
ए समये आकाशरु हेला देव वाणी ।। ८४ ।।
कि चिन्ता करुछ बसि पवन कुमर ।
रामंकु कपटे घेनि गलेणि असुर ।। ८५ ।।
बिलंकारु श्रीरामंकु बन्दी कले नेइ ।
रामंकु उद्धार कर एथु बेगे जाइ ।। ८६ ।।
देवकार्ज कर बाबू बिळम्ब न कर ।
चमत्कार हेला शुणि पवन कुमर ।। ८७ ।।
आकुळ होइण हनु मने बिचारइ ।
श्रीरामंकु छाड़ि करि गलिमुँ किम्पाइँ ।
पोड़ु पेड़ु मोर ए जीवने कार्य नाहिँ ।
केमन्ते भेटिब आज श्रीरामंकु मुहिँ ।। ८८ ।।
बिलंका नृपति तांकु लुचाइला कांहि ।
स्वर्ग मर्त्य पाताळे कि रखि अछि सेहि ।। ८९ ।।
एते भाळि अति दुःखे पवन कुमर ।
बिलंका पुरकु बीर होइला बाहार ।। ९० ।।

प्रविष्ट हो गए । ८२ कहाँ जाऊँ ? श्रीराम को कहाँ खोजूँ ? मुझे किसके मुख से उनका सन्देश मिलेगा ? ८३ वीर शिरोमणि हनुमान जी मन ही मन इसी प्रकार विचार कर रहे थे, तभी आकाशवाणी हुई । ८४ हे पवनपुत्र ! बैठकर क्या सोच रहे हो ? असुर श्रीराम को छल से ले गये हैं । ८५ उन्होंने बिलंका में ले जाकर श्रीराम को बन्दी बना लिया है । अब तुम शीघ्र जाकर श्रीराम का उद्धार करो । ८६ हे तात ! देवताओं का काम करो ! देर मत करो । यह सुनकर पवनकुमार को आश्चर्य हुआ । ८७ व्याकुल होकर हनुमान जी मन में विचार करने लगे कि श्रीराम को छोड़कर मैं गया ही क्यों ? मेरे इस जीवन के रहने की कोई आवश्यकता नहीं है । मैं आज किस प्रकार श्रीराम से भेंट कर सकता हूँ ? ८८ बिलंका नरेश ने उन्हें कहाँ छिपाया ? उसने पता नहीं स्वर्गलोक, मृत्युलोक अथवा पाताललोक में उन्हें रखा हो । ८९ इस प्रकार सोचकर पराक्रमी पवनपुत्र हनुमान बड़े दुःखी होकर बिलंका पुर के लिए निकल पड़े । ९० मार्ग में ब्राह्मण का वेश

बाटरे ब्राह्मण बेष धरि हनुमान।
धीरे धीरे बिलंका कु करइ गमन ॥ ९१ ॥
अत्यन्त दरिद्र देह दिशे असुन्दर।
णिपारे पाचिला बाळ उड़े फर फर ॥ ९२ ॥
भंगाछता खण्डे घेनि अछि बीर मणि।
बेनि पारुशरे झुलु अछि भिक्षामुणि ॥ ९३ ॥
बिलंका भितरे हनु पशिलाक जाइँ।
घरे घरे भिक्षा माँगि रामंकु खोजइ ॥ ९४ ॥
घरेक न छाड़ि बीर बिलंका नगरे।
श्रीरामंकु खोजइ से निर्भय चिन्तरे ॥ ९५ ॥
असुर असुरीमाने होन्ति कुहा कुही।
ए पुरुष गोटि एथें अइला किम्पाइँ ॥ ९६ ॥
के बोलइ मारु मारु नृपति रखिला।
के बोलइ ए कटके किम्पाइँ पशिला ॥ ९७ ॥
एहा शुणि हनुमन्त तांकु पचारइ।
से दुष्ट श्रीराम रूप केमन्ते दिशइ ॥ ९८ ॥
केउँ ठारे अछि सेहि देखिबा ताहाकु।
किम्पाइँ रखिछि राजा न मारि रामंकु ॥ ९९ ॥

धारण करके हनुमान जी धीरे-धीरे बिलंका की ओर चल पड़े। ९१ उनका शरीर अत्यन्त क्षीण तथा भद्दा दिखाई दे रहा था। चोटी पर पके हुए बाल फरफर करके उड़ रहे थे। ९२ वीरमणि हनुमान ने हाथ में एक टूटा छाता ले रखा था। दोनों ओर भिक्षा की थैलियाँ लटक रही थीं। ९३ हनुमान जी बिलंकापुर के भीतर जा पहुँचे। वह घर-घर भिक्षा माँगते हुए श्रीराम को खोजने लगे। ९४ वीर ने बिलंकानगर का कोई भी घर नहीं छोड़ा। वह निर्भीक चित्त से श्रीराम की खोज करते रहे। ९५ राक्षस और राक्षसियाँ आपस में बातें कर रही थीं कि वह पुरुष अकेले ही यहाँ किसलिए आया? ९६ किसी ने कहा कि राजा ने मारते-मारते उसे छोड़ दिया। कोई कहने लगा कि वह इस कटक में किसलिए प्रविष्ट हुआ? ९७ यह सुनकर हनुमान ने उनसे पूछा कि उस दुष्ट श्रीराम का रूप देखने में कैसा है? ९८ वह किस जगह पर है, मैं भी उसे देखूँ। राम को न मारकर राजा ने उसे छोड़ क्यों दिया? ९९

ए नगरे गोटाकु से हाल होळि कला ।
बन्दीरे पड़िला एबे निश्चय से मला ॥ १०० ॥
कांहिँ केउँ ठारे अछि पुणि पचारइ ।
गढ़र भितर लोके ताकु देले कहि ॥ १०१ ॥
शुणि बीर हनुमन्त पशिला भितरे ।
देखिला नृपति बसि अछि आस्थानरे ॥ १०२ ॥
सेठारे असुर बळ पुर्ण होइछन्ति ।
श्रीरामंक कथा बसि विचार करन्ति ॥ १०३ ॥
ब्राह्मण वेषरे सबु शुणिला मारुति ।
मने बिचारिला एथें छन्ति रघुपति ॥ १०४ ॥
तहुँ पुणि हनुमन्त भितरकु गला ।
नृपतिर राणी हंस पुररे पशिला ॥ १०५ ॥
श्रीरामंकु खोजइ से पशि कपटरे ।
हनुमन्त भिक्षा माँगुअछि घरे घरे ॥ १०६ ॥
बिलंका नगरे सबु खोजि खोजिगला ।
श्रीरामंक बन्दी घरे प्रवेश होइला ॥ १०७ ॥
देखिला असुर छन्ति चारि पारुशरे ।
विजे करिघन्ति राम ताहांक मध्यरे ॥ १०८ ॥

इस नगर में उसने अकेले हलकम्प मचा दिया। अब तो जेल में पड़ा-पड़ा निश्चित रूप से मर जाएगा। १०० उन्होंने फिर पूछा कि वह कहाँ और किस जगह पर है? वह दुर्ग के भीतर है, इस प्रकार लोगों ने उनसे बताया। १०१ सुनते ही पराक्रमी हनुमान भीतर घुसे तथा उन्होंने राजा को सिंहासन पर बैठे हुए देखा। १०२ वहाँ पर असुररक्षक दल भरा पड़ा था। वह सब बैठे हुए श्रीराम के विषय में ही चर्चा कर रहे थे। १०३ ब्राह्मण-वेषधारी हनुमान जी ने सब कुछ सुन लिया। उन्होंने मन में विचार किया कि रघुनाथ जी यहीं पर हैं। १०४ फिर वहाँ से हनुमान भीतर गये। राजरानियों के महल में वह घुस गये। १०५ वह छल से घुसकर श्रीराम की खोज कर रहे थे तथा घर-घर जाकर भिक्षा माँग रहे थे। १०६ सम्पूर्ण बिलंका नगर उन्होंने खोज डाला। तब श्रीराम के बन्दीगृह में उन्होंने प्रवेश किया। १०७ उन्होंने चारों ओर राक्षसों को देखा। उन्हीं के बीच में श्रीराम विराजमान थे। १०८

असुरंक सन्निधाने मिळि कपिराण ।
सकळ दैत्यंकु वीर करइ कल्याण ॥ १०९ ॥
असुरे बोइले काहुँ अइले हे द्विज ।
कल्याण करन्तु वेगे मरु रघुराज ॥ ११० ॥
पुणि हनुमन्त देलापछकु अनाइँ ।
देखिला अछन्ति तहिँ रघुकुळ साइँ ॥ १११ ॥
विभूति लागिछि श्रीरामंक कपाळरे ।
एहा देखि हनुमन्त मनरे बिचारे ॥ ११२ ॥
अय्यरे असुर धरि आणिल श्रीराम ।
एहि क्षणि तुम्भे माने होइब निधन ॥ ११३ ॥
धन्य धन्य रघुनाथ कौशल्यार बळा ।
दैत्यंक मायारे पड़ि हेल मति भोळा ॥ ११४ ॥
केमन्ते मुँ श्रीरामंक करिबि उद्धार ।
असुरंकु चाहिँ पुणि बोले हनुवीर ॥ ११५ ॥
एहि परा आम्भ मंत्रीकि मारिला ।
एहि कटकरे परा उपद्रव कला ॥ ११६ ॥
एते कहि श्रीरामंक अंगे मारि कर ।
बोइला असुर हाते मरिबुरे बीर ॥ ११७ ॥

कपिराज हनुमान राक्षसों के निकट पहुँच गये । वीर बजरंगी सभी राक्षसों को आशीर्वाद देते जाते थे । १०९ राक्षसों ने पूछा, हे ब्राह्मण ! तुम कहाँ से आए हो ? तुम आशीर्वाद दो, जिससे शीघ्र ही रघुराज राम मृत्यु को प्राप्त हो । ११० यह सुनकर हनुमान जी ने पीछे की ओर देखा । वहाँ उन्होंने रघुकुल के स्वामी श्रीराम को देखा । १११ श्रीराम के मस्तक पर विभूति लगी थी । यह देखकर हनुमान जी मन में विचार करने लगे । ११२ अरे असुर ! धन्य हो । श्रीराम को पकड़ लाये । इसी क्षण तुम लोगों की मृत्यु हो जाएगी । ११३ कौशल्यानन्दन रघुनाथ जी धन्य हो । राक्षसों के छल में पड़कर बुद्धि से सम्मोहित हो गये । ११४ मैं किस प्रकार से श्रीराम का उद्धार करूँ ? पराक्रमी हनुमान ने असुरों की ओर ताककर कहा । ११५ इसी ने तो हमारे मंत्री का वध किया है । इसी ने दुर्ग में उपद्रव मचाया है । ११६ इतना कहकर श्रीराम के शरीर पर हाथ दे मारा और कहा, अरे वीर ! असुर के हाथों मरेगा । ११७ श्रीरामचन्द्र के मस्तक पर जो विभूति लगी थी उसे

श्रीरामचन्द्रंक शिरे थिला जे बिभूति ।
कपटरे पोछि पकाइला ता मारुति ॥ ११८ ॥
जहुँ बिभूतिकि पोछि पकाइला बीर ।
चेतना पाइले प्रभु रघुकुळ वर ॥ ११९ ॥
देखिलेक ए असुर भुवन अटइ ।
बन्दीघरे देखि चमत्कार रघुसाइँ ॥ १२० ॥
काहिँ परबत काहिँ हनुमन्त वीर ।
मुहिँ रहि अछि आसि असुर मन्दिर ॥ १२१ ॥
एते भाळि श्रीराम जे कोदण्ड धइले ।
सुतीक्षण नाराच धनु गुणे पुराइले ॥ १२२ ॥
बिन्धिलेक से नाराच कोपे रघुबीर ।
रक्षाकला लोकंकर काटिलेक शिर ॥ १२३ ॥
जेतेक असुर श्रीरामंकु जगिथिले ।
एका वाणकरे राम काटि पकाइले ॥ १२४ ॥
उबुरा जेतेक आउ थिलेक असुर ।
मुण्ड धरि मोड़िला से पवन कुमर ॥ १२५ ॥
रामंकु बोइला तुम्भे एड़े कर्म कल ।
ए मायावी असुरंक माया रे पड़िल ॥ १२६ ॥
एते बोलि श्रीरामंकु पिठिरे बसाइ ।
बिलंकारु हनुमन्त बाहार हुअइ ॥ १२७ ॥

मारुती ने छल से पोंछ डाला । ११८ जब वीर ने विभूति पोंछ डाली तब रघुकुल में श्रेष्ठ प्रभु राम को होश आया । ११९ उन्होंने देखा कि यह राक्षस का महल है । बन्दीघर देखकर रघुनाथ जी को आश्चर्य हुआ । १२० कहाँ पर्वत है तथा वीर हनुमान कहाँ है ? मैं तो आकर राक्षस के घर में पड़ा हूँ । १२१ यह सोचकर श्रीराम ने कोदण्ड धारण करके तीक्ष्ण बाण उसकी प्रत्यंचा पर चढ़ाया । १२२ रघुवीर ने वह बाण क्रुद्ध होकर सन्धान किया और रक्षाकारी लोगों के शिर काट डाले । १२३ जितने भी राक्षस श्रीराम की रखवाली कर रहे थे उन्हें राम ने एक ही बाण से काट गिराया । १२४ बचे हुए जितने और राक्षस थे, पवनपुत्र ने उनके शिर पकड़कर मरोड़ दिए । १२५ वह राम से बोले कि आपने ऐसा कार्य किया है कि आप मायावी राक्षसों की माया में पड़ गए । १२६ इतना कहकर श्रीराम को पीठ पर बैठा कर हनुमन्तलाल बिलंका से बाहर हो गये । १२७ बिलंका नगर में बड़ा हल्ला मच गया कि

महागोळ जात हेला बिलंका नगरे ।
वानर पळाए घेनि रामंक संगरे ।। १२८ ।।
एहा शुणि बेगे धाएँ नृपति नन्दन ।
दुइ शत भुजे धनु धरिण बहन ।। १२९ ।।
रेरे कार करि आगे मिळिलाक आसि ।
धनु धरि करि शर बिन्धइ आकर्षि ।। १३० ।।
लक्ष लक्ष बाण बिन्धे नृपति कुमर ।
चारि पाखे बेढ़ि गले बिलंका असुर ।। १३१ ।।
वीर सस्त्र घेनि सैन्य आसे कुम्भासुर ।
पाँच कोटि सैन्यघेनि आसे नृपवर ।। १३२ ।।
बतिश सहस्त्र चारि लक्ष दण्ड छत्र ।
चउद सहस्त्र एक लक्ष पाट छत्र ।। १३३ ।।
बाट ओगाळिला जाइँ बिलंका ईश्वर ।
आज्ञा देले श्रीरामंकु बेगे जाइ मार ।। १३४ ।।
शुणिण राउत माने तुरिते धाइँले ।
श्रीरामंक उपरकु तुहाइ बिन्धिले ।। १३५ ।।
हनुकु कहिले देव रघुकुळ बीर ।
एहि स्थाने रहि आम्भे करिबा समर ।। १३६ ।।
शुणि हनुमन्त तहिँ रहे स्थिर होइ ।
पदगामी होइण से रघुकुळ साइँ ।। १३७ ।।

वानर राम को साथ में लेकर भाग गया । १२८ यह सुनकर राजा का पुत्र शीघ्र ही दो सौ भुजाओं में धनुष लेकर वेग से दौड़ पड़ा । १२९ अरे रे ! कहते हुए वह आगे आकर मिला । वह धनुष धारण करके खींच कर बाण चलाने लगा । १३० राजपुत्र लाख-लाख बाण छोड़ रहा था । बिलंका के राक्षस चारों ओर से घिर आए । १३१ एक सहस्त्र वीर सैनिकों को लेकर कुम्भासुर आ गया तथा नृपश्रेष्ठ बिलंकेश्वर पाँच करोड़ सेना लेकर आया । १३२ चार लाख बत्तीस हजार दण्ड-छत्र थे । एक लाख चौदह हजार पाट-छत्र थे । १३३ बिलंकेश्वर ने आगे जाकर बाट रोक ली तथा श्रीराम को शीघ्र जाकर मार डालने की आज्ञा दी । १३४ यह सुनकर वीर योद्धा तुरन्त दौड़ पड़े तथा श्रीराम के ऊपर साध-साध कर प्रहार करने लगे । १३५ रघुकुल में वीर प्रभु राम ने हनुमान से कहा कि हम लोग इसी स्थान पर रहकर संग्राम करेंगे । १३६ यह सुनकर

धनुगुणे तीक्ष्ण बाण जोचि रघुवीर ।
असुरंक उपरकु करन्ति प्रहार ॥ १३८ ॥
जेते छत्रधर थिले रामंकु बेढ़िले ।
मध्ये रहि रघुनाथ अदृश्य होइले ॥ १३९ ॥
क्रोधरे कतुरी बाण बिन्धि रघुमणि ।
जेते छत्र थिला सबु पकाइले हाणि ॥ १४० ॥
कम्बु दैत्य ओगाळिला श्रीरामंकु जाइँ ।
द्वादश सहस्र शर बिन्धिला निठाइ ॥ १४१ ॥
तिनिबाणे राम सबु काटि पकाइले ।
पाञ्च बाणे पुणि तार धनुकु काटिले ॥ १४२ ॥
ज्वाळावळी बाण विन्धि प्रभु रघुवीर ।
बेनि खण्ड करि काटि पकाइले शिर ॥ १४३ ॥
मुण्ड छिण्डि महीपरे पड़िला दइत्य ।
शत शिरा धाइँ लाक घेनि असिपत्र ॥ १४४ ॥
दुइ शत भुजे धनु आकर्षि धाइँला ।
एका बेळे से दइत्य बाणवृष्टि कला ॥ १४५ ॥
ज्वाळावळी बाण पुणि बिन्धि रघुवीर ।
बाणाघाते मेदिनी कि कले अन्धकार ॥ १४६ ॥

हनुमान वहीं स्थिर हो गए। रघुकुल के नाथ भी पैरों पर चलनेवाले पद-यात्री बन गए। १३७ रघुवीर धनुष की प्रत्यञ्चा पर तीक्ष्ण बाण चढ़ाकर असुरों पर प्रहार करने लगे। १३८ जितने छत्रधारी राम को घेरे हुए थे, उनके बीच रहकर राम भी अदृश्य हो गए। १३९ रघुमणि ने क्रुद्ध होकर कर्तुरी बाण चलाकर जितने छत्र थे उन सबको काट गिराया। १४० कम्बु दैत्य ने जाकर श्रीराम को अवरुद्ध कर दिया। उसने ताक लगाकर बारह हजार बाण छोड़ दिये। १४१ श्रीराम ने तीन बाणों से उन सबको काट-गिराया और फिर पाँच बाणों से उसके धनुष को काट दिया। १४२ प्रभु रघुवीर ने ज्वालावली बाण छोड़कर उसका शिर दो टुकड़ों में करके काट गिराया। १४३ शिर कट जाने से दैत्य पृथ्वी पर गिर पड़ा। तभी शतशिरा तलवार लेकर दौड़ा। १४४ वह दो सौ भुजाओं में धनुष खींचकर दौड़ा। उस दैत्य ने एकबारगी बाणों की वर्षा कर दी। फिर रघुवीर ने ज्वालावली बाण संधान कर उसके प्रहार से पृथ्वी को अन्धकार पूर्ण कर दिया। १४५-१४६

संग्राम भूमिरे जेते बीर गणथिले ।
पर कि आपणा बोलि बारि न पारिले ॥ १४७ ॥
आपणा आपणा मध्ये हणाहणि होन्ति ।
कुड़कुड़ होइ दैत्य समरे पड़न्ति ॥ १४८ ॥
मृत्यु शब पड़िलाक पर्वत आकार ।
बिलंका दाण्डरे बहि गला रक्त धार ॥ १४९ ॥
श्रीरामंक संगे हनुमन्त बीर थिला ।
शतशिरा आगरे से जाइण मिळिला ॥ १५० ॥
धाइँ जाइ हनुमन्त कन्धरे बसइ ।
बज्रबिधा गोटाए प्रहार कलानेइ ॥ १५१ ॥
घड़िएक अचेतन असुर होइला ।
हनुमन्त उपरकु बाणेक बिन्धिला ॥ १५२ ॥
बज्र सम बाण गोटा बिन्धिला असुर ।
तार तेजे न्यून हेले देव दिबाकर ॥ १५३ ॥
हनुमन्त उपरकु आसन्ते से धाइँ ।
दुइ हाते धइला से कपिकुळ साइँ ॥ १५४ ॥
फिंगि देला पड़िला से असुर उपरे ।
पक्षी प्राय हनुमान उड़िला शुन्यरे ॥ १५५ ॥

समरभूमि में जितने भी पराक्रमी लोग थे वह अपने पराये में भेद नहीं कर पाये । १४७ आपस में ही मारधाड़ होने लगी । दैत्य क्षत-विक्षत होकर युद्धस्थल में गिरने लगे । १४८ मरी हुई लाशों का ढेर पहाड़-सा लग गया । बिलंकापुर के मार्ग में रक्त की धारा बहने लगी । १४९ श्रीराम के साथ पराक्रमी हनुमान थे । वह आगे जाकर शतशिरा से भिड़ गए । १५० हनुमान जी दौड़कर कन्धे पर जा बैठे और उन्होंने वज्र के समान एक घूंसा मारा । १५१ राक्षस एक घड़ी के लिए अचेत हो गया । फिर उसने हनुमान पर एक बाण चला दिया । १५२ असुर ने वज्र के समान एक बाण छोड़ा जिसके तेज से भगवान् सूर्य का तेज कम पड़ गया । १५३ अपने ऊपर आते हुए उस बाण को कपिकुलनाथ बजरंगी ने दौड़कर दोनों हाथों से पकड़ लिया । १५४ फेंक देने पर वह बाण राक्षस के ऊपर जा गिरा । हनुमान जी पक्षी के समान आकाश में उड़ गए । १५५ महावीर ने अपने मस्तक से ब्रह्माग्नि उत्पन्न की और उसी

कपाळरु ब्रह्मअग्नि जात कला बीर ।
से अनळे पोड़ि देला बिलंका नगर ।। १५६ ।।
ए समये पवनास्त्र बिन्धिले श्रीराम ।
अणचास मुर्तिधरि बहिला पवन ।। १५७ ।।
पवन सहाय पाइ अनळ जळिला ।
बिलंका नगर जाक सकळ दहिला ।। १५८ ।।
उवास पाचेरी अट्टाळिका जे जगती ।
देउळ मण्डप अंगणार चउकति ।। १५९ ।।
राणी हंस पुरे अग्नि लागिलाक जाइ ।
प्रबळ अनळ शिखा गगने उठइ ।। १६० ।।
देखिण सहस्त्र शिरा नृपति धाइँला ।
रथ रे सकळ कुटम्बकु पुराइला ।। १६१ ।।
गगन मार्गरे रथ रखिला से नेइ ।
हनुमान श्रीरामंकु पीठिरे बसाइ ।। १६२ ।।
दुइ हाते अग्नि धरि पवन कुमर ।
बिलंका नगर पोड़ि कला क्षारखार ।। १६३ ।।
से नगर मध्ये जेते घर द्वार थिला ।
सबु घरे हनुमन्त अग्नि लगाइला ।। १६४ ।।
बिलंकार चारि पाखे बेढ़ाइ लांगुळ ।
गोटि एक न छाड़िला अंजनार बाळ ।। १६५ ।।

अग्नि से बिलंका नगर जला डाला । १५६ इसी समय श्रीराम ने पवनास्त्र छोड़ दिया । उनचास मूर्ति धारण करके वायु बहने लगी । १५७ पवन की सहायता पाकर आग जलने लगी जिससे सम्पूर्ण बिलंका नगर जल गया । १५८ ओसारे छालदीवारी, अट्टालिकाएँ, चबूतरे, मंदिर, मण्डप, आँगन के चारों ओर से आग जाकर रनिवास में पहुँच गई । प्रचण्ड अग्निशिखा आकाश में उठ रही थी । १५९-१६० देखते ही राजा सहस्त्रशिरा दौड़ा । उसने सभी कुटुम्बियों को रथ में भर लिया । १६१ उसने आकाश-मार्ग से रथ ले जाकर ऊपर रख दिया । पवनपुत्र हनुमान ने श्रीराम को पीठ पर बैठा कर दोनों हाथों में अग्नि लेकर बिलंका नगरी को जलाकर क्षार-क्षार कर डाला । १६२-१६३ उस नगर के बीच जितने भी घर-द्वार थे उन सभी घरों में हनुमान ने आग लगा दी । १६४ उन्होंने अपनी पूँछ फैला कर बिलंका नगर को चारों ओर से घेर लिया ।

स्त्री पुरुष केहि तहुँ जाइ न पारिले ।
अग्नि मध्ये पड़ि छटपट होइ मले ॥ १६६ ॥
अनळ भितरे पशि हनुमन्त वीर ।
असुरंक संगतरे करइ समर ॥ १६७ ॥
महागोळ लगाइला बिलंका देशरे ।
मलु मलु बोलि शब्द शुभे निरन्तरे ॥ १६८ ॥
के बोलइ आलो बाप के बोलइ भाइ ।
के बोलइ एबे बाप पोड़ि मलि मुहिं ॥ १६९ ॥
केहु पळाइ न पारि अग्निरे पड़िला ।
धन लोभी होइ केहि अबा पोड़ि मला ॥ १७० ॥
के पुत्रकु लोभ करि भितरे पशिला ।
पुत्र मला आपे मला आसि न पारिला ॥ १७१ ॥
अनेक असुर पोड़ि मले बिलंकारे ।
श्रीरामंकु घेनि हनु उड़इ शुन्यरे ॥ १७२ ॥
पर्वत उपरे बीर मिळिलाक जाइ ।
बिलंकारे घरे घरे लागि अछि जुइ ॥ १७३ ॥
रथघेनि नरपति गगने रहिला ।
तेड़े बड़ नगरकु अनळ दहिला ॥ १७४ ॥

आंजनेय ने किसी एक को भी नहीं छोड़ा । १६५ स्त्री-पुरुष कोई भी वहाँ से जा नहीं पाए । आग में पड़कर छटपटाकर मर गए । १६६ पराक्रमी हनुमान आग के भीतर घुसकर राक्षसों के साथ युद्ध करने लगे । १६७ उन्होंने बिलंका प्रदेश में महान अनर्थ उत्पन्न कर दिया । मर गया ! मर गया ! की ध्वनि निरन्तर सुनाई पड़ रही थी । १६८ कोई अरे बाप, कोई अरे भाई कह रहा था । कोई बोल रहा था कि अरे बाप रे ! हम तो जल मरे । १६९ कोई भाग न पाने के कारण आग में गिर गया । कोई धन के लोभ में जलकर मर गया । १७० कोई सन्तान के लोभ के कारण भीतर घुसा । पुत्र भी मर गया । स्वयं भी मर गया । निकल नहीं पाया । १७१ बिलंका में अनेक राक्षस जलकर मर गए । हनुमान श्रीराम को लेकर आकाश में उड़ रहे थे । १७२ महावीर पर्वत पर जा पहुँचे । बिलंका में घर-घर आग लगी हुई थी । १७३ राजा रथ को लेकर आकाश में रुका हुआ था । उतने विशाल नगर को अग्नि ने भस्म कर दिया । १७४ देवालय, मण्डप आदि सभी जलकर भस्म हो गए ।

देउळ मण्डप सबु हेला भस्म सात ।
देखि नरपति मारे कपाळरे हात ॥ १७५ ॥
क्रोधे थरहर होइ कम्पे ता शरीर ।
देवतांकु चाहिँ कोप कलाक असुर ॥ १७६ ॥
आज मुहिँ देवतांकु निश्चय मारिबि ।
गोटि गोटि धरि अग्नि मध्ये पकाइबि ॥ १७७ ॥
शुणि देवगण भये हेले थर हर ।
मेथकु डकाइ आज्ञा देले सुनासीर ॥ १७८ ॥
जळ बरषिण अग्नि लिभाअ बहन ।
न हेले भांगिब निश्चय ए स्वर्गभुवन ॥ १७९ ॥
शुणि मेघमाने घोर गरजन कले ।
बिलंका नगर मध्ये जळ बरशिले ॥ १८० ॥
लिभिला बहन अग्नि शीतळ होइला ।
बिलंकारे नरपति निश्वास छाड़िला ॥ १८१ ॥
देवताए जाइ मिळि तार अग्रतरे ।
कर जोड़ि जणाइले भये तरतरे ॥ १८२ ॥
तु देव आम्भंकु कोप करुछु किम्पाइँ ।
आम्भे केउँ दोष कलु कह दैत्यसाइँ ॥ १८३ ॥
श्रीरामंकु मारिबाकु करुछुँ बिचार ।
समस्ते मिलिण चाल करिबा समर ॥ १८४ ॥

यह देख राजा ने शिर पकड़ लिया । १७५ क्रोध से उसका शरीर थरथर काँप रहा था । असुर ने देवताओं की ओर क्रुद्ध दृष्टि डाली । १७६ आज मैं देवताओं को निश्चित रूप से मारूँगा । एक-एक को पकड़कर आग में डाल दूँगा । १७७ देवतागण यह सुनकर भय से थर्रा उठे । इन्द्र ने मेघों को बुलाकर आज्ञा दी । १७८ शीघ्र जल की वर्षा करके आग को बुझा दो नहीं तो यह निश्चय ही स्वर्गलोक को नष्ट कर देगा । १७९ यह सुनकर मेघों ने घनघोर गर्जन करके बिलंकापुर में जल की वर्षा की । १८० शीघ्र ही आग बुझकर ठण्डी हो गई । बिलंका में राजा ने निःश्वास छोड़ी । १८१ देवगण उसके समक्ष जाकर अत्यन्त भय से अभिभूत होकर हाथ जोड़कर निवेदन करने लगे । १८२ हे देव ! आप हमारे ऊपर क्रोध क्यों कर रहे हैं ? हे दैत्यराज ! आप ही बताइए कि हम लोगों ने क्या दोष किया है ? १८३ श्रीराम को मारने

राजा बोले शुण आहे सर्व देवगण।
श्रीरामंकु मारि तुम्भे रख मोर पण ॥ १८५ ॥
देवता बोइले राजा भय किम्पा कर।
कालि जुद्धे मार देबु आम्भे रघुबीर ॥ १८६ ॥
शुणिण बिलंकापति हरष होइला।
गजदन्त पलंकरे जाइँ पहुड़िला ॥ १८७ ॥
तहुँ सर्व देवगण गले स्वर्ग पुर।
बिलंका निमन्ते बसि करन्ति बिचार ॥ १८८ ॥
आजि बड़ बइराग पाइला राजन।
कालि निकि आसि कोपे मारे देवगण ॥ १८९ ॥
विश्वकर्मा राइ आज्ञा देले बेदवर।
एहि रात्रि मध्ये जाइ बिलंका नगर ॥ १९० ॥
पूर्वहुँ द्विगुण प्रति घर निर्माणिबु।
आयतनमान सबु सुवर्णे छाइबु ॥ १९१ ॥
एहा शुणि विश्वकर्मा बेगे चळिगला।
सेहि रात्रे जाइँ नग्रभितरे पशिला ॥ १९२ ॥
केहि न जाणन्ति निशबदे शोइछन्ति।
विश्वकर्मा जाइ पुरनिर्माण करन्ति ॥ १९३ ॥

के लिए आप विचार कर रहे हैं तो चलिए सब लोग मिलकर युद्ध करें। १८४ राजा बोला, अरे सभी देवगण ! सुनो ! श्रीराम का वध करके तुम लोग मेरे प्रण की रक्षा करो। १८५ देवताओं ने कहा, हे राजन् ! आप भय किसलिए कर रहे हैं ? हम लोग कल युद्ध में रघुवीर को मार देंगे। १८६ बिलंकेश्वर यह सुनकर प्रसन्न हो गया। वह जाकर हाथीदाँत के पर्यङ्क पर लेट गया। १८७ समस्त देवगण वहाँ से स्वर्गलोक चले गये तथा बिलंका के विषय में बैठकर विचार करने लगे। १८८ आज तो राजा अत्यन्त क्रुद्ध हो गया था। कहीं क्रोध में आकर कल देवताओं को न मारने लगे। १८९ ब्रह्मा जी ने विश्वकर्मा को बुलाकर आज्ञा दी कि इसी रात्रि के बीच तुम जाकर बिलंका नगर के सारे घर पहले से दूने बनाकर उन्हें स्वर्ण से छा देना। १९०-१९१ यह सुनकर विश्वकर्मा शीघ्र ही चले गए तथा उसी रात नगर के भीतर जा पहुँचे। १९२ कोई न जान पाया। सभी शान्त होकर सो रहे थे। विश्वकर्मा जाकर नगर का निर्माण करने लगे। १९३ हीरा, नीलम तथा

हीरा नीळा सुवर्णरे निर्माणिला पुर ।
अश्वशाळ गजशाळ हाट जे बजार ॥ १९४ ॥
पाइक मानंकपुर मंत्रींक उआस ।
सुवर्ण खंजिला राजपुर चउपाश ॥ १९५ ॥
माणिक्यर छाउणि जे बइदूर्य बता ।
उपरे छाएणि सबु कलाक मुकुता ॥ १९६ ॥
माणिक्य गोटाए काहिँ मुकुता गोटाए ।
हीरा नीळा लागि छन्ति थोपाए थोपाए ॥ १९७ ॥
पूर्वहुँ द्विगुण करि पुर निर्माणिला ।
प्रभातरे विश्वकर्मा स्वर्गपुर गला ॥ १९८ ॥

त्रिशिरा प्रथमर जुद्धकु गमन, देवगणंकर रामंकु विजयरथ प्रदान ओ त्रिशिरा फेरि आसिबा

ईश्वर कहन्ति शुण शुण गो पार्वती ।
बेगे प्रभातरु उठि देखि नरपति ॥ १ ॥
देउळ मण्डप सबु दिशइ जतन ।
पूर्वहुँ बिलंकापुर दिशे शोभावन ॥ २ ॥
देखिण राजन मने हरष होइला ।
नित्यकर्म सारि आस्थानरे बिजेकला ॥ ३ ॥

स्वर्ण से नगर, घोड़सार, हाथीसार, हाट और बाजार का निर्माण किया । १९४ दूतों के घर, मंत्रियों के आवास बनाए । राज-सदन के चारों ओर स्वर्ण-विमण्डित कर दिया । १९५ माणिक्य के छाजन वैदूर्य के बतेले लगाये तथा उसके ऊपर मुक्ता की कलाकारी करके छा दी । १९६ कहीं पर एक माणिक्य, कहीं एक मुक्ता तथा हीरा व नीलम के गुच्छे के गुच्छे लगा दिए । १९७ पहले से भी द्विगुण नगर का निर्माण करके प्रातः ही विश्वकर्मा स्वर्गलोक चले गए । १९८

त्रिशिरा का प्रथम युद्ध हेतु आगमन, देवगण द्वारा श्रीराम को विजय-रथ प्रदान एवं त्रिशिरा का पलायन

शंकर जी ने कहा, हे पार्वती ! सुनो । बड़े भोर में नरपति ने उठ कर देखा । मण्डप, मन्दिर आदि से युक्त बिलंका नगर यत्नपूर्वक पहले से भी अधिक शोभावन्त दिखाई दे रहा था १-२ देखकर राजा मन में

सान भाइ त्रिशिराकु चाहिँण बोइला ।
श्रीरामंकु मार एबे न कर तु हेळा ।। ४ ।।
त्रिशिरा बोइला एबे शुण नृपवर ।
रामकु इतर न मण हे दण्डधर ।। ५ ।।
रामे बादी हेले निश्चे पाइबा मरण ।
श्रीरामर पादे चाल पशिबा शरण ।। ६ ।।
राजा बोलुछन्ति तुहि होइलु कि बाइ ।
बइरीकि मारिवाकु डरिलु किम्पाइँ ।। ७ ।।
जेबे जीवनकु भय होइला तोहर ।
शरण पश तु जाइँ श्रीराम पादर ।। ८ ।।
विभीषण बीर जाइँ शरण पशिला ।
चारिजुग जाए सेहि अमर होइला ।। ९ ।।
मोते एबे बीर्जहीन न कर रे भाइ ।
रामर शरण एहि क्षणि पश जाइ ।। १० ।।
शुणिण त्रिशिरा क्रोधे हुए थरहर ।
नृपति मुखकु चाहिँ बोलइ उत्तर ।। ११ ।।
किम्पाइँ मोहर बोल भांगुछ राजन ।
धर्म कर्म विचारन्तु आहे नृपराण ।। १२ ।।

प्रसन्न हो गया । नित्यकर्म से निवृत्त होकर सिंहासन पर जा बैठा । ३ छोटे भाई त्रिशिरा को देखकर बोला कि तुम अब श्रीराम का वध कर दो । प्रमाद मत करो । ४ त्रिशिरा ने कहा, हे नृपोत्तम ! अब आप सुनें । हे दण्डधारी ! आप राम को अन्य न समझें । ५ राम के प्रतिद्वन्द्वी होने पर निश्चय ही हमें मरण प्राप्त होगा । चलो श्रीराम के चरणों में शरण ग्रहण करें । ६ राजा बोला, क्या तू पागल हो गया ? शत्रु को मारने में किसलिए डर गया । ७ यदि तुझे जीवन का डर है तो तू ही जाकर श्रीराम की चरण-शरण ग्रहण कर ले । ८ वीर विभीषण ने जाकर शरण-ग्रहण की और वह चार युग पर्यन्त अमर हो गया । ९ अरे भाई ! मुझे इस समय शक्तिहीन मत करो । तुम भी इसी क्षण राम की शरण चले जाओ । १० यह सुन क्रोध से थर्राते हुए त्रिशिरा ने राजा के मुख की ओर ताककर उत्तर दिया । ११ हे राजन् ! तुम किस कारण से हमारी बात टाल रहे हो ? हे नृपश्रेष्ठ ! कुछ तो धर्म-कर्म का विचार करो । १२ राजा ने कहा कि मैंने निश्चय कर लिया है कि युद्ध में

राजन बोइला मुहिँ करुछि नियत ।
अवश्य जुद्धरे मुँ मारिबि रघुनाथ ॥ १३ ॥
श्रीरामकु नमाइले अवश्य मरिबि ।
ए चारि जुगरे मुहिँ कीरति रखिबि ॥ १४ ॥
तु जाइ शरण पच्छे पश बीरबर ।
सैन्य साज तहिँ मुहि करिबि समर ॥ १५ ॥
एहा शुणि त्रिशिरा जे होइला मउन ।
रात्रहुँ बोइला आज सज मोर सैन्य ॥ १६ ॥
जुद्ध करि आज राम हस्तरे मरिबि ।
ए चारि जुगरे मुहिँ कीरति रखिबि ॥ १७ ॥
क्षत्री पुत्र होइ किम्पाँ डरिबि जुद्धकु ।
सैन्य सजकर आज्ञा देला डगरकु ॥ १८ ॥
आज्ञा परमाणे तहुँ डगरे चळिले ।
बिलंका नगरे पशि सैन्यंकु राइले ॥ १९ ॥
साज साज बोलि तहुँ चहळ पड़िला ।
वाद्य नाद शबदरे पृथ्वी चमकिला ॥ २० ॥
राउत माहुन्त आदि बीर महाबीर ।
अश्वरथ पदातिक आबर कुंजर ॥ २१ ॥
वाद्यकार पएदार सेना सेनापति ।
हस्ते शस्त्रमान धरि बाहार हुअन्ति ॥ २२ ॥

अवश्य ही रघुनाथ का बध कर दूँगा । १३ श्रीराम को न मारने पर मैं अवश्य ही प्राण त्याग कर दूँगा तथा इन चार युगों में मैं कीर्ति स्थापित करूँगा । १४ अरे वीर श्रेष्ठ ! तुम पीछे जाकर शरण ग्रहण कर लेना । सेना सजाकर मैं तो युद्ध करूँगा । १५ यह सुनकर त्रिशिरा मौन हो गया । रात में ही कहने लगा कि आज मेरी सेना को सजा दो । १६ युद्ध करके आज राम के हाथों से मृत्यु को प्राप्त करूँगा । इस चतुर्युगी में मैं अपनी कीर्ति की स्थापना करूँगा । १७ क्षत्री का पुत्र होकर युद्ध से किसलिए डरूँ ? उसने दूत को सेना सजाने की आज्ञा दी । १८ आज्ञा के अनुसार सन्देशवाहक वहाँ से चल दिये । बिलंकापुर में जाकर उन्होंने सेना को बुलाया । १९ 'सेना सुसज्जित करो का' शोर चारों ओर फैल गया । वाद्यों के निनाद से पृथ्वी चौंक उठी । २० बड़े-बड़े योद्धा सेनानायक, अश्वरथ, पदाति, हाथी, वाद्यकार, पैदल सेना,

गरजन करि धाउँछन्ति बीरमणि ।
दल दल होइ कम्पे बिलंका मेदिनी ॥ २३ ॥
श्वान बाहानरे बसि होइले बाहार ।
मार्जार बाहाने बसि धाइले असुर ॥ २४ ॥
अश्वपरे गजपरे राउत माहुन्त ।
बिलंकारु बाहारिले बारलक्ष रथ ॥ २५ ॥
केउँ असुरर शिर आकाशे लागइ ।
काहार लोचन दुइ पिंगळ दिशइ ॥ २६ ॥
के कळा के धळा के दिशइ रंगवर्ण ।
सुवर्ण मुकुट शिरे दिशे शोभावन ॥ २७ ॥
के आगरे के पच्छरे नेत बान्धि अछि ।
कर्णरे कुण्डळ बाहे बाजु बिराजुछि ॥ २८ ॥
कार दुइ हात बड़ निश अति छोट ।
लुखुरा बाळरे केहि पारि अछि जट ॥ २९ ॥
देह लोम बार हात अटइ काहार ।
दमदम होइ धाएँ के धरि मुद्गर ॥ ३० ॥
चिरामारि उपरकु डेइँ करि जान्ति ।
काहिँ राम बोलि केहि गर्जन करन्ति ॥ ३१ ॥

सेनापति आदि हाथों में अस्त्र-शस्त्र लेकर बाहर निकलने लगे । २१-२२ श्रेष्ठ वीर गर्जना करते हुए दौड़ने लगे । बिलंका की भूमि कसमसाकर काँपने लगी । २३ कुत्तों के वाहन पर बैठकर बाहर निकलने लगे । राक्षस बिडाल वाहनों पर सवार होकर दौड़ पड़े । २४ घोड़ों और हाथियों पर वीर योद्धा सैनिकगणों के साथ बिलंका से बारह लाख रथ बाहर निकल पड़े । २५ किसी राक्षस का सिर आकाश को छू रहा था, किसी के दोनों नेत्र पिंगल वर्ण के दिखाई दे रहे थे । २६ कोई काला, कोई सफ़ेद तथा किसी का वर्ण लाल रंग का दिख रहा था । उनके शिर पर स्वर्ण-मुकुट सुन्दर दिखाई दे रहे थे । २७ किसी ने आगे, किसी ने पीछे नेत बाँध रखे थे । कानों में कुण्डल तथा बाँहों में बाजूबन्द, सुशोभित हो रहे थे । २८ किसी के दोनों हाथ बड़े और मूँछें अत्यन्त छोटी थीं । कोई उलझे बालों से जटा बनाए हुए था । २९ किसी के शरीर के बाल बारह हाथ के थे तथा कोई मुग्दर लेकर धमाधम दौड़ रहे थे । ३० कोई खम खाकर ऊपर की ओर उछलकर चले जाते और "कहाँ है राम ?"

झण झण शब्द करे अस्त्र बा काहार ।
कार फरिखण्डा जाइ लागे गगनर ॥ ३२ ॥
के खड़ग केहु फाळ धरिण धामन्ति ।
केहु जाइ नृपतिकि दर्शन करन्ति ॥ ३३ ॥
के बोलन्ति आस आसके बोलन्ति जाअ ।
बिलंका नगरे शब्द शुभे घर-घर ॥ ३४ ॥
के बोलइ संगात हो के बोलइ भाइ ।
के बोलु अछन्ति जुद्ध करिबाकु जाइ ॥ ३५ ॥
के बोलइ श्रीरामंकु इतर न मण ।
के बोलइ एहि मारि अछिटि रावण ॥ ३६ ॥
के बोलइ आम्भ राजा मंत्रीकि माइला ।
के बोलइ सेहि राम काहुँ बा अइला ॥ ३७ ॥
के बोलइ अहि भाइ रामंकु न डर ।
के बोलइ आरे भाइ कपि बळीआर ॥ ३८ ॥
के बोलइ राणींकर नाक काटि नेला ।
के बोलइ सेहि नाभिदैत्यकु माइला ॥ ३९ ॥
के बोलइ आग हनुमन्तकु मारिबा ।
हनुमन्त मला परे रामंकु मारिबा ॥ ४० ॥

इस प्रकार कहते हुए गर्जना कर रहे थे । ३१ किसी के अस्त्र झन-झन का शब्द करते थे । किसी की कृपाण व बर्छे आसमान को छू रहे थे । ३२ कोई तलवार और कोई भाला लेकर दौड़ रहा था । कोई जाकर राजा के दर्शन कर रहा था । कोई कहता, आओ ! आओ ! तथा कोई जाओ कह रहा था । बिलंकानगर में कोलाहलपूर्ण शब्द सुनाई पड़ रहा था । ३३-३४ कोई मित्र कोई भाई कह रहा था । कोई कहता था कि चलो चलकर युद्ध करें । ३५ कोई कहता था कि श्रीराम को औरों-सा न समझो, इसी ने रावण को मारा है । ३६ कोई कहता कि हमारे राजा के मंत्री को मार डाला है । कोई बोला कि वह राम आया कहाँ से है ? ३७ कोई कहता, अरे भाई ! राम को मत डरो । किसी ने कहा कि अरे भाई ! वानर बलशाली है । ३८ किसी ने कहा कि उसने रानियों की नाक काट ली । कोई बोला कि उसी ने नाभि दैत्य को मार डाला । ३९ कोई बोला कि पहले हनुमान को मारेंगे और हनुमन्त के मरने के उपरान्त राम को मारेंगे । ४० वीरगण इस प्रकार विचार

एपरि राउतमाने बिचार करन्ति ।
बाद्यनाद शबदरे पृथ्वी चमकान्ति ॥ ४१ ॥
बिजि घोष दाउण्डि जे टमक निशाण ।
बीर बाद्य नाद शुभु अछि घन-घन ॥ ४२ ॥
राजन देखिण अतिहरष होइला ।
पात्र मंत्री अमात्यकु पुणि डकाइला ॥ ४३ ॥
गोटि गोटि करि सबु कहिला बुझाइ ।
मोहर शत्रुकु बाबु मारि आस जाइ ॥ ४४ ॥
हेळा न करिब जुद्धे रामकु मारिब ।
ए बिलंका पुर गोटि निश्चिन्त करिब ॥ ४५ ॥
जे रामकु मारि देब आगरे मोहर ।
बिलंका नगरे सेहि हेब मंत्रीबर ॥ ४६ ॥
एते बोलि राए गुआ पान बाण्टि देले ।
काकु शाढ़ी काकु सुनाबाला पिन्धाइले ॥ ४७ ॥
काहाकु आनन्दे काखे धरिण बोलन्ति ।
श्रीरामंकु मार बोलि आदेश दिअन्ति ॥ ४८ ॥
काहा ओष्ठ धरि पुणि बोले से असुर ।
श्रीराम जे मन्ते मरे से उपाय कर ॥ ४९ ॥

कर रहे थे और वाद्य-नाद के शब्द से पृथ्वी को चौंका रहे थे। ४१ विजयघोष, नगाड़े, टमक निशान आदि वीरवाद्यों का तुमुल घोष सुनाई पड़ रहा था। ४२ राजा को देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। फिर उसने सभासद, मंत्री तथा अमात्य को बुलाया। ४३ एक-एक करके सबको समझा-बुझाकर उसने कहा कि अरे भाई! मेरे शत्रु को जाकर मार आओ। ४४ युद्ध में प्रमाद न करके राम को मार देना तथा इस बिलंकानगर को एक मात्र चिन्ता-रहित कर देना। ४५ जो मेरे आगे राम को मार देगा। वह ही बिलंकापुरी का श्रेष्ठ मंत्री बनेगा। ४६ इतना कहकर राजा ने सबको पान और सुपारी बाँट दी। किसी को पगड़ी तथा किसी को सोने के बाले पहना दिये। ४७ किसी को सानन्द बगल में रखकर बात करता और श्रीराम को मारने की आज्ञा देने लगा। ४८ वह असुर किसी के ओंठ पकड़कर कहता कि तुम वही उपाय करो जिससे श्रीराम मर जाय। ४९ यह सुनकर वीर सैनिक लोग क्रोध से प्रज्वलित काँप

शुणिण राउतमाने क्रोधे परज्वलि ।
कम्पाइ भालेणि कहु अछ महाबळी ।। ५० ।।
कालि जुद्धे निश्चे मारि देबु रघुबीर ।
हनुकु मारिण आणिदेबु तो आगर ।। ५१ ।।
शुणिण नृपति आस्थानरु उठिगला ।
निज अन्तःपुर मध्ये प्रवेश होइला ।। ५२ ।।
मुदुसूलीमाने सर्वे खटिले पाशरे ।
बिजे कले नृपबर राणी हंसपुरे ।। ५३ ।।
महादेई मानंकु से पाशकु राइला ।
कि करिबि अकारण शत्रु राम हेला ।। ५४ ।।
राणीए बोलिले राजा मालुछ किम्पाइँ ।
रामकु इतर प्राय न मण गोसाइँ ।। ५५ ।।
परम पुरुष सेहि रघुकुळ बीर ।
दशरथ नन्दन से जानकीर बर ।। ५६ ।।
असुर मानंकु मारि उश्वासिब भार ।
ताहा संगतरे देब न कर समर ।। ५७ ।।
आज राते देब आम्भे देखिलु स्वपन ।
श्रीराम हस्तरे नाथ पाइलु कषण ।। ५८ ।।

कर बोले, हे महाबली ! आपने विचार कर कहा है । ५० कल युद्ध में निश्चय ही रघुबीर को मार देंगे । हनुमान को मारकर आपके सामने ला देंगे । ५१ यह सुनकर राजा सिंहासन से उठकर अपने अन्तःपुर को चला गया । ५२ सभी परिचारिकाएँ उसकी सेवा में जुट गईं । नृपश्रेष्ठ ने रनिवास में प्रवेश किया । ५३ उसने पटरानियों को अपने समीप बुलाकर कहा कि क्या करूँ ? बिना किसी कारण के राम ने शत्रुता कर ली । ५४ रानियों ने राजा से कहा कि आप किस कारण सोच-विचार कर रहे हैं । हे नाथ ! आप राम को साधारण मत समझिए । ५५ दशरथ का पुत्र तथा जानकी का स्वामी वह रघुकुल में पराक्रमी परमपुरुष अर्थात् पुरुषोत्तम ही हैं । ५६ असुरों का वध करके वह भार उतारेंगे । हे देव ! उनके साथ आप संग्राम न करें । ५७ स्वामी ! आज ही रात में हम लोगों ने स्वप्न देखा कि श्रीराम के हाथ से आपको पराभव प्राप्त हुआ है । ५८

ए नगरे जेते थिले असुर असुरी ।
श्रीरामंक हस्ते मरि गले स्वर्गपुरी ॥ ५९ ॥
लूहमइ बुलाइला बिलंका भुवन ।
ए नगर गोटा हेला देवतांक स्थान ॥ ६० ॥
राजा बोले स्वप्नकथा कहुँ हेब सत ।
श्रीराम हस्तरे जेबे मरण नियत ॥ ६१ ॥
परम पुरुष सेहि राम अवतार ।
असुर जन्मरु मुहिँ होइबि उद्धार ॥ ६२ ॥
रामंकु मारिण मुहिँ कीरति रखिबि ।
ए अजेय बिलंकारे सुखे बिळसिबि ॥ ६३ ॥
राणी बोइले भो देव आम्भ बोलकर ।
पीरति करन्तु जाइ श्रीराम संगर ॥ ६४ ॥
राम दया कले आउ भय किछि नाहिँ ।
रामरे दोरे हा केभे न हुअ गोसाइँ ॥ ६५ ॥
एहा शुणि नृपवर अळप हसिला ।
राणींक मुखकु चाहिँ सधिरे बोइला ॥ ६६ ॥
श्रीराम पादरे किम्पा शरण पशिबि ।
लक्षशिरा पुत्र होइ अकीर्ति अर्जिबि ॥ ६७ ॥

इस नगर में जितने भी राक्षस व राक्षसियाँ थीं वह सभी श्रीराम के हाथों मरकर स्वर्गपुरी को चले गए । ५९ बिलंकानगर समतल बनाकर सम्पूर्ण रूप से देवस्थान बन गया । ६० राजा बोला कि स्वप्न की बात कब सच होती हैं ? यदि मेरी मृत्यु श्रीराम के हाथों ही निर्धारित है तो पुरुषोत्तम अवतारी उन्हीं श्रीराम के द्वारा ही मैं असुर-जन्म से मुक्ति प्राप्त करूँगा । ६१-६२ राम को मारकर मैं कीर्ति स्थापित करूँगा तथा इस दुर्जय बिलंका में सानन्द विलास करूँगा । ६३ रानियों ने कहा, हे देव ! आप हमारी बात मानकर श्रीराम के साथ जाकर मित्रता कर लें । ६४ राम के दया करने पर और कुछ भय नहीं रहेगा । हे नाथ ! कभी भी श्रीराम के द्रोही न बनें । ६५ यह सुनकर श्रेष्ठ राजा थोड़ा मुस्कुराया और रानियों के मुख की ओर ताककर धीरज के साथ कहने लगा । ६६ श्रीराम के चरणों की शरण किसलिए ग्रहण करूँ ? लक्षशिरा का पुत्र होकर अपकीर्ति कमाऊँ । ६७ देवताओं को मैंने अपने चरणों के

देवता मानंकु मुहिँ बन्धइ पादरे ।
बाड़ि ताटि जम राजा खटे निरन्तरे ॥ ६८ ॥
कुबेर मोहर नित्य काचइ महळ ।
विश्वकर्मा मोर अश्व चारुआळ ॥ ६९ ॥
पांचशत कोटि मोर सेना बळीयार ।
अशी कोटि रथी सात कोटि बाद्यकार ॥ ७० ॥
चउँषठि पद्म पुणि मोर सेनापति ।
बयाळिश खर्व मोर पाइक अछन्ति ॥ ७१ ॥
शतशिरा पुत्र मोर त्रिशिरा सोदर ।
सहस्रेक मुण्ड पुणि द्विसहस्र कर ॥ ७२ ॥
एते थाइ श्रीरामंकु डरिबि किम्पाइँ ।
एक जणकरे एते मारि किपारइ ॥ ७३ ॥
कालि जुद्धे जाणिब गो सकळ वृत्तान्त ।
केड़े बड़ बळिआर सेहि रघुनाथ ॥ ७४ ॥
एते बोलि पलंकरे शुए नृपमणि ।
तार पाद मंचाळिले बसि लक्षेराणी ॥ ७५ ॥
एसन समये देवी पार्वती गो शुण ।
अपूरुब ग्रन्थ ए बिलंका रामायण ॥ ७६ ॥
साधु जन माने एहि शास्त्रकु शुणन्ति ।
प्रतिदिन पण्डिते एशास्त्र बखाणन्ति ॥ ७७ ॥

तले बाँध रखा है । यमराज निरन्तर दण्ड लेकर सेवा में रहता है । ६८ कुबेर नित्य मेरे महल को स्वच्छ करता है । विश्वकर्मा मेरे घोड़ों को चराया करता है । ६९ पाँच करोड़ मेरी बलवान सेना है । अस्सी करोड़ रथी और सात करोड़ बाजे वाले हैं । ७० फिर मेरे चौंसठ पद्म सेनापति और बयालिस खर्व पायक हैं । ७१ शतशिरा मेरा पुत्र और त्रिशिरा मेरा भाई है । सहस्र शिर तथा दो हजार बाहुओं के होते हुए फिर मैं श्रीराम से किसलिए डरूँ । वह अकेला क्या इतने लोगों को मार पायेगा । ७२-७३ कल युद्ध में सब बात मालूम पड़ जाएगी कि वह रघुनाथ कितना बलवान है । ७४ इतना कहकर राजाओं में श्रेष्ठ वह पलंग पर सो गया और एक लाख रानियाँ उसके पैर दबाने लगीं । ७५ इस समय हे देवी पार्वती ! सुनो ! यह बिलंका रामायण अपूर्व ग्रन्थ है । ७६ साधुजन इस शास्त्र को श्रवण करते हैं । विद्वान इस शास्त्र

आतंके शुणिले कटि जाए कष्टमान ।
अपुत्रिक पुत्र पाए ए कथा प्रमाण ॥ ७८ ॥
सावधाने शुण हेमवन्तर तनया !
श्रीहिंगुला परसन्ने लेखुअछि एहा ॥ ७९ ॥
जय जय हिंगुळा गो असुर नाशिनी ।
जाहार आज्ञारे नव कोटि कात्यायिनी ॥ ८० ॥
सकळ चण्डींकु जेहु करिछन्ति जात ।
महिषामर्दिनी जार बर विश्वनाथ ॥ ८१ ॥
सेहि शाकम्बरी देवी अभय चरण ।
श्री शारळादास सदा माँगइ शरण ॥ ८२ ॥
एथु अनन्तरे जे पार्वती जोड़ि कर ।
बोइले भो विश्वनाथ प्रतिकार कर ॥ ८३ ॥
बोइले जे सज हेले समस्त असुर ।
श्रीरामंक संगतरे करिबे समर ॥ ८४ ॥
जाहा शुणिबाकु मन बळिछि मोहरि ।
बुझाइ कहन्तु देव अनुग्रह करि ॥ ८५ ॥
ईश्वर बोलन्ति देवी पार्वती गो शुण ।
सेहि प्रभातरे बाद्य शुभे घन-घन ॥ ८६ ॥

का प्रतिदिन बखान करते हैं । ७७ भय के समय में सुनने से सारे कष्ट दूर हो जाते हैं । अपुत्री को पुत्र की प्राप्ति होती है । यह बात प्रामाणिक है । ७८ हे हिमवान की पुत्री ! सावधान होकर श्रवण करो । (कवि कहता है कि) श्री हिंगुला के प्रसन्न होने से मैं यह लिख रहा हूँ । ७९ हे असुरमर्दिनी हिंगुला ! तुम्हारी जय हो ! जय हो ! जिसकी आज्ञा से ही नव करोड़ कात्यायिनी हुईं । ८० जिसने सभी चण्डिकाओं को उत्पन्न किया । जिसने महिषासुर का विनाश किया तथा जिसके पति विश्व के नाथ हैं । ८१ उसी देवी शाकम्बरी के अभय चरणों की शरण सदा शारलादास माँगता है । ८२ इसके पश्चात् पार्वती ने हाथ जोड़कर कहा, हे विश्वनाथ ! दया करो । ८३ वह बोली कि राक्षसों की सम्पूर्ण सेना सजकर श्रीराम के साथ युद्ध करने के लिए तैयार हो गई । ८४ उसे सुनने की मेरी इच्छा हो रही है । हे देव ! आप मेरे ऊपर दया करके उसे समझाकर कहें । ८५ शंकर जी बोले, हे देवी पार्वती ! सुनो । उसी दिन प्रातः बाजों का घनघोर निनाद सुनाई पड़ा । ८६ पर्वत के

पर्वत उपरे रामचन्द्र शोइथिले ।
टमकर शब्द शुणि निदरु उठिले ।। ८७ ।।
हनुकु बोलन्ति प्रभु कौशल्यांक बळा ।
बिलंका नगरे बाबू टमक शुभिला ।। ८८ ।।
आजि निजे समर कि करिब असुर ।
ए बारे अइले निश्चे जिब जमपुर ।। ८९ ।।
एहा शुणि हनुमन्त पर्वते उठिला ।
शिख परि बसि बिलंकाकु दृष्टि देला ।। ९० ।।
रामचन्द्र समुद्ररे पशि स्नान सारि ।
तर्पणादि सारि आसि से कोदण्डधारी ।। ९१ ।।
फळ मूळ भुंजिलेक बेगे रघुबीर ।
पर्वत उपरे बसि सळखन्ति शर ।। ९२ ।।
एथु अनन्तरे देवी पार्वती गो शुण ।
बिलंका नगरे सज हेले सबु सैन्य ।। ९३ ।।
बाहार होइले राजांकर सहोदर ।
मुकुट बान्धिला तिनि गोटा मस्तकर ।। ९४ ।।
छअ भुजे छअ गोटि नेत से बान्धिला ।
वीर काछेणिकि बीर कटिरे छन्दिला ।। ९५ ।।
बाहारे बाहुटि लुहा धनु जे हस्तरे ।
शावळ भुजेक पांचशर अन्य करे ।। ९६ ।।

ऊपर श्रीरामचन्द्र जी शयन कर रहे थे। वह टमक का शब्द सुनकर नींद से उठ पड़े। ८७ कौशल्यानन्दन भगवान श्रीराम ने हनुमान से कहा कि भाई ! बिलंकानगर में टमक सुनाई दे रहा है। ८८ क्या आज असुर स्वयं युद्ध करेगा ? इस बार आने पर निश्चय ही यमपुर को जायेगा। ८९ यह सुनकर हनुमन्तलाल पर्वत पर चढ़ गए। और उन्होंने पर्वतशिखर पर बैठकर बिलंका की ओर दृष्टिपात किया। ९० रामचन्द्र ने सागर में घुसकर स्नान-तर्पणादि समाप्त किया। फिर कोदण्ड-धारी रघुबीर ने आकर शीघ्रता में फल-मूल खाये और पर्वत पर बैठकर बाणों को सम्हालने लगे। ९१-९२ हे पार्वती ! सुनो ! इसके पश्चात् बिलंका नगरी में सारी सेना सुसज्जित होने पर राजा का भाई अपने तीनों शिरों पर मुकुट बाँधकर बाहर निकला। ९३-९४ छः भुजाओं में छः नेत बँधे थे। वीर ने कमर में बीर काछणी बाँध रखी थी। ९५ बाँहों में

मुद्गरेक बीरमणि कन्धरे पकाइ ।
बिमान उपरे बीर बिजेकला जाइ ॥ ९७ ॥
राउत माहुन्त शीघ्र बाहार हुअन्ति ।
पटुआर पाएक जे आगरे धामन्ति ॥ ९८ ॥
बीर बाद्य शबदरे उछुळे गगन ।
शस्त्र धरि धाइँछन्ति महाबली सैन्य ॥ ९९ ॥
तांक पादघाते कम्पि उठइ मेदिनी ।
थर हर होइ कम्पे बासुकीर फणि ॥ १०० ॥
मुखरु रुधिर तार बाहार होइला ।
रख रघुनाथ बोलि उच्चरे डाकिला ॥ १०१ ॥
उत्तर दुआरे सैन्य होइले बाहार ।
द्वादश जोजन माड़ि धामन्ति असुर ॥ १०२ ॥
अस्त्रशस्त्र बुलाइण बाहास्फोट द्यन्ति ।
हस्तीमाने गर्जनरे गगने उठन्ति ॥ १०३ ॥
चिरामारि केहि केहि गगने उठन्ति ।
पर्वत कन्दरे वृक्ष चूर करि जान्ति ॥ १०४ ॥
एहा देखि हनुमन्त रामंकु बोलइ ।
बेगे धनु शर धर प्रभु रघुसाइँ ॥ १०५ ॥

बाजूबन्द थे। हाथ में लोहे का धनुष था। उसके एक हाथ में शावल तथा अन्य हाथों में पाँच बाण थे। ९६ वीर श्रेष्ठ कन्धे पर एक मुग्दर रखकर विमान के ऊपर जा बैठा। ९७ वीर, योद्धा, महावत शीघ्र ही निकल पड़े। चतुर धावक हरकारे आगे-आगे दौड़ रहे थे। ९८ वीर वाद्यों के तुमुल उद्घोष से आकाश गूंज उठा। शस्त्रधारी वीरवाहिनी आगे बढ़ रही थी। ९९ उनके पदाघात से पृथ्वी काँप उठी तथा वासुकी नाग का फन थर्राकर कम्पित होने लगा। १०० उसके मुख से रक्त बहने लगा। हे रघुनाथ! रक्षा करो कहकर ऊँचे स्वरों में चिल्ला पड़ा। १०१ सेना उत्तरी द्वार से होकर बाहर आई। असुर दल बारह योजन में फैलकर बढ़ रहा था। १०२ वह अस्त्र-शस्त्र घुमाते हुए बाहु स्फोट अर्थात् बाँहें फड़का रहे थे। गरजते हुए हाथी आकाश छू रहे थे। १०३ कोई छलाँग लगाकर पर्वत, कन्दरा और वृक्षों को चूर-चूर करके आकाश में उठ गया। १०४ यह देखकर हनुमन्तलाल ने श्रीराम से कहा कि हे प्रभु रघुनाथ जी! शीघ्र ही धनुष-बाण धारण करें। १०५

अइले असुर जेन्हे समुद्र लहरी ।
सम्भाळि समर कर आहे चापधारी ॥ १०६ ॥
मोते लागु अछइ त अइला राजन ।
घोर जुद्ध हेब आजि हे रघुनन्दन ॥ १०७ ॥
शुणि रघुनाथ बेगे धनुधरि करे ।
विश्वामित्र सुमरिण लगाइले शिरे ॥ १०८ ॥
गुण चढ़ाइले प्रभु धनु हूळे नेइ ।
भीषण टंकार शब्द कले रघुसाइँ ॥ १०९ ॥
भीषण गर्जन कला हनुमन्त बीर ।
शुणि करि कम्पमान होइले असुर ॥ ११० ॥
गरुड़कु देखि जेन्हे सर्प घुंचि जान्ति ।
तेन्हे पच्छ घुंचादेइ असुरे रहन्ति ॥ १११ ॥
त्रिशिरा डाकइ पच्छे रुह काहिं पाइँ ।
एक जणकरे अबा कि करि पारइ ॥ ११२ ॥
एते बोलि से दइत्य हेला अगुसार ।
रथ धुआइण बेगे धामइँ असुर ॥ ११३ ॥
आरे ! आरे राम ! बोलि धनुकु धइला ।
पंचलक्ष नाराच से मंत्रिण बिन्धिला ॥ ११४ ॥

असुरदल सागर की लहर के समान आ गया है। हे धनुर्धारी ! सम्हालकर युद्ध करें। १०६ मुझे तो लग रहा है कि राजा ही आया है। हे रघुनन्दन ! आज घोर युद्ध होगा। १०७ यह सुनकर रघुनाथ जी ने शीघ्रता से हाथ में धनुष उठाकर विश्वामित्र जी का स्मरण करके उसे शिर से लगा लिया। १०८ प्रभु राम ने धनुष को झुकाकर प्रत्यञ्चा चढ़ाई तथा रघुकुल के स्वामी ने भीषण टंकार का शब्द किया। १०९ पराक्रमी हनुमान ने भीषण गर्जना की जिसे सुनकर राक्षस काँप उठे। ११० जैसे गरुड़ को देखकर सर्प ठिठक जाता है, उसी प्रकार राक्षसदल ठिठक कर रह गया। १११ त्रिशिरा ने कहा, अरे ! पीछे क्यों रह गए ? अरे अकेला वह क्या कर पाएगा। ११२ इतना कहकर वह दैत्य अगुवाई करने लगा। राक्षस वेग से रथ भगाकर दौड़ रहे थे। ११३ अरे राम ! आ ! कहकर धनुष उठाकर उसने पाँच लाख बाण अभिमंत्रित करके छोड़ दिये। ११४ वज्र के समान शब्द करता हुआ बाण चल दिया। उसे

बज्र सम शब्द करि चळइ नाराच ।
देखि पिठि पातिलाक पवन तनुज ।। ११५ ।।
नाराच पड़िला हनु उपरेण जाइ ।
से नाराच बजि अग्नि जळिण उठइ ।। ११६ ।।
ताहा देखि चमत्कार होइला असुर ।
क्रोध होइ बिन्धिलाक पुणि ब्रह्मशर ।। ११७ ।।
एहा देखि रघुनाथ धनुकु धइले ।
ब्रह्मशर कु जे ब्रह्मशकति माइले ।। ११८ ।।
तथापि से ब्रह्मशर बाहुड़ि न गला ।
ज्वालावळी बाण बिन्धिलेक रघुबळा ।। ११९ ।।
तेवे ब्रह्मशर केबे बाहुड़ि न जाइ ।
श्रीरामंक उपरकु आसुअछि धाइँ ।। १२० ।।
ताहा देखि धाइँ गला हनुमन्त बीर ।
दैत्य उपरकु फिंगिदेला ब्रह्मशर ।। १२१ ।।
दइत्य उपरे बाण पड़िलाक जाइँ ।
रथ पोड़ि गला दैत्य भुमिरे पड़इ ।। १२२ ।।
धाइँ हनुमन्त ताकु आर्कषि धइला ।
लेउटाइ पुणि दैत्य हनुकु धइला ।। १२३ ।।
तार चरणकुधरि गगने बुलाइ ।
नीळ सुन्दर पर्वते कचाड़िला नेइ ।। १२४ ।।

देखकर पवनपुत्र ने पीठ घुमा दी । ११५ बाण हनुमान के ऊपर जा गिरा । उसके लगने से आग जल उठी । ११६ इसे देखकर राक्षस आश्चर्यचकित रह गया । फिर उसने क्रुद्ध होकर ब्रह्मशर छोड़ दिया । ११७ यह देखकर रघुनाथ जी ने धनुष धारण करके ब्रह्मशर के विरुद्ध ब्रह्मशक्ति का प्रहार किया । ११८ फिर भी वह ब्रह्मशर वापस नहीं गया । तब रघुनन्दन ने ज्वालावली बाण छोड़ा । ११९ फिर भी ब्रह्मशर बिना वापस गये श्रीराम के ऊपर वेग से जाने लगा । १२० यह देखकर वीर हनुमान ने दौड़कर उस ब्रह्मशर को दैत्य के ऊपर फेंक दिया । १२१ बाण दैत्य के ऊपर जा गिरा जिससे उसका रथ जल गया और असुर भूमि पर गिर पड़ा । १२२ दौड़कर हनुमान ने उसे खींचकर पकड़ा । तभी दैत्य ने पलटकर उन्हें पकड़ लिया । १२३ उसने हनुमान के पैर को पकड़कर आकाशमण्डल में घुमाकर उन्हें ले जाकर नील सुन्दर

हनुदेह बाजि परबत हेलाचुर्ण ।
मोह होइ तळे पड़े बीर हनुमान ।। १२५ ।।
माड़िण बसिला हनुमन्तकु असुर ।
मुद्गरेक धरि क्रोधे करइ प्रहार ।। १२६ ।।
चळि न पारइ आउ बीर हनुमान ।
उच्च स्वरे डाकदेला रख हे श्रीराम ।। १२७ ।।
ताहा शुणि धाइँले से कोदण्ड धारण ।
असुरकु बिन्धिलेक दश गोटा बाण ।। १२८ ।।
पुणि पाञ्चशत बाण बिन्धिलेक टाणि ।
तिनि शत बाण प्रहारिले रघुमणि ।। १२९ ।।
बाण जाइ पड़िलाक असुर उपरे ।
उपुड़िण शर सबु पड़िले भुमिरे ।। १३० ।।
देखिण श्रीरघुनाथ चमत्कार हेले ।
पाशुपत बाण पुणि कोपेण बिन्धिले ।। १३१ ।।
से बाण असुर अंगे पड़ि भांगिगला ।
श्रीरामंकु चाहिँदैत्य गर्जिण उठिला ।। १३२ ।।
एहा देखि कोप भरे कोदण्ड धारण ।
हाबड़ा शरेक पुणि बिन्धिले मंत्रिण ।। १३३ ।।

पर्वत पर पछाड़ दिया । १२४ हनुमान के शरीर से लगकर पर्वत चूर-चूर हो गया और वह अचेत होकर नीचे गिर पड़े । १२५ असुर हनुमान को दबाकर चढ़ बैठा तथा कुपित होकर एक मुग्दर लेकर प्रहार करने लगा । १२६ पराक्रमी हनुमान और हिल नहीं पाये । उन्होंने, "हे श्रीराम ! रक्षा करो ।" की ऊँचे स्वर में पुकार की । १२७ उसे सुन कर कोदण्डधारी राम दौड़े तथा उन्होंने असुर के ऊपर दस बाण छोड़े । १२८ फिर रघुवीर श्रीराम ने पाँच सौ बाण खींचकर छोड़े और तुरन्त ही पुनः तीन सौ बाण छोड़ दिये । १२९ सभी बाण बिना असुर की देह मे छिदे ही पृथ्वी पर गिर पड़े । १३० यह देख श्री रघुनाथ जी चमत्कृत हो गए । उन्होंने कुपित होकर फिर पाशुपत बाण छोड़ा । १३१ वह बाण असुर की देह पर गिरकर टूट गया । श्रीराम को देखकर दैत्य गर्जना करते हुए उठ बैठा । १३२ यह देखकर कोदण्डधारी राम क्रोध में भर गए । फिर उन्होंने हाबड़ा नामक एक बाण अभिमंत्रित करके छोड़ दिया । १३३ वह बाण दैत्य के ऊपर जा गिरा ।

दइत्य उपरे जाइ पड़िला से शर।
सम्हाळि न पारिला से प्रतापी असुर ॥ १३४ ॥
घाए घुमाइला सेहि प्रतापी दइत।
लेउटाइ पकाइण बीर हनुमन्त ॥ १३५ ॥
असुर उपरे माड़ि बसिलाक जाइँ।
बज्र सम बिधा एक माइला निठाइ ॥ १३६ ॥
बिधा बाजिबारु अग्नि उठिलाक जळि।
कोप होइ पुणि दैत्य उठिला प्रज्वलि ॥ १३७ ॥
आकर्षि हनुकु दैत्य धइलाक जाइँ।
दुइ बीर हृदेहृद छन्दा छन्दि होइ ॥ १३८ ॥
मुण्डे मुण्डे मारन्ति से होइ कोपभर।
घोर गर्जन करि करन्ति समर ॥ १३९ ॥
पादरे पर्वत मान हेउ छन्ति चूर्ण।
पृथ्वी हेळेण रेणु अछइ गगन ॥ १४० ॥
बाहाकु बाहा जे दुहेँ हेले छन्दा छन्दि।
गजकु देखिले जेन्हे गज दिये छन्दि ॥ १४१ ॥
असुरकु माड़ि बसि अंजना कुमर।
बज्रमुथे माइला से छातिरे ताहार ॥ १४२ ॥

वह प्रतापी असुर उसे सम्हाल नहीं पाया। १३४ वह शक्तिशाली दैत्य चकराकर अचेत हो गया। पराक्रमी हनुमान ने उसे पलटकर गिरा दिया। १३५ वह असुर के ऊपर चढ़ बैठे और उन्होंने ताक कर बज्र के समान एक मुक्का जड़ दिया। १३६ मुक्का लगते ही आग जल उठी। तब क्रोध से प्रज्वलित होकर दैत्य उठ बैठा। १३७ राक्षस ने जाकर हनुमान को खींच पकड़ लिया। दोनों वीर छाती से छाती टकराने लगे। १३८ क्रोध में भरे हुए दोनों शिर से शिर टकराते थे और घनघोर गर्जना करके युद्ध कर रहे थे। १३९ पदाघात से पर्वत चूर-चूर होकर रेणु कण बनकर पृथ्वी से आकाश में व्याप्त हो गये। १४० जिस प्रकार एक हाथी दूसरे हाथी को देखकर भिड़ जाता है, वैसे ही वह दोनों हाथापाई करते हुए आपस में भिड़ गये। १४१ अंजनानन्दन असुर के ऊपर चढ़ बैठे और उन्होंने उसकी छाती पर वज्रमुष्टि का प्रहार किया। १४२

मुथ बाजिबारु अग्नि जळिण उठिला ।
असुरर अंगगोटा व्यथा जे पाइला ।। १४३ ।।
लक्षशिरा नन्दन जे गर्जिण उठिला ।
हनुकु धरिण गगनरे बुलाइला ।। १४४ ।।
प्रचण्ड पर्वते नेइ कचाड़िण देला ।
बेनि फाळ होइ परवत फटिगला ।। १४५ ।।
मोह होइ पड़े बीर बर हनुमान ।
राम चारि पारुशरे बेढ़ि गलेसैन्य ।। १४६ ।।
शतपुर करिदैत्य बेढ़िलेक जाइ ।
तीक्ष्ण भल्ल शावेळि जे मारन्ति तुहाइ ।। १४७ ।।
असिपत्री तीक्ष्णमुना शूळ कंकपत्र ।
मुद्गर धरिण कोपे मारन्ति दइत्य ।। १४८ ।।
राउते धनुरे पुराइण तीक्ष्ण बाण ।
श्रीरामंक उपरकु बिन्धिलेक पुण ।। १४९ ।।
ककड़ा मासर वृष्टि पराय पड़इ ।
दिवसरे अन्धकार दिशे रण भुइँ ।। १५० ।।
हनुकु पकाइ देइ दइत धाइँला ।
प्रचण्ड गिरिकि करे धरि उपाड़िला ।। १५१ ।।

मुष्टिका लगने से आग जल उठी । राक्षस के शरीर में व्यथा होने लगी । लक्षशिरा का पुत्र गर्जना कर उठा । उसने हनुमान को पकड़कर आकाश में नचा दिया । १४३-१४४ उन्हें ले जाकर असुर ने प्रचण्ड पर्वत पर दे पटका । पर्वत के फटकर दो खण्ड हो गए । १४५ पराक्रमी हनुमान अचेत होकर गिर पड़े । श्रीराम को चारों ओर से सेना ने घेर लिया । १४६ सौ-सौ दैत्य एक साथ घेरकर तीक्ष्ण भालों, बल्लमों से निशाना साधकर मारने लगे । १४७ तेज नोक वाले बरछे, शूल, कंकपत्र तथा मुग्दर लेकर कुपित होकर दैत्य प्रहार करने लगे । १४८ फिर वीरों ने धनुष पर तीक्ष्ण बाण चढ़ाकर श्रीराम के ऊपर छोड़े । १४९ जो वर्षाकाल की वृष्टि के समान थे । समरभूमि में दिन में भी अँधेरा दिखाई देता था । १५० हनुमान को फेंककर दैत्य ने दौड़कर प्रचण्ड पर्वत को हाथों से पकड़कर उखाड़ लिया तथा उसे श्रीराम के ऊपर फेंक दिया । रघुवीर श्रीराम ने हटकर अपना अंग छिपा

देखिलाक चारि पार्श्वे किछि न दिशइ ।
श्रीरामंक वर्ण चिन्ह न पाइला काहिँ ।। १७१ ।।
अन्धकार प्राये देखि जाए हनुमान ।
सैन्यरे पशिला जाइँ अंजनानन्दन ।। १७२ ।।
काया बढ़ाइला बीर द्वादश जोजन ।
दुइ भुजे दराण्डिण धरे दैत्य सैन्य ।। १७३ ।।
दशविंश पंचविंश धरि दराण्डइ ।
मररे असुरे बोलि कचाड़ि दिअइ ।। १७४ ।।
पुणि डेइँ डेइँ जाइँ सैन्यंक भितरे ।
काळसर्प जेन्हे पशे मण्डूकी दलरे ।। १७५ ।।
दधिभाण्ड मध्ये खुआ जेसने पशइ ।
कदळी बनकु जेन्हे मतंग भांगइ ।। १७६ ।।
महाकोपे जुद्ध करे हनुमन्त बीर ।
एककु कचाड़ु अछि आरेक उपर ।। १७७ ।।
काहाकु बिधाए मारे काहाकु खुन्दए ।
काहाकु धरिण पुणि मारे गोइठाए ।। १७८ ।।
काहाकु गुड़ाइ लांजे गगने बुलाइ ।
रथर उपरे रथ नेइ कचाड़इ ।। १७९ ।।

अचेत पड़े थे, चौंककर शीघ्र ही उठकर युद्धभूमि की ओर देखने लगे । १७० उन्होंने देखा कि चारों ओर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा । श्रीराम का तो निशान भी कहीं नहीं मिला । १७१ हनुमान को चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा दिख रहा था । तभी आञ्जनेय सेना के बीच में घुस गए । १७२ वीर ने अपनी काया का विस्तार बारह योजन कर लिया और दैत्य-सेना को खदेड़कर पकड़ने लगे । १७३ वह दस-बीस-पचीस को दौड़ाकर पकड़ लेते और 'अरे राक्षस मर' कहकर पछाड़ने लगे । १७४ जैसे काल सर्प मेढकों के समूह में घुसता है; दही के पात्र में जैसे मथानी घुसती है, उसी प्रकार कूदकर सेना के भीतर पैठकर कदली के वन को हाथी के समान नष्ट-भ्रष्ट करने लगे । १७५-१७६ वीर हनुमान अत्यन्त कुपित होकर युद्ध करने लगे । एक को दूसरे के ऊपर पछाड़ने लगे । १७७ किसी को पूँछ से प्रहार करते, किसी को कचर देते और किसी को पकड़ कर थपकी दे-देकर मारने लगे । १७८ किसी को पूँछ में लपेटकर आकाश में नचाते थे । रथ को लेकर रथ के ऊपर पटक देते थे । १७९

कार मुण्ड धरि कोपे मोड़े हनुवीर।
अश्वकु कचाड़े नेइ अश्वर उपर ॥ १८० ॥
उच्चस्वरे डाकिलारे दैत्य आज मल।
श्रीराम ठाकुरंकर दोरेहा होइल ॥ १८१ ॥
महाकोपे जुद्धकरे पवनकुमर।
जुदे मारि असुरंकु करे छारखार ॥ १८२ ॥
घड़ी एक जुद्ध कला अंजनानन्दन।
एगार जोजन जाए पड़िगले सैन्य ॥ १८३ ॥
मृत्युशव पड़िलाक पर्वत आकार।
रुधिर रे जरजर पवन कुमर ॥ १८४ ॥
दैत्यंकर कर मृत्यु देखि राजा सहोदर।
आरे रे बानर बोलि धाइँला असुर ॥ १८५ ॥
हनुमन्त वीर कु जे आकर्षिला जाइँ।
बज्रविधा गोटा एक माइला निठाइ ॥ १८६ ॥
मुहिँ माड़ि पड़िला से हनुमन्त बीर।
श्रीराम सुमरि पुणि उठिला सत्वर ॥ १८७ ॥
दइतर कन्धपरे जाइण बसिला।
तिनिमुण्ड धरि हनुमन्त जे झिकिला ॥ १८८ ॥

किसी का शिर पकड़कर क्रोध से हनुमान जी मरोड़ देते और घोड़े को लेकर घोड़े के ऊपर पछाड़ देते थे। १८० ऊँचे स्वर में वह चिल्ला पड़ते कि अरे दैत्य ! तू आज मरा। भगवान् श्रीराम के द्रोही बने हो। १८१ पवनपुत्र बड़े क्रोध में भरे हुए युद्ध कर रहे थे। संग्राम में असुरों को मारकर नष्ट-भ्रष्ट कर देते थे। १८२ अंजनानन्दन ने एक घड़ी पर्यन्त युद्ध किया। ग्यारह योजन पर्यन्त सेना गिरी पड़ी थी। १८३ मृतक-शव पर्वत के आकार में पड़े हुए थे। पवनकुमार रक्त से लथपथ हो गए थे। १८४ दैत्यों को मरते हुए देखकर राजा का भाई, "अरे रे बन्दर ! इधर आ।" कहकर दौड़ पड़ा। १८५ उसने जाकर पराक्रमी हनुमान को खींचकर पकड़ लिया तथा ताककर एक बज्र-मुष्टिका जड़ दी। १८६ पराक्रमी हनुमान मुँह के बल गिर गए। फिर श्रीराम का स्मरण करके शीघ्र ही उठ बैठे। १८७ वह दैत्य के कन्धे पर जा बैठे। हनुमान जी ने उसके तीनों शिरों को पकड़कर झकझोर दिया। १८८ उन्होंने थप्पड़

श्रीरामंक उपरकु माइला असुर ।
अपसरि अंग लुचाइले रघुबीर ।। १५२ ।।
देवताए एहा देखि हाहाकार कले ।
भो धर्म रामकु रख बोलिण डाकिले ।। १५३ ।।
समुद्ररे से पर्वत पड़िलाक जाइँ ।
से पर्वत पड़न्तेण पृथिवी कम्पइ ।। १५४ ।।
पुनरपि रघुनाथ हेले अगुसार ।
दैत्य उपरकु बिन्धिलेक लक्षेशर ।। १५५ ।।
से शर दैत्यर हृदे पड़ि हेला चूर्ण ।
पाञ्चलक्ष बाण पुण बिन्धिले श्रीराम ।। १५६ ।।
से शरकु दैत्य भुजे आकर्षि मांगिला ।
धनुधरि लक्षे बाण बेगे प्रहारिला ।। १५७ ।।
कतुरी बाणरे काटि देले रघुबीर ।
भुजबाण मंत्रि बेगे बिन्धिला असुर ।। १५८ ।।
देव गणे ताहा देखि कले हाहाकार ।
निश्चे एहि बाणे ध्वंस होइला संसार ।। १५९ ।।
तेजर आघाते तिनि ब्रह्माण्ड दहइ ।
नीळ बाण बिन्धि बेगे प्रभु रघुसाइँ ।। १६० ।।

लिया । १५१-१५२ यह देखकर देवतागण हाहाकार करने लगे । उन्होंने कहा, हे धर्मदेव ! श्रीराम की रक्षा करो । १५३ वह पर्वत समुद्र में जा गिरा । उसके गिरने से पृथ्वी कांप गई । १५४ फिर से रघुनाथ जी ने आगे बढ़कर दैत्य के ऊपर एक लाख बाण छोड़े । १५५ असुर के हृदय में लगाकर वह सारे बाण चूर-चूर हो गए । श्रीराम ने फिर पाँच लाख बाण छोड़ दिए । १५६ उन बाणों को दैत्य ने हाथों से खींच कर तोड़ डाला और शीघ्र ही धनुष उठाकर एक लाख बाणों से प्रहार कर दिया । १५७ रघुवीर ने कर्तुरी बाण से उन्हें काट दिया । फिर शीघ्र ही दैत्य ने भुजबाण अभिमंत्रित करके छोड़ दिया । १५८ ऐसा देखकर देवता हाहाकार करके कहने लगे कि अब इस बाण से तो निश्चय ही तीनों लोक ध्वंस हो जाएँगे । १५९ तेज की प्रखरता से तीनों लोक जले जा रहे थे । प्रभु रघुनाथ जी ने शीघ्र ही नील बाण का प्रहार करके उस बाण को आकाश में ही काट गिराया, जिसे देखकर असुर

काटि पकाइले गगनरे सेहि शर ।
ताहा देखि हाहाकार कलेक असुर ।। १६१ ।।
देखिण कोदण्डधारी प्रभु रघुवीर ।
कोपेण बिन्धिले जे अढ़ाइ लक्ष शर ।। १६२ ।।
वज्र तुल्य शर दैत्य अंगरे बाजइ ।
उपुड़ि से शर पड़े खण्ड खण्ड होइ ।। १६३ ।।
उच्चे डाके आरे राम आजिजिबु काहिं ।
जमर भवन तोते देखाइबि नेइ ।। १६४ ।।
आजि तुहि पड़िअछु अग्रते मोहर ।
एहि क्षणि मुहिँ मुण्ड काटिबि तोहर ।। १६५ ।।
कोपरे त्रिशिरा वीर कम्पे घन-घन ।
निश्वास शुभइ जेन्हे मेघ गरजन ।। १६६ ।।
कहुँ कहुँ बीर जे मुद्गर धरि करे ।
कोपे प्रहारिला नेइ रामंक उपरे ।। १६७ ।।
असुर बळ जे चारि पारुशरे थिले ।
शतेपूर करिण जे राम कु बेढ़िले ।। १६८ ।।
बाण बिना मेदिनीरे किछि न दिशइ ।
अगोचर समर जे कळना न जाइ ।। १६९ ।।
बीरबर हनुमन्त मोहे पड़िथिला ।
चेइँ उठि बेगे जुद्धभुमिकि चाहिँला ।। १७० ।।

हाहाकार मचाने लगे । १६०-१६१ यह देखकर कोदण्डधारी प्रभु रघुवीर ने क्रोध में ढाई लाख बाण छोड़ दिये । १६२ बज्र के समान बाण दैत्य के अंग में लगते ही उखड़कर टुकड़े-टुकड़े होकर गिर गए । १६३ असुर ने ऊँचे स्वर में कहा, अरे राम ! आ । आज तू कहाँ जायेगा ? तुझे लेकर यमराज का घर दिखा दूँगा । १६४ आज तू मेरे आगे पड़ा है । मैं इसी समय तेरा शिर काट दूँगा । १६५ पराक्रमी त्रिशिरा क्रोध से तमतमाता हुआ काँप रहा था । उसकी श्वास बादलों की गरज जैसी सुनाई पड़ रही थी । १६६ बातों ही बातों में उस वीर ने मुग्दर लेकर श्रीराम के ऊपर कुपित होकर प्रहार किया । १६७ असुरदल, जो चारों ओर थे, उनमें सैकड़ों ने मिलकर राम को घेर लिया । १६८ पृथ्वी पर बाण छोड़कर और कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा था । ऐसा युद्ध पहले कभी न तो देखा गया था और न उसकी कल्पना ही की जा सकती थी । १६९ पराक्रमी हनुमान, जो

शुणि बेनि दैत्य धनु धरिण धाइँले ।
लक्ष लक्ष नराच जे रामंकु बिन्धिले ॥ २०७ ॥
वाणेक बिन्धिले राम तुणिररु काढ़ि ।
बेनि खण्ड होइतार शिर गला छिड़ि ॥ २०८ ॥
कोपे बेनि दैत्य करि घोर गरजन ।
रामंकु बिन्धिले पुणि पाञ्चलक्ष बाण ॥ २०९ ॥
बाणमान आकाशकु कले आच्छादन ।
कतुरी शारे ताहा निवारिले राम ॥ २१० ॥
शकति मुषळ पुणि माइले असुर ।
ब्रह्मबाणे निवारिले ताहा रघुबीर ॥ २११ ॥
अमोघ शकति एक गुणरे बसाइ ।
राम उपरकु अम्बु दैत्य बिन्धइ ॥ २१२ ॥
देखि रघुनाथ ज्वाळावळी बाण मारि ।
पाशुपत बाण पुणि बिन्धि चापधारी ॥ २१३ ॥
बेनि असुरंक मुण्ड काटि पकाइले ।
श्रीरामंक शिरे देव पुष्प वृष्टिकले ॥ २१४ ॥
एथु अनन्तरे शुण देवी गो भवानी ।
मले जहुँ अम्बु कम्बु एहि दैत्य बेनि ॥ २१५ ॥
प्रळम्बा नामरे थिला एकइँ असुर ।
अम्बासुर अटे पुणि तार सहोदर ॥ २१६ ॥

दैत्य धनुष लेकर दौड़े और लाख-लाख बाण श्रीराम पर छोड़ने लगे । २०७ श्रीराम ने तरकश से एक बाण निकालकर छोड़ दिया जिससे उसका शिर दो खण्ड होकर कट गया । २०८ कुपित होकर दोनों दैत्यों ने भीषण गर्जना करते हुए श्रीराम पर पाँच लाख बाण छोड़े । २०९ उन बाणों से गगनमण्डल ढक गया । तब श्रीराम ने कर्तुरी बाण चढ़ाकर उन्हें नष्ट कर दिया । २१० फिर राक्षस ने शक्ति और मूषल से प्रहार किया, जिसे पराक्रमी राम ने ब्रह्मबाण से काट दिया । २११ तब अम्बु दैत्य ने एक अमोघ शक्ति का सन्धान करके उसे श्रीराम पर छोड़ दिया । २१२ यह देख श्रीरघुनाथ ने ज्वालावली बाण से प्रहार किया और फिर धनुर्धारी राम ने पाशुपत बाण छोड़कर दोनों असुरों के शिर काट डाले । देवताओं ने श्रीराम के शिर पर पुष्प बरसाए । २१३-२१४ हे भवानी ! इसके पश्चात् सुनो ! जब अम्बु और कम्बु दोनों दैत्य मर गए तब प्रलम्बा नाम

ए बेनि असुर क्रोधे प्रज्वळित होइ ।
चारि दिगे श्रीरामंकु बेढ़िलेक जाइ ॥ २१७ ॥
बिन्धुछन्ति बाण शल्य कुन्त अंकुपत्र ।
गदा मुगदर घाते भांगन्ति पर्वत ॥ २१८ ॥
पर्वत कन्दर वृक्ष हेला कम्पमान ।
बाणाघाते बसुमती कम्पे घन-घन ॥ २१९ ॥
हनुमन्त बीर घोर जुद्ध जे करइ ।
असुरंक गरजने सिन्धु उछुळई ॥ २२० ॥
बाण बिन्धि दैत्यगणे हेले अशकत ।
असुरंकु मारि न पारिले रघुनाथ ॥ २२१ ॥
विस्मय मनरे तहुँ भाळिले श्रीराम ।
बोइले मुँ आउ केते करिबि संग्राम ॥ २२२ ॥
मरन्ते असुरे मुँ पशिबि बनरे ।
स्वर्गपुरे पच्छे भोग करन्तु असुरे ॥ २२३ ॥
ताहा देखि विस्मय होइले देवगण ।
थरहर कम्पिला से अमर भुबन ॥ २२४ ॥
ब्रह्मा डाक देले शुण आहे रघुबीर ।
ए स्वर्गपुरकु निश्चे भांगिबे असुर ॥ २२५ ॥

का जो एक दैत्य था तथा जिसके भाई का नाम अम्बासुर था। २१५-२१६ इन दोनों असुरों ने क्रोध में जलते हुए चारों ओर से श्रीराम को घेर लिया। २१७ शल्य, कुन्त, अंकुपत्र आदि अस्त्र-शस्त्र छोड़ने लगे तथा गदा व मुग्दर के आघात से पहाड़ को भी तोड़ने लगे। २१८ पहाड़, कन्दराएँ और वृक्ष कम्पित होने लगे। बाणों के आघात से मेदिनी थर-थर काँपने लगी। २१९ पराक्रमी हनुमान भयानक युद्ध कर रहे थे। राक्षसों के गर्जन से समुद्र उद्वेलित होने लगा। २२० बाणों से बिंधकर दैत्यों के समूह अशक्त हो गए, फिर भी रघुनाथ जी असुर (त्रिशिरा) का वध नहीं कर सके। २२१ श्रीराम विस्मित होकर मन में विचार करने लगे कि मैं और कितना युद्ध करूँगा। २२२ दैत्य जब मर ही नहीं रहा तो वन में चला जाऊँगा, भले ही पीछे राक्षस स्वर्ग का उपभोग करें। २२३ यह देखकर देवता आश्चर्यचकित हो गए। स्वर्गलोक थर्रा कर काँप उठा। २२४ ब्रह्मा जी ने पुकार लगाई, हे पराक्रमी राघव ! सुनिए। इस स्वर्गलोक को राक्षस लोग निश्चित रूप से नष्ट कर डालेंगे। २२५

चापुड़े पकाइ तार छिण्डाए मुकुट ।
गगनरे उड़इ से पवनर चाट ॥ १८९ ॥
उपरकु डेइँ जाइ प्रतापी असुर ।
शावेळि मुद्गर घेनि मारे दैत्यवीर ॥ १९० ॥
ताहा बञ्चाइण बेगे धाइँला मारुति ।
दइत उपरे पाद प्रहारिला घाति ॥ १९१ ॥
हनु पदाघाते दैत्य भुमिरे पड़िला ।
हनुमन्त असुरकु माड़िण बसिला ॥ १९२ ॥
तार गळगण्डे नेइ लगाइला कर ।
हृदयरे नातेक माइला हनुबीर ॥ १९३ ॥
असुर सम्हाळि न पारिला पदाघात ।
रुधिर उद्गारि तळे पड़िला दइत ॥ १९४ ॥
अचेतन होइला से रावणर भाइ ।
एहा देखि हनुमन्त माइला तुहाइ ॥ १९५ ॥
सातपद्म सेना तार पाखे रहिथिले ।
एका बेळके से कोपे अस्त्र उठाइले ॥ १९६ ॥
रघुनाथंक पाशरे बेढ़िलेक जाइ ।
शेल कुन्त शावेळि जे मारन्ति तुहाइ ॥ १९७ ॥

मारकर उसके मुकुट तोड़ डाले तथा पवननन्दन आकाश में उड़ गये । १८९ प्रतापी दैत्य ऊपर की ओर छलाँग लगाकर शावेल और मुग्दर से प्रहार करने लगा । १९० हनुमान जी ने वेग से दौड़कर उस वार को बचा लिया और दैत्य के ऊपर घात लगाकर पैर से प्रहार किया । १९१ उनके पदाघात से दैत्य भूमि पर गिर पड़ा । फिर हनुमन्तलाल उस पर चढ़ बैठे । १९२ उन्होंने उनके गले में हाथ डालकर छाती में पैर से एक ठोकर दी जिसे वह राक्षस सम्हाल नहीं पाया । वह दैत्य रक्त का वमन करते हुए नीचे गिर पड़ा । १९३-१९४ वह रावण का भाई अचेत हो गया । हनुमान ने यह देखकर खींचकर मारा । १९५ उसके निकट ही सात पद्म सेना थी जिसने कुपित होकर एकबारगी अस्त्र उठा लिये । १९६ सेना ने जाकर रघुनाथ जी को समीप से घेर लिया । शेल, कुन्त, शावेल शस्त्रों से खींच-खींचकर प्रहार करने लगे । १९७ धनुष उठाकर वह लाख-लाख

धनुधरि मारन्ति से लक्ष लक्ष शर ।
घोर जुद्ध करुछन्ति प्रभु रघुवीर ॥ १९८ ॥
बाणे बाणे परिताळ करन्ति श्रीराम ।
अनुक्षणे हेला तहिँ भीषण संग्राम ॥ १९९ ॥
कम्बु अम्बु नामरे जे ए बेनि असुर ।
पांच लक्ष रथ घेनि हेले आगुसार ॥ २०० ॥
रामंक उपरे बिन्धिलेक लक्षे बाण ।
तिनि बाणे ता काटिले कोदण्ड धारण ॥ २०१ ॥
एहा देखि बेनि दैत्य कोपे परज्वळि ।
श्रीरामंकु अनाइण देउछन्ति गाळि ॥ २०२ ॥
आरे रे मानव निश्चे मरिबु तु आज ।
जाणिथा तो पांजि पोछु अछि जन्तुराज ॥ २०३ ॥
लंकापुर प्राये बुझिछु कि एहु पुर ।
एथकु अइल मृत्यु घेनि रघुबीर ॥ २०४ ॥
श्रीराम बोइले आरे रे मूर्ख पामर ।
प्रचण्ड अनळ पोड़ि पारे कि सागर ॥ २०५ ॥
मुहिँत सागर तुहि प्रचण्ड अनळ ।
लिभाइ देउछि तो ते नुह तु आकुळ ॥ २०६ ॥

बाण मारने लगे। प्रभु राघवेन्द्र घनघोर युद्ध कर रहे थे। १९८ श्रीराम का प्रत्येक बाण दबाव बढ़ा रहा था। हर क्षण वहाँ पर घनघोर युद्ध हो रहा था। १९९ कम्बु तथा अम्बु नाम के दोनों असुर पाँच लाख रथ लेकर आगे बढ़ आए। २०० उन्होंने श्रीराम पर एक लाख बाणों से प्रहार किया। धनुर्धारी श्रीरामचन्द्र जी ने तीन बाणों से उनके बाणों को काट फेंका। २०१ यह देखकर दोनों असुर क्रोध से प्रज्वलित होकर श्रीराम को गालियाँ देने लगे। २०२ अरे मानव! तू आज निश्चय ही मृत्यु को प्राप्त होगा। यह तू समझ ले कि तुम्हारी जन्मपत्री का लेख यमराज मिटा रहा है। २०३ क्या तुम इस नगर को भी लंका के समान ही समझ रहे हो? पराक्रमी राघव तू अपनी मृत्यु लेकर यहाँ आया है। २०४ श्रीराम ने कहा, अरे मूर्ख नीच! आ जा। क्या प्रचण्ड अग्नि समुद्र को जला सकती है? २०५ तू प्रचण्ड अग्नि और मैं सागर के समान हूँ। तू व्यग्र मत हो, इसे मैं अभी बुझाए देता हूँ। २०६ यह सुनकर दोनों

तुहि जेबे न मारिब आउ के मारिब ।
तोहरे शरण गलु एबे सर्बदेव ।। २२६ ।।
न छाड़न्तु धनु देव मारलंकपति ।
एहाकु मारिले निश्चे रहिब कीरति ।। २२७ ।।
एते बोलि देवगणे बड़ भय कले ।
बिजया नामरे रथ ब्रह्मा भिआइले ।। २२८ ।।
चित्रसेनकु बोइले रथघेनि जिबु ।
श्रीरामंक रथरे तु सारथि होइबु ।। २२९ ।।
जेमन्ते बिलंकादेश नृपति मरइ ।
देवतांक कार्ज वेगे कर बाबु जाइ ।। २३० ।।
एहा शुणि चित्रसेन आरोहि बिमान ।
गगन मार्गरे शीघ्र चलाइले जान ।। २३१ ।।
श्रीरामंक आगे बीर मिळिलाक जाइ ।
पादे पड़ि चित्रसेन गन्धर्व बोलइ ।। २३२ ।।
भो देव ए रथ देइ छन्ति बेदवर ।
ए रथरे थाइ देब करिब समर ।। २३३ ।।
एहा शुणि रघुनाथ आनन्द होइले ।
से रथ उपरे राम जाइ बिजेकले ।। २३४ ।।

यदि आप ही इनका वध नहीं करेंगे तो फिर और कौन मारेगा । अब सभी देवता आपकी शरण हैं । २२६ हे देव ! आप धनुष का परित्याग न करके बिलंकापति का वध कर दें । इसे मारने से निश्चित ही आपकी कीर्ति की वृद्धि होगी । २२७ इतना कहते हुए समस्त देवता बड़े भयभीत हो गए । प्रजापति ब्रह्मा ने विजय नामक रथ की सृष्टि की । २२८ उन्होंने चित्रसेन से कहा कि तुम यह रथ लेकर श्रीराम के समीप जाओ और उनके रथ के सारथी बनो । २२९ हे तात ! जिस प्रकार बिलंका नरेश की मृत्यु हो सके उसी प्रकार जाकर देवताओं का काम बनाओ । २३० यह सुनकर चित्रसेन विमान पर चढ़ गया और उस यान को शीघ्रता से आकाश-मार्ग पर चलाने लगा । २३१ वीर चित्रसेन (गंधर्व) आगे जाकर श्रीराम से मिला और उनके चरणों में प्रणाम करके बोला । २३२ हे देव ! यह रथ ब्रह्मा जी ने दिया है । आप इस पर चढ़कर युद्ध करें । २३३ यह सुनकर रघुनाथ जी प्रसन्न हो गये और उस रथ पर चढ़कर विराजमान हो गए । २३४ देवताओं के बाणों द्वारा ताक-

देवतांक शरमान मारन्ति निठाइ ।
घोर जुद्ध आरम्भिले रघुकुळ साइँ ॥ २३५ ॥
कुराळर चक्रप्राये उड़इ बिमान ।
असुरंक मुण्ड राम करन्ति छेदन ॥ २३६ ॥
पड़न्ति असुरे पुणि उठन्ति गलगाजि ।
गड़न्ति मरन्ति रणे धनु शर तेजि ॥ २३७ ॥
भीषण समर कला हनुमन्त बीर ।
लक्ष लक्ष गले दैत्य संजीवनी पुर ॥ २३८ ॥
पड़न्ति कदळी बन पराये असुर ।
जळधारा प्राय बहि पड़इ रुधिर ॥ २३९ ॥
एहा देखि शम्बु दैत्य आसे कोपभरे ।
निशम्बु दैत्य पुणि धाइँला शुन्यरे ॥ २४० ॥
प्रळम्बा कदम्बा बेणुधाता नामे दैत्य ।
लोहिताक्ष पिंगळाक्ष नामे बळवन्त ॥ २४१ ॥
श्रीरामचन्द्रंकु चारि पारुशे बेढ़न्ति ।
अनुक्षणे लक्ष लक्ष बाण बरषन्ति ॥ २४२ ॥
से नाराच पड़िअछि जळधारा प्राय ।
बेनि खण्ड करिण काटन्ति रघुराय ॥ २४३ ॥

ताक कर प्रहार करते हुए रघुनाथ जी ने भीषण युद्ध प्रारम्भ कर दिया । २३५ कुम्भकार के चक्के के समान घूमता हुआ विमान उड़ने लगा और श्रीराम राक्षसों के शिर काटने लगे । २३६ असुर दल गिर पड़ते, फिर लड़खड़ाकर तमतमाते उठते और फिर गिरकर समरभूमि में धनुष-बाण छोड़कर मृत्यु को प्राप्त हो रहे थे । २३७ पराक्रमी हनुमान ने भयंकर युद्ध किया । लाखों दैत्य यमपुर को चले गये । २३८ राक्षस कदली के जंगल के समान गिर रहे थे । जलधारा के समान रक्त बह रहा था । २३९ यह देख शम्बु दैत्य कुपित होकर आगे बढ़ा और निशम्बु दैत्य आकाश में वेग से उड़ने लगा । २४० प्रलम्बा, कदम्बा, वेणुधाता, लोहिताक्ष तथा पिंगलाक्ष नामक वीर दैत्य श्रीराम को चारों ओर से घेरने लगे और प्रतिक्षण लाख-लाख बाणों की वर्षा करने लगे । २४१-२४२ जलधारा के समान वह बाण गिर रहे थे । रघुकुल में श्रेष्ठ राम उन्हें दो खण्डों में काटते जाते थे । २४३ इसी समय त्रिशिरा ने रघुनाथ जी को

एकाळे त्रिशिरा श्रीरामंकु देला चाहिँ।
बिजया रथरे बसि छन्ति रघुसाइँ ॥ २४४ ॥
एहा देखि असुरर न स्फुरइ किछि।
चमत्कार होइ शम्बु दइत्यकु पुच्छि ॥ २४५ ॥
ए रथ आणिला काहुँ एहि रघुबीर।
देवंकर जान एहि थिला स्वर्गपुर ॥ २४६ ॥
शम्बु दैत्य बोले देले आणि देवगण।
ए रथ उपरे जुद्ध करे रघुराण ॥ २४७ ॥
श्रीरामंकु इतर तु न मणरे भाइ।
परंब्रह्म पुरुष ए श्रीराम अटइ ॥ २४८ ॥
नृपति बुझिले सिना होइब त सबु।
नोहिले एहार हस्ते मरिबा रे बाबु ॥ २४९ ॥
त्रिशिरा बोइला चाल राजांकु कहिबा।
श्रीरामंक संगतरे प्रीति बढ़ाइबा ॥ २५० ॥
एमन्त प्रकारे बेनि दैत्य बिचारिले।
रणभूमि तेजि दुहेँ अपसरि गले ॥ २५१ ॥
देखिले सैन्यरु आउ गोटि एक नाहिँ।
रुधिरमय जे चारि दिग दिशु छइँ ॥ २५२ ॥
देखि करि पाञ्च बीर होइले बाहार।
पळाइ पशिले जाइ बिलंका नगर ॥ २५३ ॥

विजयरथ पर बैठे हुए देखा। २४४ यह देखकर असुर स्तब्ध रह गया। चौंककर उसने शम्बु दैत्य से पूछा। २४५ यह रघुबीर यह रथ कहाँ से ले आया? यह देवरथ तो स्वर्गलोक में था। २४६ शम्बु दैत्य ने कहा कि इसे देवताओं ने लाकर दिया है, जिस पर बैठकर रघुनाथ युद्ध कर रहा है। २४७ अरे भाई! श्रीराम को तुम अन्य कुछ न समझो। यह तो परमब्रह्म परमपुरुष है। २४८ अरे! राजा के समझने से ही तो सब होगा, नहीं तो भाई! इसी के हाथों मरना पड़ेगा। २४९ त्रिशिरा बोला, "चलो चलकर राजा से सब कुछ कह दें तथा श्रीराम के साथ मित्रता बढ़ाएँ।" २५० दोनों दैत्य इस प्रकार विचार करके समर-भूमि छोड़कर चले गये। २५१ उन्होंने देखा कि सम्पूर्ण सेना में एक भी सैनिक नहीं बचा। चारों दिशाएँ रक्तरंजित दिखाई दे रही थीं। २५२ देखकर पाँच योद्धा बाहर निकले और भागकर बिलंका नगरी में जा

गोड़ाइ मारन्ति तांकु राम हनुमान ।
उबुरा सैन्यकु संघारिले रघुनान ॥ २५४ ॥
एक मुख होइ तहुँ दैत्य पळाइले ।
बिलंका नगरे राजा आस्थाने मिळिले ॥ २५५ ॥
गढ़द्वार परिजन्ते गोड़ाइले राम ।
बाहुड़ि पर्वते आसि कलेक विश्राम ॥ २५६ ॥
रथ रखिलेक नीळसुन्दर पर्वते ।
संग्राम भूमिकि चाहिँ देले रघुनाथे ॥ २५७ ॥
देखिले अनेक थाट पड़िले समरे ।
हुरि जुरि पड़ुअछि बिलंका नगरे ॥ २५८ ॥
हनुकु बोइले प्रभु रघुकुळ बर ।
देख केते आजि जुद्धे मरिले असुर ॥ २५९ ॥
मारिबि दइत्यकुळ उश्वसिबि पृथ्वी ।
लुहामइ बुलाइब चित्रसेन एथि ॥ २६० ॥
एते कहि रघुनाथ रथरु उतुरि ।
समुद्ररे पशि स्नान कले चापधारी ॥ २६१ ॥
पितृ तरपण आदि कले रघुबीर ।
पर्वतरे बिजे कले से कोदण्डधर ॥ २६२ ॥

घुसे । २५३ रामचन्द्र जी तथा हनुमान उन्हें दौड़ा-दौड़ाकर मार रहे थे । श्री राघव ने बची-खुची सेना का भी संहार कर डाला । २५४ दैत्य एक ओर ही मुख उठाकर भागे तथा बिलंका नगर में राजा के सिंहासन तक जा पहुँचे । २५५ श्रीराम ने उन्हें दुर्ग के द्वार तक खदेड़ा और फिर लौटकर पर्वत पर आकर विश्राम किया । २५६ रथ को नील सुन्दर पर्वत पर रखकर रघुनाथ जी ने समरभूमि की ओर दृष्टिपात किया । २५७ उन्होंने देखा कि रणांगण में अनेक सैन्य मरी पड़ी है । बिलंका नगर में रुदन-क्रन्दन का कोलाहल मचा था । २५८ रघुश्रेष्ठ भगवान राम ने हनुमान से कहा कि देखो, आज युद्ध में कितने राक्षस मर गए हैं । २५९ दैत्यकुल का संहार करके हम पृथ्वी का भार हटाएँगे । हे चित्रसेन ! यहाँ लोहे की सिरावन चला देंगे । २६० इतना कहकर रघुनाथ जी रथ से उतर पड़े । उन धनुर्धारी ने सागर में घुसकर स्नान किया । २६१ पितृतर्पण आदि कृत्य समाप्त करके कोदण्डधारी राम

फळमूळ जोगाइले पवननन्दन ।
से फळ भोजन सुखे कलेक श्रीराम ।। २६३ ।।

त्रिशिरा ओ रावणर कथोपकथन, राजयुद्धकु गमन, राम ओ देवगण सह युद्ध युद्धरु दण्डभग्न होइ पळाइ आसि निजर आत्म खेद ओ रात्ररे दुःस्वप्न देखिबा

एथु अन्ते जाहा हेला शुण गो पार्वती ।
शुणिले निश्चये भबु लभिब मुकति ।। १ ।।
सामबेदु बाल्मीकि करिछन्ति जात ।
श्रीसिद्ध शारळादास कले ताहा गीत ।। २ ।।
शुणन्ते शुणान्ते देहे पाप न रहइ ।
एकमने एकध्याने शुण प्राणसही ।। ३ ।।
शुणिण पार्वती देवी जोड़िलेक कर ।
बोइले मुकति मोते कर शूळधर ।। ४ ।।
जुद्धतेजि पळाइले बिलंका असुरे ।
कि बिचार कले जाइँ राजा संगतरे ।। ५ ।।
एहा मोते बिचारिण कुह प्राणसाइँ ।
ईश्वर बोइले ताहा शुण मनदेइ ।। ६ ।।

पर्वत पर पहुँचे । पवननन्दन ने जो फल-मूल एकत्रित किये थे उन्हें श्रीराम ने सुखपूर्वक खाया । २६२-२६३

त्रिशिरा और बिलंकेश्वर का कथोपकथन; राजा का प्रथम बार युद्ध हेतु गमन; राम तथा देवताओं के साथ उसका युद्ध; युद्ध में दण्ड भग्न होने से पलायन व आत्मखेद तथा रात्रि में स्वप्न-दर्शन

हे देवी पार्वती ! इसके पश्चात् जो भी हुआ उसे श्रवण करो । इसे श्रवण करने से निश्चय ही संसार से मुक्ति प्राप्त होगी । १ वाल्मीकि जी ने सामवेद से इसे रचा है । श्री सिद्ध शारलादास ने इसकी रचना गीतों में की है । २ सुनने और सुनाने से शरीर में पाप नहीं रह पाता । हे प्राणसहचरी ! एकाग्र चित्त से ध्यानपूर्वक श्रवण करो । ३ यह सुनकर देवी पार्वती ने हाथ जोड़कर कहा, हे शूलपाणि ! मुझे मुक्ति प्रदान करें । ४ जब असुर युद्ध को छोड़कर बिलंका में भाग गए तो उन्होंने जाकर राजा के साथ क्या विचार-विमर्श किया । ५ हे प्राणनाथ ! विचार

राजार अग्रते पाञ्च असुरे मिळिले ।
पादतळे पड़ि कर जोड़ि जणाइले ।। ७ ।।
भो देव ! शुणन्तु एबे होइ सावधान ।
तोर सैन्य बळ सबु माइले श्रीराम ।। ८ ।।
राउत माहुन्त केहि गोटि एक नाहिँ ।
समस्त माइला आजि रणे रघुसाइँ ।। ९ ।।
आम्भे एका पळाइण रखिलु जीवन ।
गोटि एक न बर्त्तिले मले सबुसैन्य ।। १० ।।
शुणिण बिलंका राजा मनरे भाळिला ।
कि रूपे रामंकु मारिबइँ विचारिला ।। ११ ।।
एड़ेक अजेय गढ़े शत्रु होइ मोर ।
सकळ सैन्यकु बध कला रघुबीर ।। १२ ।।
त्रिशिरा बोइला देब उपाय करिबा ।
श्रीराम चरण तळे शरण पोशिबा ।। १३ ।।
राम दया कले आम्भे होइबा अमर ।
जुद्धे केबे जिणि न पारिबा रघुबीर ।। १४ ।।
श्रीराम अटइ साक्षात रे नारायण ।
असुर मारिबा पाइँ होइछि जनम ।। १५ ।।

पूर्वक यह हमसे कहें । शंकर जी ने उनसे ध्यान देकर सुनने के लिए कहा । ६ वह पाँचों राक्षस जाकर राजा से मिले । उसके पैरों पर गिरकर हाथ जोड़कर बोले । ७ हे देव ! अब सावधान होकर सुनें । आपकी समग्र सेना को श्रीराम ने मार डाला है । ८ वीर योद्धा, फीलवान कोई एक भी नहीं बचा । रघुनाथ ने आज रण-प्रांगण में सबका वध कर डाला । ९ केवल हम लोगों ने भागकर अपने जीवन की रक्षा की । समस्त सेना में कोई भी एक नहीं बचा, सभी मारे गये । १० यह सुनकर बिलंका-नरेश हृदय में विचार करने लगा कि राम का वध किस प्रकार किया जाय । ११ इस दुर्जेय गढ़ में मेरा शत्रु बनकर रघुवीर श्रीराम ने मेरी सम्पूर्ण सेना का विनाश कर डाला । १२ त्रिशिरा बोला, हे देव ! उपाय करके श्रीरामचन्द्र के चरणों की शरण ग्रहण कर लें । १३ श्रीराम के दया करने पर हम लोग अमर हो जाएँगे । युद्ध में तो पराक्रमी राघव को कभी भी जीत नहीं पाएँगे । १४ श्रीराम साक्षात् ही नारायण हैं । उनका जन्म ही असुरों का विनाश करने के लिए हुआ

श्रीराम शरण गले भय किछि नाहिँ।
श्रीरामचन्द्रंकु चाल सेबिबा गोसाइँ ॥ १६ ॥
शुणिण दइत्य अंग कम्पे थरहर।
नयन तराटि रागे चाहिँला असुर ॥ १७ ॥
बोइला भाइरे तुहि शत्रुकु डरिलु।
मोहर मरण कथा हृदरे पांचिलु ॥ १८ ॥
श्रीराम त केबे मोते मारि नपारइ।
मोर पराक्रम किबा राम न जाणइ ॥ १९ ॥
तु किम्पाइँ अधइर्ज करुअछु मोते।
जेबे जीवनकु भय लागिलाक तोते ॥ २० ॥
श्रीरामर पाशे जाइँ पश जाशरण।
हेउ पच्छे मोर राम हस्तरे मरण ॥ २१ ॥
तु जाइ शरण पश श्रीराम पादरे।
मुहिँ मले नरपति हेबु ए राज्यरे ॥ २२ ॥
एहा शुणि जे त्रिशिरा दिअइ उत्तर।
बिचारिला कथाकु तु भांगु नृपवर ॥ २३ ॥
जेबण प्राणीर मृत्यु आगत हुअइ।
तिआरिला बोल सेतु अवश्य भांगइ ॥ २४ ॥

है। १५ श्रीराम की शरण ग्रहण करने पर किसी प्रकार का भय नहीं रहेगा। हे नाथ ! चलिए। श्रीरामचन्द्र की सेवा करें। १६ ऐसा सुनते ही दैत्य का शरीर थरथर काँपने लगा। उसने बड़े क्रोध से आँखें तरेरकर देखा। १७ उसने कहा, अरे भाई ! तू शत्रु से भयभीत हो गया। हमारी मृत्यु की बात तुमने अपने हृदय में सोच ली। १८ श्रीराम तो मुझे कभी भी मार नहीं पाएगा। क्या मेरे पराक्रम को राम नहीं जानता। १९ तुम मुझे अधीर क्यों कर रहे हो ? यदि तुम्हें अपनी जिन्दगी का भय लग रहा हो तो श्रीराम के समीप जाकर उसकी शरण ग्रहण कर लो। भले ही बाद में श्रीराम के हाथों मेरा बध हो जाय। २०-२१ तु जाकर श्रीराम के चरणों की शरण ग्रहण कर ले। मेरे मरने पर इस राज्य के स्वामी बन जाओगे। २२ यह सुनकर त्रिशिरा ने उत्तर देते हुए कहा, हे नृपश्रेष्ठ ! आप विचारणीय बात को काट रहे हैं। २३ जब प्राणी की मृत्यु आनेवाली होती है तो वह बनी बनाई योजना को अवश्य ही तोड़ देता है। २४ जब मौत दिखाई पड़ने लगती है तो वह वेद-शास्त्र

वेदशास्त्र निन्दइ से मरण दिशिले ।
विष्णु देवतांकु निन्दा करइ से भले ।। २५ ।।
सभाकु निन्दइ न करइ अग्नि मान्य ।
जळकु निन्दइ पुणि कहे कुबचन ।। २६ ।।
तु मोहर बोल जेवे न कलु राजन ।
श्रीरामंक हस्ते निश्चे होइबु निधन ।। २७ ।।
से रामंकु साहा होइलेणि देवगण ।
बढ़ाइ देलेणि ताकु बिजया बिमान ।। २८ ।।
से रथरे बसि राम समर करइ ।
से रामंकु जिणिबाकु क्षत्री अछि काहीँ ।। २९ ।।
शुणिण से नृपवर महाकोप कले ।
देवगण माने मोर बइरि होइले ।। ३० ।।
देवंकु मारिबि स्वर्गपुर कु भांगिबि ।
काळिर जुद्धकु जाइ रामंकु मारिबि ।। ३१ ।।
एते बोलि नरपति भितरे पशिला ।
विजे अवकाशपुरे जाइण मिळिला ।। ३२ ।।
रत्न पलंकरे जाइ बसिला नृपति ।
परिवारी माने पाशे खटिले तड़ित ।। ३३ ।।

की निन्दा करने लगता है। वह विष्णु देवता की भी निन्दा करने लगता है। २५ वह सभा की निन्दा करके अग्नि को सम्मान भी नहीं देता। जल की निन्दा करते हुए कुवाक्य बोलता है। २६ हे राजन् ! जब आपने मेरी बात नहीं मानी तो आप निश्चय ही श्रीराम के हाथों से मृत्यु को प्राप्त करेंगे। २७ देवगण भी उस राम के सहायक बन गए हैं। उन्होंने श्रीराम को विजय-रथ प्रदान कर दिया है। २८ राम उस रथ पर बैठकर युद्ध करता है। उस राम पर विजय प्राप्त करनेवाला क्षत्री वीर कहाँ हैं ? २९ यह सुनकर राजा अत्यधिक कुपित होकर कहने लगा कि देवता लोग भी हमारे शत्रु बन गये। ३० मैं स्वर्ग को छिन्न-भिन्न करके देवताओं का संहार कर डालूँगा। कल युद्ध में जाकर मैं राम का वध कर दूँगा। ३१ इतना कहकर बिलकेश्वर भीतर चला गया और विश्राम-कक्ष में जा पहुँचा। ३२ राजा रत्न-पर्यंक पर जा बैठा ! शीघ्र ही परिचारिकाएँ सेवा में जुट गईं। ३३ लाखों दीपक चारों ओर जल

लक्ष लक्ष हुळा जळु अछि चउँपाश ।
श्रीरामंक कथा मने भाळइ नरेश ।। ३४ ।।
एमन्त समये शुण आगे हैमवती ।
बिलंका पुररे लोके बिकळ हुअन्ति ।। ३५ ।।
केहि केहि एका बसि करन्ति रोदन ।
केहि भारिजाकु घेनि करइ क्रन्दन ।। ३६ ।।
पुत्र दुहिताकु केहि घेनि संगतरे ।
रोदन करन्ति घरे घरे उच्च स्वरे ।। ३७ ।।
के बोलइ मोर पुत्र आजि जुद्धे मला ।
के बोले मोहर आजि गुरस्त पड़िला ।। ३८ ।।
के बोले मोहर रणे पड़िला जुआइँ ।
जुआकाळे झिअ मोर बिधवा हुअइ ।। ३९ ।।
के बोलइ जुद्धे मला मोहर दिअर ।
के बोलइ मला जे मोहर देढ़सुर ।। ४० ।।
के बोले मला मोहर एक गोटि बळा ।
ए अजय गढ़ें शत्रु श्रीराम होइला ।। ४१ ।।
मर्कटेक घेनि काहुँ अइला श्रीराम ।
एका जणकरे माइलाक एते सैन्य ।। ४२ ।।

रहे थे। राजा श्रीराम के विषय में ही मन में सोच रहा था। ३४ हिमांचलकुमारी ! इस समय अब आगे की (कथा) सुनो। बिलंकानगरी में लोग व्याकुल हो रहे थे। ३५ कोई-कोई अकेले बैठे रो रहे थे। कोई पत्नी को लेकर क्रन्दन कर रहा था। ३६ कोई-कोई अपने बेटे-बेटियों को लेकर घर-घर में ऊँचे स्वर से रुदन कर रहे थे। ३७ कोई कहता था कि आज मेरा पुत्र युद्ध में मारा गया। कोई कहता कि आज तो मेरे ऊपर वज्रपात ही हो गया। ३८ कोई कहता था कि हमारा दामाद रणभूमि में वीरगति पा गया तथा युवाकाल में ही मेरी बेटी विधवा हो गई। ३९ कोई कह रहा था कि मेरा देवर युद्ध में काम आया तो कोई कहने लगा कि मेरे जेठ जी मारे गए। ४० कोई बोला, मेरा एक मात्र बेटा मारा गया। श्रीराम इस दुर्जेय गढ़ का शत्रु बन गया है। ४१ वह एक बन्दर को लेकर जाने कहाँ से आ गया और उसने अकेले ही इतनी विशाल सेना का संहार कर डाला। ४२ कोई भी उस एकाकी श्रीराम को नहीं मार